मेरा राजस्थान

वर्ष-१६, अंक- ०३, मुम्बई, मई २०२१ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ५२ मूल्य -१००.०० रूपए प्रति

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

महनसर गढ़

सोने की दुकान

पोद्दार छतरी

पोद्दार तालाब

राम दरबार

गंगा विद्यापीठ शिक्षण संस्थान

श्री गोगा मेड़ी

श्रीश्याम बाबा मंदिर

'महनसर' के इतिहास प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

- SHINE INDIA GROUP
- JAI RAI MATA EXPORTS
- JRM REALTORS
- JRM PHARMA
- JRM MEDICAL ACESSORIES
- JAI RAIMATA PUBLIC SEVA TRUST

Murari Lal Tiwari
Chairman
Mob. : 9323078465

Ravi Tiwari
Managing Director
Mob. : 9819163338

Kulshesh Tiwari
Director

113 GUNDECHA INDUSTRIAL COMPLEXES,
AKURLI ROAD, KANDIVALI EAST,
MUMBAI, MAHARASHTRA, BHARAT - 400101
PH. - 022 - 40063338

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान

'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

http:// www.merarajasthan.co.in

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

JAIDEEP METALLICS
& Alloys Pvt. Ltd.

106/107/108, 1st Floor, Neha Ind. Estate,
Behind CCI Ltd., Off Dattapada Road,
Borivali (E), Mumbai - 400 066.
Phone : +91 22 4203 2000
Fax : +91 22 4203 2020
E-mail : ajay@suntmtbars.com

- Sizes : 8 mm to 32 mm
- Grades : Fe 415, Fe 500, Fe 500D & Fe 550D
- Approvals : ISI (IS 1786), HSE (Thermex)
- High strength QST bars
- Better elongation for earthquake resistance
- Better ductility for easy bendability

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

धरती पर स्वर्ग जैसा बसा है
हवेली मंदिरो से भरा पूरा गांव
'महनसर' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

VINOD PODDAR
Mob. : 977- 9851081569

॥ अमृतभोग ॥

AMRITBHOG
CATERERS PVT. LTD.

Kalikasthan, Dillibazar, Kathmandu, Nepal
Tel.No. : 977-01-4513512,01-4533281
Fax.No. :977-01-4544020

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान   भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान   नीम लगायें पर्यावरण बचाये

राजस्थान स्थापना दिवस पर...

महनसर (शेखावाटी) ...

गौ माता की सेवा...

जोश और जज्बे.. बुद्धि प्रकाश दायमा

महनसर आपसी सामंजस्य...

विनोद कुमार पोद्दार...

मई 2021 के अंक की झलकियाँ

और भी बहुत कुछ....

'मेरा राजस्थान' जून २०२१ री विशेषतावां

जय महेश

महेश नवमी

१९ जून

जय महेश

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को भारत ही बोला जाए
नीम लगायें पर्यावरण बचायें

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

भारत की 'भारत' ही बोला जाए

धरती पर स्वर्ग जैसा बसा है
हवेली मन्दिरो से भरा पूरा गांव
'महनसर' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

B.K.DAYAMA
Chairman

PAVAN MASKARA
Secretary

DINESH DAYAMA
Managing Trustee

Ganga Vidyapeeth Shikshan Sansthan

English Medium Secondary School

PO.-Mahansar, Dist.- Jhunjhunu, Rajsthan, Bharat -331030

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान नीम लगायें पर्यावरण बचाये

वर्ष-१६, अंक ३, मई 2021

१२ अंक वार्षिक ११११/-

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

'मेरा राजस्थान' के संरक्षक
स्व. रामनारायण घ. सराफ, मुम्बई

सम्पर्क करें...

सम्पादकीय कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड
की शानदार प्रस्तुति

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

बी- २१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०० ०५९.
दूरध्वनि - ०२२-२८५० ९९९९
भ्रमणध्वनिः 9322307908

अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना : http//: www.merarajasthan.co.in
http//:www.bijayjain.com

bijaykumarjain1956@gmail.com
hindiwelfaretrust@gmail.com
Linkedin:hindiwelfaretrust@gmail.com
Instagram: hindiwelfaretrust@gmail.com

अपने व्यापार-समाज-स्वयं की वेबसाइट बनाने के लिए या
digital marketing के लिए संपर्क करें
gdigital World Ph: 022-28509999

सम्पादकीय ....

चालो महनसर चालां

प्राकृतिक वातावरण से सुसज्जित शेखावाटी का 'महनसर' आज कई-कई सुविधाओं से संलग्न है। 'महनसर' के इतिहास प्रकाशन पर काफी तकलीफ हुई उसका कारण यह रहा कि कोरोना महामारी के कारण हम 'महनसर' जा तो नहीं सके, लेकिन 'महनसर' रहवासी-प्रवासी भाइयों से जानकारी लेकर 'महनसर' विशेषांक आपके समक्ष लेकर आ सका हूं। मिली जानकारी के अनुसार 'महनसर' में सोने की दुकान, रघुनाथ जी का बड़ा मंदिर, मस्करा जी की हवेली और किसी समय विभिन्न सुगंधों से बनाई जाती शराब, भले ही आज नहीं बनाई जा रही है लेकिन इतिहास तो बोलता ही है कि एक समय 'महनसर' की शराब विश्व प्रसिद्ध रही है। 'महनसर' में सुविधाओं का बोलबाला बढा है, पहले सड़कें नहीं थी, आज बन गई हैं। पहले कच्चे मकान थे आज पक्के बन गए हैं। पानी की सुविधा जो होनी चाहिए वह पर्याप्त मात्रा में नहीं हुई है लेकिन 'महनसर' के ठाकुर महिपाल सिंह के अनुसार वे सभी सुविधाएं जो एक शहर में होनी चाहिए वह 'महनसर' में भी उपलब्ध करवा कर रहेंगे, ऐसा विश्वास भी उन्होंने मुझे दिलाया है। खुशी इस बात की है कि 'महनसर' के रहवासी आज देश में ही नहीं विदेशों में भी प्रवासी बनकर अपनी माटी 'महनसर' को नहीं भूले हैं। किसी समय सेठों का गांव कहा जाने वाला 'महनसर' आज सभी आधुनिक सुविधाओं से ओतप्रोत हो चुका है, इस बात की बहुत ही खुशी हुई है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए', अभियान की सफलता के लिए गत दिनों हमने सिंधी समाज के परम पूजनीय झूलेलाल जी के जन्मदिवस पर मनाए जाने वाले नव वर्ष की पूर्व संध्या पर इंदौर के सांसद शंकर लालवानी जी ने कहा कि ''मैं 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान के साथ हूँ और जैसे ही मौका मिलेगा यह मुद्दा संसद में जरूर उठाउंगा''। जैन समाज के २४ वें तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर, भगवान राम के जन्म दिवस रामनवमी के पावन पर्व पर, हनुमान जयंती के पावन पर्व पर जूम वेबीनार के द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिस कार्यक्रम में देश ही नहीं विदेशों से भी लोग जुड़े और कहा कि 'भारत को 'भारत' ही बोला जाना चाहिए', सचमुच बहुत ही दुःख है इस बात का कि हमारे देश का नाम दो है भारत और India

क्यों हम अपने देश को India के नाम से संबोधित करें, हमारे देश का नाम तो हजारों हजार साल से 'भारत' ही था और अब 'भारत' ही रहना चाहिए, इस बात का समर्थन करते हुए 'मैं भारत हूँ' संघ के प्रधान सेवक बने प्रातः वंदनीय गोविंद देव गिरी जी महाराज साहेब, पूज्य श्री रमेश भाई ओझा, पूज्य श्री गोविंद भाई पंड्या, सालासर के पुजारी अर्जुन जी ने एक ही बात कही कि हम भी भारत को 'भारत' ही बोलेंगे। हम भी 'मैं भारत हूँ' संघ के अभियान के साथ हैं, समर्थन देते हैं और अपने हर प्रवचन में इस बात का उल्लेख भी करेंगे कि अब हमारे देश का नाम एक ही हो 'भारत' हो।

मैं अपने प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन करता हूं आप सभी 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान में अपना साथ दें, समर्थन दें, सहयोग दें। विश्वास दिलाता हूं एक दिन भारत माँ के साथ जुड़ा हुआ गुलामी का कलंक India जरूर दूर हो जाएगा, इतना मुझे विश्वास है।

जय जय राजस्थान!

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

आपका अपना
-बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए का
आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'महनसर' के इतिहास प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

स्व. मंजू दायमा
वापी की पूर्व पार्षद

MANJU DAYAMA MEMORIAL TRUST'S
SANSKAR VIDYAPEETH

Chharwada- Vapi, Dist. Valsad, Gujrat, Bharat - 396030

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

'महनसर' विशेषांक के प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को हार्दिक बधाई

Mahendra Kumar Shrimal
Managing Director
भ्रमणध्वनि: 9449273616

Sandeep Kumar Shrimal
Kuldeep Shrimal

Regency Electricals Pvt. Ltd.

No. 125, 2nd Main Road, Chamrajpet,
Bengaluru, Karnataka, Bharat - 560018
Ph. 080 - 41203314 / 41143314 Fax - 080 - 22201127
email: mahendra@regencyelectricals.com
Website:www. regencyelectricals.com

Residency
A-903, The ETA Gardens Apts., Aster Block,
9th Floor, Magadi Main Road, Bengaluru,
Karnataka, Bharat - 560023
Ph. 080 - 2316 3193

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान
नीम लगायें पर्यावरण बचायें

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

'महनसर' विशेषांक के प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को हार्दिक बधाई

Mohan Lal Joshi
LIC AGENT
Mob.: 9892985944

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

Office Address
LIC Branch 887, Ground Floor, New India Bldg., S. V. Road,
Santacruz West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 054

B-1801 ,Samriddhi Tower, Inderlok , Phase 8, Bhayander East,
Dist. - Thane, Maharashtra, Bharat - 401105

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान
नीम लगायें पर्यावरण बचायें

!! ॐ पीतरजीदेवायः नमः!!

धरती पर स्वर्ग जैसा बसा है
हवेली मंदिरों से भरा पुरा गांव
आओ महनसर देखण चाला
आपरो हार्दिक स्वागत करां

पोद्दार छतरी

सोने की दुकान

रघुनाथ बड़ा मन्दिर

पोद्दार तालाब

शिवालय

श्री जोहड़े वाले बालाजी धाम

गऊ घाट

शिव बक्श राय पोद्दार ट्रस्ट

कुलदीप पोद्दार

कोषाध्यक्ष

महनसर निवासी, समाजसेवी

भ्रमणध्वनिः 9928913456

राजस्थान स्थापना दिवस पर 'आपणों राजस्थान' वर्चुअल द्वारा भव्यातिभव्य कार्यक्रम का आयोजन

मुंबई: राजस्थान स्थापना दिवस समारोह राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'आपणों राजस्थान' महोत्सव 'मैं भारत हूँ' संघ, 'जिनागम', 'मेरा राजस्थान' व देश के संपूर्ण राजस्थानी समाज द्वारा पिछले ४ वर्षों से लगातार किया जा रहा है, जिसमें देश-विदेश से राजस्थान से जुड़े बुद्धिजीवी, पदाधिकारी सहभागी होते हैं।

कोरोना महामारी के कारण २९-३०-३१ मार्च २०२१ को मुंबई-कोलकाता से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वर्चुअल द्वारा मनाया गया।

उद्घाटनकर्ता व मार्गदर्शन श्री गोविंददेवजी गिरीजी महाराज कोषाध्यक्ष श्रीराम जन्म भूमि तीर्थ अयोध्या थे।

राजस्थान स्थापना दिवस के उपलक्ष में तीन दिवसीय विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश से प्रतिभागियों ने अपनी कला का उच्चतम व सुंदर प्रस्तुतीकरण किया, जिसके लिए विभिन्न वर्ग के पुरस्कार भी दिए गए, जिसके प्रायोजक दिपक बलदवा कलबुर्गी रहे। कार्यक्रम के निर्णायक मंडल किरणजी मुंधड़ा, पुष्पा जी सोमानी व रेंकी मूंदड़ा थी।

राजस्थानी गायिका रेखा राव ने भी अपनी सुमधुर आवाज में राजस्थानी गीतों के माध्यम से सभी को मोहित कर दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता 'मैं भारत हूँ' संघ व 'आपणों राजस्थान' के अध्यक्ष बिजय कुमार जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन कोलकाता निवासी श्रीमती निशा लड्ढा ने अपने मोहक व सुरीली अंदाज में किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना अमुल्य योगदान 'मैं भारत हूँ' संघ की राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी, संयोजिका-महिला प्रकोष्ठ श्रीमती सुनीता पलोड, प्रदेशाध्यक्ष राजस्थान श्रीमती सरोज मरोठी, सचिव राजस्थान प्रदेश श्रेयांश बैद, कर्नाटक संयोजिका श्रीमती ज्योति शर्मा कलबुर्गी, गणेश वी बंग, प्रो. मिश्रीलाल मांडोत, कार्यक्रम प्रभारी प्रमुख श्रीमती अनुपमा शर्मा 'दाधीच', दक्षिणांचल उपाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ श्रीमती शैला कलंत्री, आदि-आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अथक मेहनत की। रंगारंग कार्यक्रम में सभी कलाकारों द्वारा राजस्थान की संस्कृति नृत्य, कला, लोक गायन, लोक नृत्य का बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुतीकरण किया गया, जिससे ऐसा प्रतीत हुआ कि हम सभी 'राजस्थान' में हैं।

प्रमुख अतिथि व वक्ता श्रीमती राजश्री बिड़ला (आदित्य बिडला ग्रुप), जोधराज जी लड्ढा (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा), राम नरेशजी सोनी (यु.के. लंदन), अरूण मुंदडा (USA), राजस्थान पूर्व न्यायाधीश पानाचंद जैन, शंकर केजरीवाल मुंबई, खिल्लीमल जैन अलवर, श्रीमती लता लाहोटी महाराष्ट्र, रूपल मोहता, राम नरेश सोनी, गीता मुंधड़ा, शेखर मुंधड़ा, प्रेम भंडारी अमेरीका, शरद गोपीदास बागडी (लेखक व वरिष्ठ समाज सेवी), के.के. नरेडा, गोवर्धन गारोडिया, चंद्रकांत राठी आदि गणमान्य भी उपस्थित थे।

सभी वक्ताओं ने 'भारत को भारत बोला जाए अभियान' कार्यक्रम पर अपने विचार, सुझाव प्रस्तुत किये। सर्वसम्मति से स्वामी श्री गोविंद देवजी गिरीजी महाराज को इस अभियान का (ब्रांड एंबेसडर) प्रधान सेवक बनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। श्रीमती राजश्री बिडला ने अपने विचार प्रकट किये व शुभकामनाएं दीं। शरद बागडी ने अपने संबोधन में मेरा परिवार 'भारत' है के साथ कहा भारत में मातृदेवो भवो, पितृदेवो भवो, गुरु देवो भवो के साथ संयुक्त परिवार की भावना रहती है।

With Best Compliment From

DHOLERA SMART CITY REALTY LLP

DHOLERA SIR - A New Gujarat Within Gujarat

Bungalow Plot Area - 300 Sq. Yard i.e. 2700 Sq. Ft & above

INVEST IN DHOLERA'S GROWTH STORY TODAY & ENSURE A BRIGHT TOMORROW

SMART INFRASTRUCTURE | **SMART UTILITIES** | **SMART COMMUNICATION** | **SMART TECHNOLOGY**

DHOLERA SMART CITY

ABCD Building

Activation Area

Dholera International Airport New Age Airport

Why Invest in Shree Navkar Residency?

- A project spread over 15 Acres.
- Exclusive gated community.
- Well planned site with developed landscaping.
- All internal roads- well paved with street lights.
- 24/7 Security, Water & Power Supply.
- 500 meters from TP-1 of Dholera SIR.
- 4 km from World class International Airport.
- The Project is surrounded by pollution free zones i.e. Resort Tourism, Solar Zone, Sports and Recreational Zone.
- Close to New 10 lane Express way connecting all region of SIR.
- Close to current State Highway-6.

CORPORATE OFFICE

223, Neha Industrial Estate, Near Suashish IT Park,
Dattapada Road, Opp. TATA Steel, Borivali (East), Mumbai - 400 066.
Ph. : 022 - 28705517

SHREE NAVKAR RESIDENCY

Entrance Gate

Club House

Bird's Eye View

CA RAVI K KUDAL

+91 98673 65271

www.dholerasmartcity.com

info@dholerasmartcity.com

★ CONTACT FOR PLOT BOOKING ★ + 91 9209200061

Shree Navkar Residency Is The Best Location At Lowest Price With All Amenities

महनसर
(शेखावाटी)

राजस्थान का शेखावाटी इलाका अपने भव्य गढ़, हवेलियों और सांस्कृतिक विरासत के लिये जाना जाता है। इसी के झुंझुनू जिले में चुरू और सीकर जिलों की सीमाओं से सटे गांव 'महनसर' की अलग ही शान है। इसकी स्थापना नवलगढ़ राजा ठाकुर नवलसिंह जी के सुपुत्र नाहर सिंह द्वारा सन १७६८ में की गई। 'महनसर' अपने विशाल किले, कलात्मक हवेलियां व समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिये जाना जाता है।

सोने की दुकान अपने जटिल चित्रों जिसे सोने की झोल से बनाया गया इस कारण प्रसिद्ध है। इस हवेली में तीन गुंबददार छत हैं। रामायण के दृश्यों को बाईं ओर चित्रित किया गया है, केंद्र में विष्णु के अवतार और कृष्ण के जीवन के दृश्यों को दाईं और चित्रित किया गया है।

अनुमानित सन १७६८ में ठाकुर नाहर सिंह के द्वारा बसाया गया 'महनसर' विश्व मानचित्र पर आज अपनी अलग पहचान रखता है। हिन्दु-मुस्लीम की मिश्रित आबादी वाले इस गांव की अनुमानित जनसंख्या ८,००० के करीब है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार गांव में लगभग ४,००० मतदाता हैं। गांव का दर्जा हो कर भी 'महनसर' एक पुरा कस्बा है। महनसर अपनी ऐतिहासिक हवेलियों, किला, मन्दिरों, विश्वविख्यात सोने की दुकान, तोलाराम जी का कमरा के लिये पुरी दुनिया में मशहूर है।

पर्यटकों को लुभाती है महनसर की कला संस्कृति

'महनसर' के इतिहास ने आज के युग में एक पहचान बना ली है।

यहां के लोग एक ऐसी परंपरा को अपना रहे हैं जो प्राचीन काल से चली आ रही है। यह गांव झुंझुनू, चुरु, सीकर, तीन जिलों की सीमा पर स्थित है। यहां की शराब भारत में ही नहीं दुनिया भर में किसी समय प्रसिद्ध थी। बुजुर्गों से मिली जानकारी के अनुसार किले के निर्माण के पूर्व यह गाँव महन गौत्र के जाटों के द्वारा बसाया गया, इसलिए इस गांव का नाम 'महनसर' पड़ा। कालातंर में ठिकानेदारों से विवाद के कारण वे गाँव छोड़ कर नवलगढ़ के पास देवगांव

शेष पृष्ठ १३ पर...

पृष्ठ १२ से... में जाकर बस गए। अभी गांव में कस्बा, धींवा, डूडी आदि गौत्र के कई जाट परिवार निवास करते है।

महनसर की प्रसिद्धि का कारण:- 'महनसर' अपने किले, तोलाराम जी कमरा, सोने की दुकान के लिए विश्वविख्यात है। किसी समय यहां पर बनायी जाने वाली हेरिटिज शराब, आज इसका फार्मूला अन्य सरकारी फेक्ट्रियों में जरुर बनने लगा है, मगर 'महनसर' को जानने समझने वाले आज भी इसके दीवाने हैं। कहते हैं 'महनसर' की ये शराब किसी समय 'कई' फ्लेवर में बनायी जाती थी, जिसमें सौंफ, संतरा, एलोविरा, धनिया,

सोने की दुकान

महनसर किला

पुदिना (मिन्ट), अदरक, गुलाब, पान आदि प्रमुख है। बुजर्गों के बताये अनुसार काफी समय पहले जब बीकानेर रियासत पर महाराजा गंगा सिंह का शासन था, उस समय महाराजा गंगा सिंह जी ने अपनी लड़की की शादी में विभिन्न रियासतों के ठाकुरों को अपने-अपने इलाके की शराब के साथ बारातियों की मेजबानी के लिए आमंत्रित किया था, जिसमें 'महनसर' के ठाकुर सिर्फ एक बोतल शराब के साथ पहुंचे थे, जब महाराजा गंगा सिंह को ये बात पता चली तो उन्होंने ठाकुर साहब से कहा कि मेरी लड़की की शादी में हजारों मेहमान और बाराती आये हैं और आप सिर्फ एक बोतल शराब ले कर आये हो, तब ठाकुर साहब बोले! महाराज मैं जो शराब लेकर आया हूं, इसी से आप के सारे मेहमान तृप्त हो जायेंगे और शराब बच जाएगी, आप बस बड़े-बड़े पानी के टेंक भरवा दीजिये, जितनी शराब की आपको आवश्यकता है मिल जायेगी। अगर मैं अपने वायदे पर खरा न उतरुं तो आप मुझे फाँसी लगवा देना। बात यकीन करने वाली तो नहीं थी फिर भी बीकानेर महाराज ने ठाकुर साहब के कहे अनुसार आदेश दे दिया, कहते हैं हजारो लीटर के बड़े-बड़े टेंकों में महनसर ठाकुर साहब द्वारा सिर्फ बोतल से एक तीली भरकर टेंकों में डाली गई, उसी से सारे बाराती और मेहमान मदहोश हो गए। महाराजा गंगा सिंह ने जब ये नजारा देखा तो उन्हें यकीन ही नहीं हुआ, बाद में उन्होंने 'महनसर' के ठाकुर साहब को सम्मानित किया और काफी इनाम भी दिया, इस वाकये के बाद 'महनसर' का नाम अपनी अनूठी शराब के लिए विश्व में प्रसिद्ध हो गया।

महनसर की शराब प्रसिद्ध थी। मगर अब शराब बनाना अवैध है इसलिये किले में शराब नहीं बनती पर। इसी परिवार के राजेन्द्र सिंह महनसर ने पुराने नुख्शों का पेटेंट कराकर हेरिटेज शराब बनाने की अनुमति लेकर इसका व्यवसायिक उत्पादन जयपुर के पास फैक्ट्री में शुरू किया है, जो महाराजा महनसर व महारानी महनसर के ब्रांड से देश और विदेश में बिकती है ओर शौकीन चाव से सेवन करते हैं।

सैलानियों की पसंद:- महनसर गाँव के बसने के साथ ही अपनी बेजोड़ निर्माण कला एवं उत्कृष्ट शैली के साथ 'महनसर' को बसाने वाले राजा

शेष पृष्ठ १४ पर...

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
'महनसर' के इतिहास प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं
Praveen Poddar
Mob: 9822094710, 9823254710
Ashutosh Poddar
Mob: 8767326035
PODDAR TRADERS
DEALING IN
EN Series, OHNS, P-20, Bright Bars,
H-13, WPS, Silver Rods, MS & All Types of Alloy Steel
Shop No. 6 & 7, Om Industrial Estate 1, Near Tirupati Udyog Nagar,
Sativali Road, P.O.- VASAI East, Dist. - Palghar, Maharashtra, Bharat - 401208
e- mail: poddartradersvasai@gmail.com
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

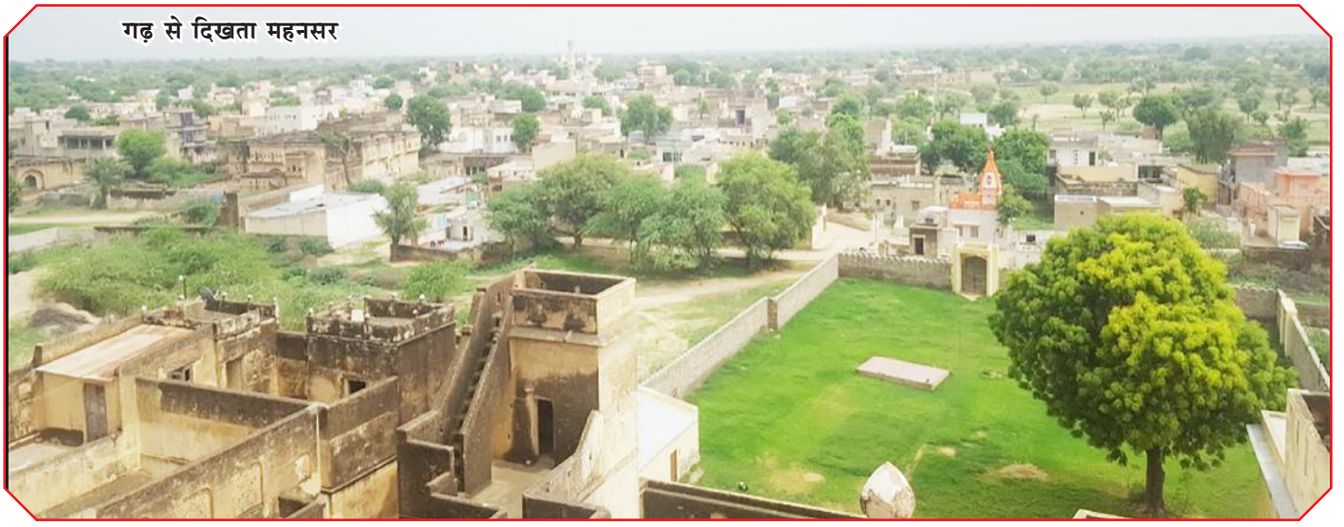
गढ़ से दिखता महनसर

पृष्ठ १३ से...

नाहर सिंह जी के द्वारा बनाया गया महनगढ़ किला आज भी अपनी मजबूती और बहादुरी के किस्से सुनाता नजर आता है। सन १७६८ में बनाया गया ये किला वास्तु और पुरातन शैली का एक नायाब नमूना पेश करता है। किले की मजबूत बाहरी दीवारें और २ मजबूत प्रमुख दरवाजे, इसकी रक्षात्मक शैली का अनूठा उदहारण है।

हर साल आने वाले हजारों विदेशी पर्यटकों की सुविधा के लिए, स्वर्गीय ठाकुर तेजपाल सिंह जी द्वारा किले के कुछ हिस्से में एक होटल का निर्माण किया गया, जिसे होटल 'नारायण निवास कैसेल' का नाम दिया गया। होटल में आने वाले हर देशी-विदेशी पर्यटकों को उच्च स्तरीय सुविधा मुहैया करवाई जाती है। विदेशी पर्यटकों के गाँव में रुकने के कारण गाँव के लोगों को भी परोक्ष या अपरोक्ष रूप से आर्थिक लाभ मिल रहा है।

पोद्दारों की छतरी

पोद्दार मेमोरिअल स्मारक:- प्राचीन समय में अपने पूर्वजों की याद में स्मारक बनाने का अनुशरण करते हुए, गाँव के पोद्दार परिवार द्वारा अपने बुजर्गो की यादें सहेजने के लिए इस स्मारक का निर्माण करवाया गया। गाँव में पोद्दारों की छतरी के नाम से मशहुर ये ईमारत गरीबों के लिए हवा महल भी कहलाती है। भीषण गर्मी हो या ठण्ड या चाहे बारिश का मौसम, इसकी बेजोड़ निर्माण शैली हर मौसम से बचाव करती है। गाँव में आने वाले हर देशी-विदेशी पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करने के साथ-साथ, घुमक्कड़ और गरीबों का आशियाना भी है, इसकी दीवारों पर की गई चित्रकारी भी राजस्थानी चित्र कला का नायाब नमूना है। इसकी निर्माण कला को देखते हुए प्रसिद्ध विडियो निर्माता कुबेर ग्रुप ने अपने राजस्थानी एल्बम गणगौर का विडियो यहीं चित्रित किया था।

महनसर पर एक नजर:-

जनसंख्या : ८,०००
मतदाता: ४,०००
ग्राम पंचायत: महनसर पंचायत, पुलिस् थाना बिसाऊ
ब्लॉक : अलसीसर, विधान सभा: मन्डावा
लोकसभा: झुंझुनू
जिला: झुंझुनू

सोने की दुकान: सेठ शिवबक्श राय पोद्दार ट्रस्ट द्वारा संचालित १८४६ में निर्मित यह सोने की दुकान पूरे विश्व में मशहूर है। दुकान की भीतरी दीवारों पर बहुत ही कलात्मक ढंग से की गई रामायण और महाभारत काल की अनूठी भीती चित्र कला बहुत ही अनुपम प्रतीत होती है। इसकी खास बात यह है कि इसमें सुनहरे रंग के लिए सोने के झोल का प्रयोग किया गया है। जिसके कारण इसे सोने की दुकान के नाम से बुलाते है। जो कभी पोद्दार सेठों का व्यवसायिक कार्यालय भी था। भीती चित्रों पर की गई अनूठी सोने की कलाकारी पूरे विश्व में अपना एक अलग

शेष पृष्ठ १५ पर...

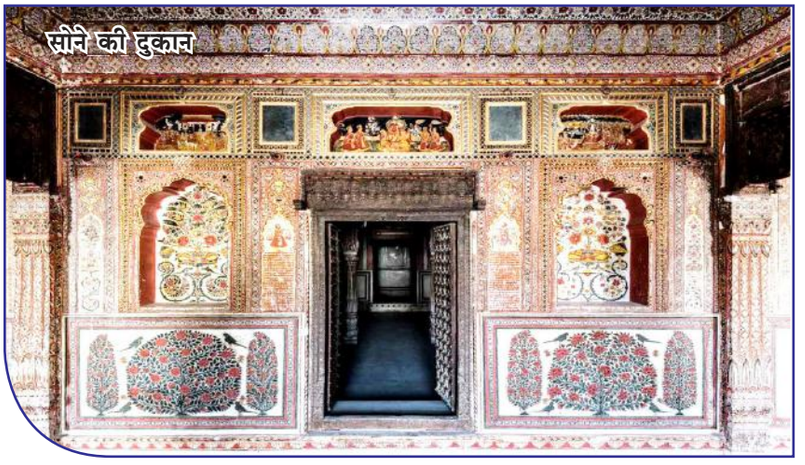

स्थान रखती है। हर साल पूरे विश्व से लाखों देशी-विदेशी पर्यटक इसे देखने आते हैं।

रघुनाथ मंदिर: गाँव के लोगों में बड़े मंदिर के नाम से मशहुर यह मंदिर सेठ हरकंठ राय पोद्दार द्वारा विक्रम संवत १९०४ में बनवाया गया था। मंदिर परिशर में श्री राम परिवार, शिव परिवार और श्री वीर हनुमान की सुन्दर एवं मुर्तियां स्थापित हैं। कुछ सालों पहले गाँव के युवाओं द्वारा मंदिर परिसर में एक संगठन बनाया गया था, जो गाँव के हर उत्सव और सामुदायिक कार्यो में बढ़-चढ़ कर भाग लेता था, मगर समय के अभाव और युवाओं में बढती बेरोजगारी की वजह से युवाओं द्वारा रोजगार के लिए परदेश में बसने के कारण १९८८ के बाद यह बंद कर दिया गया। आपसी प्रेम और सोहार्द के प्रतिक आजाद युवा संगठन की आज गाँव को फिर से जरुरत है।

श्री जोहड वीर गोगा जी का मंदिर: राजस्थान के लोक देवता जोहड वीर गोगा जी महाराज का ये मंदिर गाँव के छोर पर विशाल रेतीले टीले पर स्थित है। गाँव के दोनों धर्मों के लोगों की सामान आस्था वाले इस मंदिर का इतिहास भी काफी पुराना है। मंदिर को ग्रामीण बोली में गोगा मेडी और मंदिर की सेवा करने वाले पुजारी को भक्त जी कहा जाता है।

हर साल भाद्रपद महीने में २ दिवसीय विशाल मेले का आयोजन मंदिर कमेटी द्वारा किया जाता है, जिसमें प्रथम दिन अष्टमी तिथि को गोगा जी के सेवक और गाँव में भगत जी के नाम से मशहुर भगत श्री सोहन लाल जी, जिन्होंने काफी लम्बे समय तक मंदिर में पुजारी के रूप में अपनी सेवा दी, उनके देह त्यागने के उपरांत उनकी अंतिम इच्छानुसार मंदिर प्रांगण में ही समाधी दी गई, इस कारण मेला लगता है, दुसरे दिन नवमी तिथि

शेष पृष्ठ 16 पर...

शिव परिवार

श्री राम परिवार

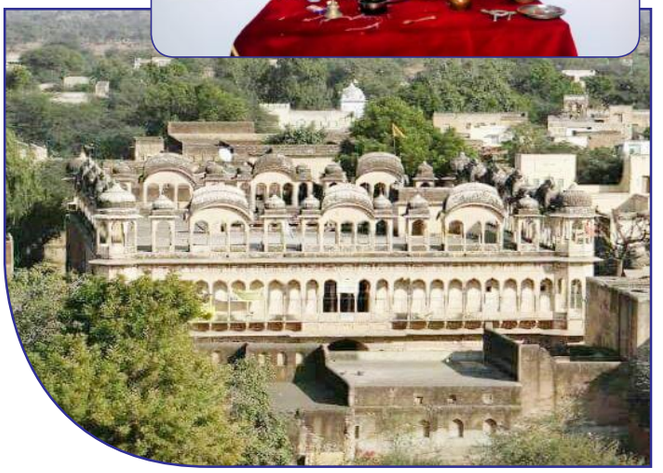

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत की 'भारत' ही बोला जाए
'महनसर' विशेषांक के प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को हार्दिक बधाई

B.N. VARMA
Bhawani PRODUCTS
Mfrs. of : 'SEIKO' Brand Metalic & Plastic Hair Pin.
77,78,79, Bombay Talkies Compound,
Malad West, Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 400064
Fact. : - 022 - 882 9298 / 8825977
Res. : - 022 - 8823978 / 882 5028

गोगा मेड़ी सेवा समिति

पोद्दार तालाब

पृष्ठ १५ से...

को जोहड वीर श्री गोगा जी का मेला आयोजित किया जाता है, जिसमें दूर-दूर के भक्तों के अलावा गाँव छोड़ कर देश और विदेशों में बसे प्रवासियों द्वारा भी शीश नवाया जाता है।

मेले में मंदिर कमेटी द्वारा विभिन्न ग्रामीण खेलों जैसे कबड्डी, कुश्ती, ऊँटों की दौड़ आदि का मुकाबला करवाया जाता है, जीतने वाली टीम को मंदिर कमेटी द्वारा सम्मानित किया जाता है। मंदिर कमेटी व दानी सज्जनों के सहयोग से मंदिर विकाश में भी सहयोग मिलता है। मेले में काफी संख्या में विदेशी पर्यटक भी पहुंचते हैं।

श्री जोहड़े वाला बालाजी धाम :- गाँव के पश्चिम छोर पर स्थित जन-जन की आस्था का केंद्र एवं ग्राम देवता के तौर पर पूजे जाने वाले महावीर श्री बजरंग बली हनुमान का विशाल मंदिर, जो जोहड़े वाले बालाजी के नाम से मशहुर है। गाँव में होने वाले विवाह-शादी और नए बच्चे के जन्म पर लोग यहां विशेष तौर पर शीश नवाने के लिए आते हैं। कई बीघा जमीन पर बने इस मंदिर की हरियाली भी यहां आने वालों को मानसिक एवं शारीरिक शांति प्रदान करती है। मंदिर के पास ही स्थित छोटे से तालाब के नाम से, जिसे गाँव की भाषा में जोहड़ कहा जाता है, इनका नामकरण जोहड़े वाले बाला जी के नाम से है। मंदिर प्रांगण में स्थित इस तालाब की भी ग्रामीणों में विशेष आस्था है। तालाब के साथ ही गाँव में घुमने वाले बेसहारा पशुओं के पिने के पानी की सुविधा के लिए एक और छोटा तालाब जिसे गौघाट कहते हैं, बनाया गया है। सावन महीने की तीसरी तिथि को मंदिर के मैदान में विशाल मेला लगाया जाता है, जिसमें गाँव के अलावा आस-पास के क्षेत्र से भी भारी संख्या में लोग पहुंचते हैं। विश्व में सालासर बालाजी के नाम से मशहुर मेले में जाने वाले यात्रियों की सेवा के लिए भी हर वर्ष मंदिर कमेटी द्वारा २ सेवा केम्पों का आयोजन किया जाता है।

गौ माता की सेवा में महनसर के निवासी-प्रवासी अग्रसर

गौशाला में उपस्थित झुंझुनू सांसद नरेन्द्र कुमार व सदस्यगण

देवभूमि शेखावाटी में, गौ सेवा की परम्परा सदियों से रही है। यहाँ के हर छोटे-बड़े शहरों में गौशाला संचालन का कार्य, प्रवासी सेठों व स्थानीय समाज सेवियों द्वारा तन-मन-धन से पूरी निष्ठा के साथ किया जाता है। 'महनसर' में भी गौशाला के अभाव में, वृद्ध व लावारिस गौ वंश की दुर्दशा देखकर समाज सेवी ठा. महिपाल सिंह ने गांव के प्रबुद्धजनों व प्रवासी बन्धुओं को, इस कार्य के लिये प्रेरित किया। सभी ने इसमें काफी रुचि दिखाई। वर्ष २०११ में मात्र २१ गायों के साथ मुक्तिधाम के पास गौ सेवा का यह यज्ञ प्रारम्भ कर दिया गया था। शुरू में चंद प्रवासी परिवारों ने ही इसमें आर्थिक सहयोग का बीड़ा उठाया, बाद में धीरे-धीरे भामाशाह जुड़ते गये और कारवां बनता गया। वर्तमान में यहाँ ८५ के करीब गौवंश की सेवा, गत दस वर्षो से हो रही है। अब गाय-बैलों के लिये विशाल आवास,चारा संग्रह हेतु गौदाम, कार्यालय भवन भी उपलब्ध हो गया है। गायों के चरने के लिये पास में ही विशाल गौचर भूमि है। संस्था का सुचारू प्रबंधन स्थानीय मंत्री पवन मस्करा की देख-रेख में पंजीकृत ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। वृक्षों से आच्छादित गौशाला परिसर, गांव का रमणीय स्थान बन गया है। सुबह-शाम गांव के सेवा भावी युवा-बुजुर्ग यहाँ भ्रमण, व्यायाम व गौ सेवा के लिये पहुँचते हैं। गौ वंश की समुचित देखभाल के लिये संस्था द्वारा सेवादारों की भी नियुक्ति की गई है, यहां यह परम्परा बन गई है कि लोग यहाँ गायों को गुड़ और दलिया खिलाकर अपना जन्मदिन व परिजनों की पुण्यतिथि मनाने लगे हैं।

प्रसिद्ध समाजसेवी व कला प्रेमी बाबू शिवदत्त राय जी मस्करा

बाबू शिवदत्त राय जी का जन्म १८वीं शताब्दी को 'महनसर' में हुआ। युवावस्था प्राप्त करने पर आप कोलकाता के आजीविका के साधन के लिए आ गए। उस समय जितने भी राजस्थानी समाज के लोग थे, व्यवसाय व उद्योग धंधों, नौकरी के लिए कोलकाता ही मुख्य स्थान होता था, अतः आप भी कोलकाता आकर बस गए। यहां विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के पश्चात शेयर बाजार की शुरुआत की। यह भारत का पहला शेयर बाजार था, जिसकी आपने शुरुआत की, आपने अपनी मेहनत व लगन से एक उच्च मुकाम हासिल किया।

कोलकाता में ही नहीं 'महनसर' में भी संपत्ति बनायी। बाबू शिवदत्तरायजी ने 'महनसर' से कोलकात्ता रोजगार की तलाश में आने वाले हर महनसर वासियों के लिए, जब तक उसका काम या रोजगार स्थापित न हो जाए तब तक अपने निवास स्थान पर आवास एवं भोजन की खुली छूट दे रखी थी।

डांसिंग हॉल कही वाली जाने वाली तोलाराम मस्करा हवेली का निर्माण आपने अपने पिता तोला रामजी के याद में करवाया, जो एक विशेष स्थापत्य व सुंदरता को लिए हुए हैं। आपने सिर्फ हवेली का निर्माण ही नहीं किया बल्कि धर्मशाला, स्कूल, मंदिर आदि का भी निर्माण करवाया। आज 'महनसर' स्थित धर्मशाला में शादियां भी की जाती है।

पूरे शेखावाटी की सबसे पहले मीठे पानी का कुआं आपके द्वारा ही बनाया गया, जो 'महनसर' में स्थित है, ऐसे ही अन्य कई सामाजिक कार्य आपने किए हैं जो आपकी ख्याति को आज भी व्यक्त करते हैं। १९०८ में आप का निधन बनारस में हुआ, आप के ५ पुत्र थे। बाबू रामवल्लभ जी, बाबू मटरूमल जी, बाबू बृजलाल जी, बाबू देवी प्रसाद जी, बाबू हरी राम जी और दो पुत्रियां थी। आज भी आपकी कीर्ति को कोलकाता वासी और 'महनसर' वासी याद करते हैं।

महनसर का डांसिंग हॉल

भवन के सजावट के लिए इसके भीतर लगे शीशे, फानूस और पेंटिंग विशेष तौर पर विदेशों से मंगवाई गई थी। किसी समय यहां दूर-दराज से राजा-महाराजा, रियासतदार ठाकुर और बड़े-बड़े सेठ-साहूकार नृत्य देखने के लिए आते थे, आज भी पूरे राजस्थान में गाये जाने वाले लोकगीत ''बन्ना चालो महनसर, कमरों दिखावां तोलाराम को'' इसकी प्रसिद्धि बयां करता है।

तोलाराम जी की हवेली (the dancing hall) एक भव्य इंटीरियर को पूरा करने वाले बेल्जियम के झूमर के साथ भित्ति चित्रों का शानदार एवम अदभुत संग्रह आपको ओर कहीं नहीं 'महनसर' की हवेली में ही देखने को मिलता है।

यह एक उच्च छत है जो झरोखों द्वारा परिवार की महिलाओं को नृत्य और अन्य मनोरंजन कार्यक्रमों को देखने के लिए सक्षम है, इसके भित्ति चित्र अपने जटिल डिजाइन के साथ सोने की झोल से बनाया गया है।

महनसर स्थित 'तोलारामजी के कमरे' के नाम से विश्व प्रसिद्ध 'डांसिंग हॉल' का निर्माण स्व. सेठ तोलाराम जी के सुपुत्र बाबु शिवदत्तराय जी के सुपुत्र बाबु रामवल्लभ जी द्वारा करवाया गया था। अपने समय के विख्यात इस 'डांसिंग हॉल' की बनावट भारतीय भवन निर्माण कला की अनूठी मिसाल है। भवन की डिज़ाइन और भीतरी और बाहरी दीवारों की अनुपम पेंटिंग इसकी भव्यता की कहानी अपने आप बंया करती है।

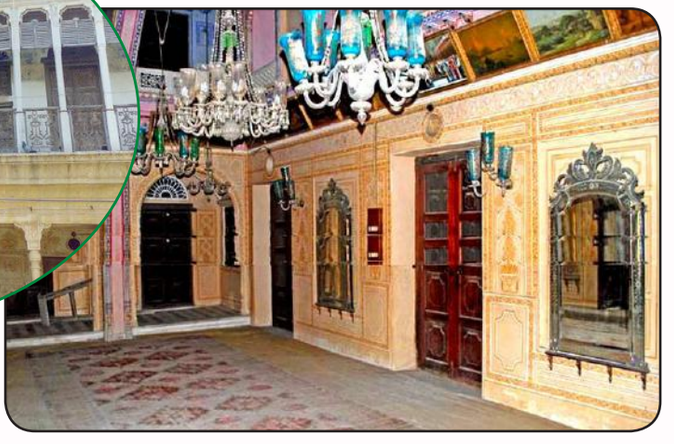

महनसर की पहचान महनसर गढ़

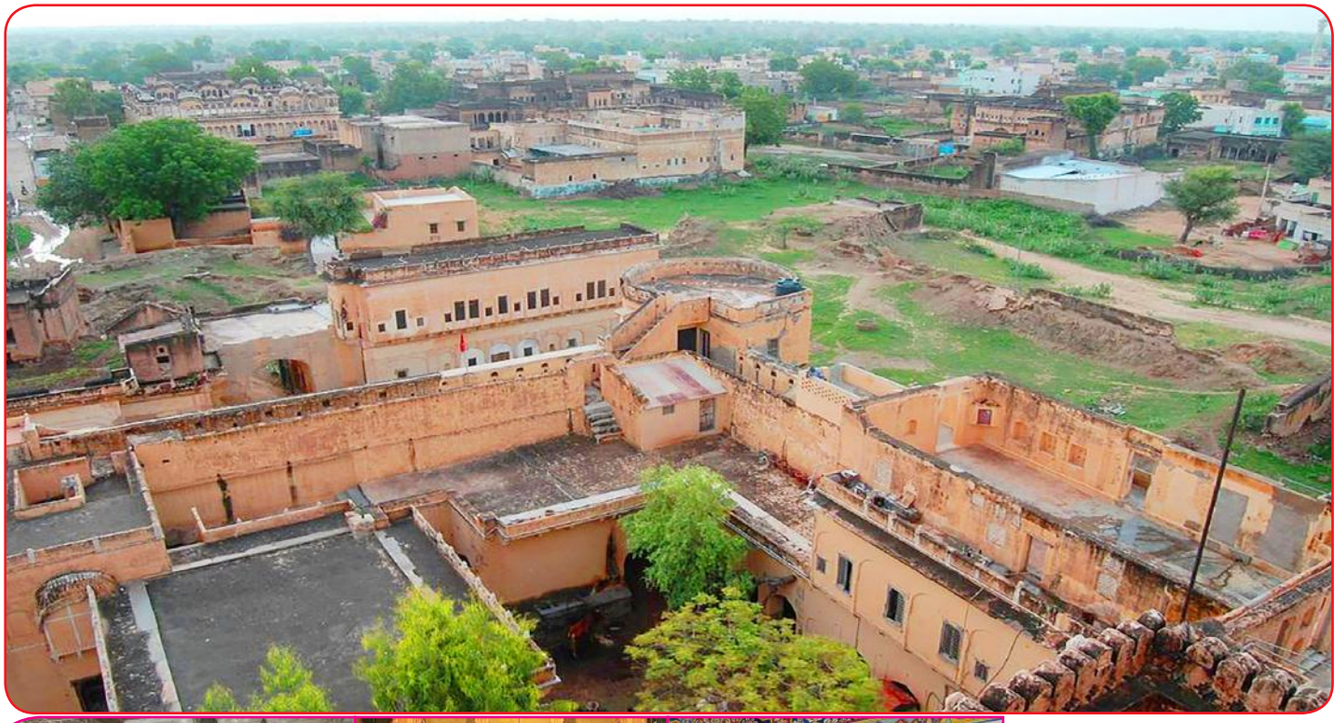

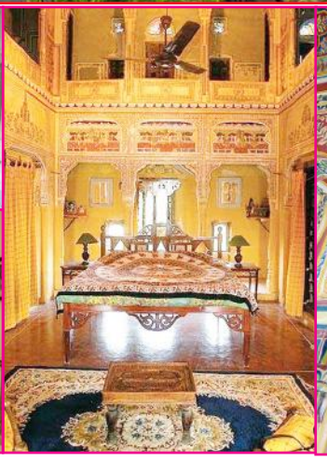

महनसर गढ़ की स्थापना १७८६ में नवलगढ़ के संस्थापक नवल सिंह जी ने की थी, उन्हीं के नाम से नवलगढ़ का नाम 'नवलगढ़' पड़ा, उन्होंने 'महनसर' में इस गढ़ का निर्माण करने के पश्चात अपने पुत्र नाहर सिंह जी को सौंप दिया। आज भी गढ़ अपनी विशालता और भव्यता को लिए हुए, अपनी एक विशेष पहचान बनाए हुए है। इस गढ़ के चारों तरफ चार भूरज बने हुए हैं और यह चारों भूरज ७ फुट चौड़े परकोटे से बंधे हुए हैं, इसके अलावा एक और परकोटा है जो १२ भूरज से जुड़ा हुआ है और इसकी चौड़ाई १४ फीट है। नाहर सिंह जी के पुत्र लक्ष्मण सिंह ने जी ने इस गढ़ पर राज्य किया, उसके बाद उनके पुत्र शिवनाथ जी सिंह ने राज किया। शिवनाथ सिंह जी के ३ पुत्र बैरीश्याल सिंह, पन्ने सिंह जी व खुमान सिंह जी हुए। अतः इस गढ़ को तीन पुत्रों में समान रूप से विभाजन किया गया। पहले भाग को बड़ा पाना, दूसरा भाग को बीच का पाना और तीसरे भाग को छोटा पाना कहा जाता है। बैरीश्याल जी को कोई संतान न होने के कारण उन्होंने खुमान सिंह जी के सबसे छोटे पुत्र गोविंद सिंह जी को गोद ले लिया।

गोविंद सिंह जी के दो पुत्र हुए बिशन सिंह जी और नारायण सिंह जी। नारायण सिंह जी के पुत्र तेजपाल सिंह जी को बिशन सिंह ने गोद ले लिया और तेजपाल जी के पुत्र हुए महेश्वर सिंह जी और गणेश्वर सिंह जी। शिवनाथ जी के दूसरे पुत्र पन्ने सिंह जी के पुत्र हुए चंद्र सिंह हुए। चंद्र सिंह, जी के ३ पुत्र हुए फूल सिंह, भूसिंह और उदय सिंह। खुमान सिंह जी के सात पुत्रों में नान सिंह, बन्ने सिंह जी, अभय सिंह जी, चंदन सिंह जी, पृथ्वी सिंह जी, गणपत सिंह जी और गोविंद सिंह जो बड़े भाई के गोद गए। आज भी इस परिवार द्वारा अपनी इस विरासत को संजोया जा रहा है। आज यह एक हेरिटेज होटल के रूप में विश्व विख्यात है जो अपनी महत्ता और विशेषता को बनाए हुए हैं, जिसकी सुंदरता और राजशाही ठाट का आनंद उठाने यहां देश-विदेश से सैलानी आते हैं।

सोने की दुकान देखनी है तो चले आओ 'महनसर'

शेखावाटी में यूं तो रेत के धोरों के बीच बनी दिल जैसे जाली, झरोखे वाली हवेलियां बरबस ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं, लेकिन झुंझुनूं जिले के 'महनसर' गांव में बनी सोने की दुकान अपने आप में खास है।

'महनसर' में आने वाला हर व्यक्ति पोद्दार परिवार की ओर से निर्मित सोने की दुकान देखना नहीं भूलता। किसी समय इस दुकान में सोने व जेवरात का काम प्रमुखता से होता था। कई जिलों के लोग यहां सोना के आभूषण खरीदने आते थे। दुकान के चारों तरफ सोने की परत है, इसलिए इसे सोने की दुकान कहते हैं, अभी यहां सोने का कारोबार नहीं होता, लेकिन पर्यटकों की यह पहली पसंद बनी हुई है। दुकान के निर्माण की सही तारीख तो नहीं मालूम लेकिन दावा किया जाता है कि इसका निर्माण वर्ष १८३० में किया गया होगा।

महनसर सोने से उकेरी आकर्षक चित्रकारी: बिसाऊ के निकट है महनसर। यहां घूमने या किसी काम से जाना पड़े तो गढ़ देखना नही भूलें। सोने की दुकान तो विख्यात है ही, जिसमें स्वर्ण स्याही की चित्रकारी देखने लायक है। ऐसा शेखावटी में और कहीं नहीं। स्वर्ण स्याही से की गई चित्रकारी के कारण उसका नाम भी सोने की दुकान पड़ा है।

तीन भागों में है दुकान: यह दुकान तीन भागों में बनी हुई है। इसमें भित्ति चित्र है। दक्षिण में पूरी रामायण के स्वर्ण भित्ति चित्र है, दूसरे भाग में २४ अवतारों के भित्ति चित्र है। तीसरे भाग में कृष्ण लीला है।

गांव में यह भी खास: गांव के बीच स्थित बड़ा मंदिर, पोद्दारों की छतरी, तोलारामजी का कमरा, नोपानी की हवेली एवं प्राचीन गढ़ यहां आने वाले हर व्यक्ति को आकर्षित करता है। कहा जाता है कि सन् १७५५-५६ में नवलसिंह ने गढ़ के निर्माण के लिए परकोटे व दरवाजे का निर्माण करवाया था।

सन् १७६८ में नाहर सिंह ने रिहायस के लिए कमरों आदि का निर्माण करवा कर गढ़ का विस्तार किया था। नाहर सिंह की सातवीं पीढ़ी के महेश्वर सिंह वर्तमान में गढ़ के एक हिस्से में होटल का संचालन कर रहे है।

फिल्मों की हुई है शूटिंग: महनसर व सोने की दुकान में हिंदी व पंजाबी फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है। जिले में आने वाला हर तीसरा विदेशी पर्यटक 'महनसर' में जरूर आता है। गांव की खूबियों को लेकर डॉक्यूमेन्ट्री भी बन चुकी है।

पौराणिक कथानकों का चित्रांकन: सोने की दुकान में संपूर्ण कृष्णावतार व रामावतार के पात्रों का चित्रण है। देश के सभी तीर्थ स्थलों का चित्रण आकर्षण का केंद्र है। तोलारामजी का कमरा, पोद्दारों की छतरी, रघुनाथ जी का बड़ा मंदिर भी देखने लायक है।

आफत टल जाएगी

बाधा-विघ्न जब आती है,
मनुज को बहुत डराती है,
सिलसिला ये पुराना है।
सबका जाना पहचाना है
विश्वयुद्ध की लपटों ने भी
खूब, हा-हा कार मचाया था,
पर एटम बम की त्रासदी से
जापान, तनिक न घबराया था,
उलटा अपना सामर्थ्य बढ़ा,
दुनियां को जज़्बा दिखाया था
सन छप्पन का वो, दुर्भिक्ष अकाल
और चेचक- प्लेग सी महामारी
भुकम्प-बाढ़ संग, आता काल
हमने कब इनसे हिम्मत हारी
जब गुर्जरभूमि कम्पित हो डोली
चहू और मचा था त्राहिमाम
स्वजन और छप्पर छिन गये
सुनाई देता था बस रुदन गान
तब हमारे पौरुष ने ही तो
संकट से सबको उबारा था,
साक्षी दुनियां है उस हिम्मत की
मिल कच्छ को कैसे संवारा था।
अब कोरोना सी महामारी ने
पूरी दुनिया में पांव पसारा है,
भय-भीत है सब जन-जीवन
हर मानव को ललकारा है
है चुनोती तेरी स्वीकार हमें
हम तनिक नहीं घबरायेंगे,
संकट के ये जो बादल हैं
कुछ दिन में ही छंट जायेंगे
महकेगा फिर चमन अपना,
बहारें भी आयेगी
वतन की सूनी गलियां
फिर चहचायेगी
'बीके' सब्र रखो तुम मन में,
यह आफत भी टल जायेगी

- बी.के. दायमा,
वापी, गुजरात, भारत

भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार
अक्षय तृतीया पर्व पर शुभकामनाएं

Babulal Gaggar
भ्रमणध्वनि: 09435052427

A LEADING SHOWROOM WITH ALL KINDS OF
♦Suiting ♦Sarees ♦Readymade Garments ♦Hosieries, Woollens, Blankets ♦ Carpets, Furnishing Material ♦Kurl-On-mattresses Pillow, Cushions ♦Furniture-Moderna, Supreme ♦Baggages-V.I.P., Samsonite, Aristocrat, Safari

JORHAT FANCY CLOTH STORE

A.T. Road, Jorhat, Assam, Bharat-785001
दूरध्वनि : 0376-2320121 Gram : Fancy House

जोश और जज्बे का नाम है

बुद्धि प्रकाश दायमा
महनसर निवासी-वापी प्रवासी

वापी: झुंझुनू जिले के 'महनसर' गांव में १ अक्टूबर १९६१ को दधीचि ब्राह्मण परिवार श्री केशर देव जी दायमा के यहाँ पांचवीं सन्तान के रूप में बुद्धि प्रकाश दायमा 'बी. के. दायमा' का जन्म हुआ। यथा नाम तथा गुण को साकार करते हुये, सदा अपनी कक्षा में अव्वल रह कर, श्री बुद्धि प्रकाश ने दसवीं तक की पढ़ाई गांव के ही सेठ दौलत राम नोपानी माध्यमिक विद्यालय से पूरी की।

बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा में संस्कारित होकर, आप पढ़ाई के साथ-साथ नेतृत्व क्षमता, राष्ट्र प्रेम, भाषण, कला व सेवा कार्य जैसे गुणों को भी आत्मसात करते गये, इसके बाद आगे के अध्ययन के लिये समीप के ही शिक्षा की काशी कहे जाने वाले रामगढ़ (शेखावाटी) के प्रसिद्ध सेठ राम नारायण रुईया राजकीय महाविद्यालय में प्रवेश लिया।

यहाँ भी पढ़ाई के साथ-साथ, सभी क्षेत्रों में अपनी योग्यता का खूब परचम फहराया। प्रथम वर्ष में ही छात्र संसद के महासचिव चुने गए, इसके अलावा महाविद्यालय योजना मंच के अध्यक्ष के रुप में भी आपका कार्यकाल बड़ा प्रभावी रहा। एन. सी. सी. की 'सी' सर्टिफिकेट परीक्षा आपने सीनियर अंडर ऑफिसर की रैंक के साथ उत्तीर्ण की। आपने कॉलेज बटालियन के कैडेटस की चुरू से चंडीगढ़ की १४५० किमी की साहसिक साइकिल यात्रा का भी सफल नेतृत्व किया।

इसी दौरान आप 'महनसर' के नवरत्न व बिरला ग्रुप की इण्डियन समेल्टिंग एंड रिफाइनिंग लि. मुंबई स्थित भांडुप के अध्यक्ष श्री सांवरमल खेतान के सम्पर्क में आये। उन्होंने आपकी प्रतिभा व नेतृत्व क्षमता को पहचान कर शिक्षा पूरी करने के बाद मुंबई आने की सलाह दी। उनकी प्रेरणा अनुसार, बी.कॉम. के बाद मुंबई को कर्मक्षेत्र बना कर बिड़ला ग्रुप से अपने कैरियर की शुरुवात की, उसके बाद निरन्तर प्रगति पथ पर चलते हुए ३० वर्ष पूर्व उद्योग नगरी 'वापी' को स्थायी ठिकाना बनाया। वर्तमान में आप यहाँ के गायत्री शक्ति पेपर मिल समूह में, ग्रुप प्रेसिडेंट के पद पर कार्यरत हैं।

आपके पद चिन्हों पर चलते हुए, आपके बड़े बेटे हेमन्त 'वापी' में ही स्वयं की पैकेजिंग यूनिट का संचालन कर रहे हैं। छोटे बेटे रौनक पेशे से चार्टर्ड एकाउन्टेंट है व परिवार की व्यापारिक-सामाजिक गतिविधियों से भी जुड़े हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी बी. के. दायमा जी का जीवन समाज सेवा को भी समर्पित रहा है।

वापी-दमण-सिलवासा के राजस्थानी समाज के साथ आपका गहरा जुड़ाव है। यहाँ के समाज का मुख्य संगठन 'राजस्थान प्रगति मंडल' के आप संस्थापक ट्रस्टी है व वापी में स्थित भव्य राजस्थान भवन के निर्माण में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है, इसके अलावा आप श्री सदगुरू धाम बरुमाल के प्रवक्ता, सरीगाम इंडस्ट्रीज एसोसिएशन वेलफेयर कमेटी चेयरमैन, वापी रेलवे स्टेशन सलाहकार समिति सदस्य, वापी शहर भाजपा के उपाध्यक्ष, हिंदी दैनिक राजस्थान पत्रिका के पत्रकार की जिम्मेदारी भी वर्षों से बाखुबी निभा रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी स्व.मंजू दायमा भी वापी की प्रखर समाज सेविका थी, जिन्हें वर्ष २,००० में वापी नगर पालिका में समाज की प्रथम पार्षद निर्वाचित होने का गौरव प्राप्त हुआ था, जिनकी पुण्य तिथि पर समाज द्वारा गत १३ वर्षों से लगातार राजस्थान भवन में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है, उनके द्वारा शुरू किये गये सेवा यज्ञ को जारी रखने के लिये आपके परिवार द्वारा 'मंजू दायमा मेमोरियल ट्रस्ट' स्थापित किया गया है, जिसके द्वारा मंजू दायमा संस्कार विद्यापीठ सहित महिला कल्याण के कई कार्यो का संचालन किया जाता है।

कर्मभूमि वापी (गुजरात) में स्थायी होने के बावजूद आपका जन्म-भूमि महनसर से भी पुरा लगाव बना हुआ है। अपनी माताजी गंगा देवी को जीवन की प्रेरणा मानते हुए आपने वहां गंगा विद्यापीठ शिक्षण संस्थान की स्थापना की है जो आज माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत होकर क्षेत्र के बालकों को स्तरीय शिक्षा प्रदान कर रहा है, इसके अलावा आप 'महनसर' में संचालित श्री गोपाल गौशाला के संस्थापक ट्रस्टी व संचालक मंडल के मुख्य स्तंभ हैं।

गांव में अन्य आधारभूत सेवाएं उपलब्ध करवाने में आप सदा प्रयत्नशील व सहभागी रहते हैं। शेखावाटी के साहित्यकार, कवि, पत्रकारिता के प्रबुद्धजनों को सम्मानित करने के लिये भी आपके गंगा विद्यापीठ ट्रस्ट द्वारा श्री भँवर लाल जोशी स्मृति सम्मान शुरू किया गया है, जिससे अभी तक पं श्री ताऊ शेखावाटी, डॉ. श्री गंगा प्रसाद शास्त्री, डॉ. श्री उदयवीर शर्मा, श्री हरीश हिंदुस्तानी जैसी हस्तियों को सम्मानित किया जा चुका है।

जन्मभूमि 'महनसर' के युवा अपनी प्रतिभा को सँवारकर यहाँ के गौरवशाली इतिहास में नया इतिहास लिखते रहें, यही आपका सपना है और इसी के लिये बिना कोई प्रचार के आप लगातार कार्य करते रहते है, आपका मानना है 'पसीने की स्याही से जो लिखते हैं मुक़द्दर, उनकी तकदीर के पन्ने कभी कोरे नहीं रहते' यही आपकी सफलता का राज है।

महनसर आपसी सामंजस्य व रमणीय स्थल है

मुरारीलाल जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि यह राजपूतों का ठिकाणा रहा है। सेठों के गांव के नाम से जाना जाता रहा है। यहां के प्रसिद्ध परिवारों में नोपानी परिवार, मस्करा परिवार, मोदी परिवार प्रमुख हैं जिनके द्वारा यहां कई सामाजिक कार्य किए गए हैं, जो आज भी अपनी पहचान बनाए हुए है। शिक्षा के क्षेत्र में मस्करा परिवार विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। यहां के पोद्दार परिवार द्वारा बनायी गयी सोने की दुकान, तोलाराम जी का कमरा विशेष रूप से विश्व विख्यात है, जहां पर्यटन के लिए देश-विदेश से सैलानी आते हैं। यहां का सबसे प्राचीन मंदिर हनुमान मंदिर है, जो पहले व्यायामशाला के रूप में जाना जाता था, क्योंकि यहां के महाराजाओं द्वारा पहलवानों के लिए यहां कुश्ती की शाला खोली गई थी। वर्तमान में यहां ४ निजी व ३ सरकारी स्कूल हैं, इनमें से नोपानी परिवार द्वारा बनाया गया स्कूल सरकार को समर्पित कर दिया गया है, जो वर्तमान में पूर्णत: सरकार द्वारा चलाया जा रहा हैं। यहां सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहां आपसी सामंजस्य व मेल-मिलाप के साथ राजपूत, ब्राह्मण, बनिया, जाट आदि सभी समाज के लोग रहते हैं। यह हमेशा शांत व खुशनुमा वातावरण वाला क्षेत्र है, कई विशेषताओं को लिए हुए है हमारा 'महनसर'।

मुरारीलाल तिवारी
व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३२३०७८४६५

मुरारीलाल जी मूलत: राजस्थान के 'महनसर' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'महनसर' में ही संपन्न हुई। पिछले ४० वर्षों से आप मुंबई में प्रवासी हैं। यहां एक प्रसिद्ध व्यवसायी के साथ समाजसेवी के रूप में सेवारत रहते हैं। मुंबई में आप की गारमेंट, मेडिकल व अन्य कई फर्म चलती हैं। 'महनसर' स्थित गौशाला के आप संस्थापक संरक्षक है। मुंबई में आपके द्वारा स्थापित जय राय माता पब्लिक सेवा ट्रस्ट आदिवासी व जरूरतमंदों की सेवा के लिए सक्रिय रहती है। अखिल भारतीय गौड़ ब्राह्मण महासभा के उपाध्यक्ष रहे हैं। मारवाड़ी सेवा संघ से भी जुड़े हुए हैं। अन्य कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय भागीदारी निभाते हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आप पूर्णत: समर्थन व्यक्त करते हैं।

आदिवासी क्षेत्रों के उत्थान के लिए कार्यरत श्री रायमाता पब्लिक सेवा ट्रस्ट

श्री रायमाता ट्रस्ट द्वारा सेवार्थ कार्य

मुंबई: श्री रायमाता पब्लिक सेवा ट्रस्ट कांदिवली मुंबई की स्थापना ८-५-२०१५ में की गई थी। इस ट्रस्ट की स्थापना आदिवासी क्षेत्र में शिक्षा, आदिवासी कन्याओं की शादी, 'महनसर' गांव में औषधालय व अन्य सेवा, गौ सेवा, रायमाता के मेले पर हरियाणा व राजस्थान के पहलवानों का मनोबल बढ़ाने के लिए दंगल करवाना आदि सामाजिक कार्यों के लिए विख्यात है, जिसके चेयरमैन मुरारी लाल तिवारी, अध्यक्ष रवि तिवारी, उपाध्यक्ष प्रेमलता तिवारी, कोषाध्यक्ष भारती तिवारी व ट्रस्टी कुलश्रेष्ठ तिवारी है। यह ट्रस्ट परिवार के संस्थापक मुरारीलाल तिवारी और रविकांत तिवारी ने विद्यालय में जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए यूनिफार्म, कपड़े तथा कॉपी-किताब के साथ अन्य शिक्षा सामग्री देकर हौसला बढ़ाता रहा है। समाज के जरूरतमंद लोगों तक उनके जरूरत की चीजें पहुँचे, संस्था का लक्ष्य है। गरीब तबके के लोगों को ऊपर लाना ही विषमता दूर करने का मुख्य उपाय है और शिक्षा एकमात्र साधन है जिससे आदिवासी क्षेत्रों के लोगों का मुख्य धारा में लाया जा सकता है।

श्री रायमाता सेवा ट्रस्ट परिवार

नोपानी परिवार भी है महनसर की शान

'महनसर' के चहुमुखी विकास व ख्याति में यहाँ के नोपानी परिवार की भी अहम भूमिका रही है। इस परिवार ने बड़े ओद्योगिक साम्राज्य की नींव रखने के साथ ही समाज सेवा के क्षेत्र में भी गांव में ही नहीं देश भर में अलग पहचान बनाई है जिसका श्रेय मुख्य रूप से सेठ श्री दौलतराम जी नोपानी के सुपुत्र श्री रावत मल जी व श्री रामेश्वर लाल जी की जुगल जोड़ी को ही जाता है। उन्होंने १९ वीं शताब्दी के शुरू में कोलकोत्ता में 'दौलतराम रावतमल' फर्म से अपने व्यापार की शुरुवात की। उस समय तेल और चावल के निर्यात के कारोबार में उन्हें अच्छी सफलता मिली।

चन्द्र शेखर नोपानी

व्यापार के साथ ही समाज सेवा व उस समय चल रहे आजादी के आंदोलन में भी इनकी गहरी रुचि थी। श्री रामेश्वर लाल जी की नेताजी सुभाषचंद्र बोस व डॉ राजेन्द्र प्रसाद के साथ काफी निकटता रही। अपनी व्यावसायिक तरक्की के साथ ही आपने गांव 'महनसर' में शानदार हवेलियों का निर्माण करवाया। शिक्षा की व्यवस्था के लिये सेठ दौलतराम नोपानी विद्यालय, नोपानी धर्मशाला व श्रीमती कुन्दनी देवी नोपानी चिकित्सालय बनवा कर ग्रामजनों की सेवा में समर्पित किया।

'महनसर' में ही नहीं बल्कि देश भर में भी अलग पहचान बनाई है

नोपानी जी का अपने गांव से लगाव का आलम यह था कि इनकी कोठी में बने कुएं से उस समय डीजल जनरेटर द्वारा गांव वासियों के लिये सार्वजनिक नल द्वारा पानी आपूर्ति की व्यवस्था की गई थी। गांव का कोई भी व्यक्ति कोलकोत्ता नोकरी या धंधे के लिये जाता था तो १७८ महात्मा गांधी रोड पर नोपानी जी की गद्दी में उनकी अन्य व्यवस्था होने तक ठहरने व बासे में खाने की सुविधा निःशुल्क रहती थी। इस सेवा भाव ने उनकी तरक्की को चार चांद लगा दिये।

चालीस के दशक तक आते-आते दोनों भाइयों ने चीनी, टेक्सटाइल, पेपर, कास्टिंग उद्योग में परचम फहराना शुरू कर दिया। उस समय श्री रावत मल जी के बड़े बेटे श्री मोहन बाबू ने भी काम-काज सम्भालना शुरू कर दिया और नोपानी परिवार की गिनती बड़े उद्योगपतियों में होने लगी।

जिसका सबूत यह है कि प्रसिद्ध उद्योगपति श्री के. के. बिड़ला की बेटी नन्दिनी की शादी श्री मोहन लाल जी नोपानी के सुपुत्र श्री बिमल कुमार नोपानी के साथ हुई थी। इस तरह नोपानी परिवार बिड़ला परिवार के साथ जुड़ गया।

अपने पिता और चाचा रामेश्वरलाल जी के पद चिन्हों पर चलते हुए श्री मोहन बाबू ने उद्योग के साथ-साथ समाज सेवा में भी खूब नाम कमाया। आप राणी सती मन्दिर झुंझुनू के प्रमुख ट्रस्टी, काली कमली वाली सेवा समिति हरिद्वार के प्रमुख के साथ ही नोपानी विद्यालय कोलकोत्ता व श्री रामेश्वर लाल जी द्वारा रांची के पास स्थापित विकास विद्यालय का भी सफल संचालन किया।

चन्द्र शेखर नोपानी हैं परिवार के सितारे

नोपानी परिवार की बागडोर श्री विमल कुमार नोपानी के सुपुत्र चन्द्र शेखर नोपानी के हाथ में है, जिन पर अपने निज परिवार के साथ ही देश के ख्याति नाम शख्सियत नानाजी श्री के. के. बिड़ला की विरासत सम्भालने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है, जिसे वे बखूबी निभा रहे हैं।

वर्तमान में आप सतलज टेक्सटाइल्स एन्ड इंडस्ट्रीज लि.,अपर गंगा सुगर मिल्स लि., ओध सुगर मिल्स जैसी कई प्रतिष्ठानों के प्रमुख हैं। कोलकोत्ता के नोपानी विद्यालय व नेवरी रांची के प्रसिद्ध विकास विद्यालय के संचालक मंडल के मुखिया हैं।

धीर-गम्भीर व मिलनसारिता व बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री चन्द्र शेखर जी से 'महनसर' गांव वासियों को उम्मीद हैं कि वे अपने पूर्वजों की गौरवमयी परम्परा को बनाये रखेंगे।

अक्षय तृतीया
(आखा तीज)

अक्षय तृतीया या आखा तीज वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को कहते हैं। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन जो भी शुभ कार्य किये जाते हैं, उनका अक्षय फल मिलता है। इसी कारण इसे अक्षय तृतीया कहा जाता है। वैसे तो सभी बारह महीनों की शुक्ल पक्षीय तृतीया शुभ होती है, किंतु वैशाख माह की तिथि स्वयंसिद्ध मुहूर्तों में मानी गई है।

महत्व: अक्षय तृतीया का सर्वसिद्ध मुहूर्त के रूप में भी विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस दिन बिना कोई पंचांग देखे, कोई भी शुभ व मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह-प्रवेश, वस्त्र-आभूषणों की खरीददारी या घर, भूखंड, वाहन आदि की खरीददारी से संबंधित कार्य किए जा सकते हैं। नवीन वस्त्र,

आभूषण आदि धारण करने और नई संस्था, समाज आदि की स्थापना या उदघाटन का कार्य श्रेष्ठ माना जाता है। पुराणों में लिखा है कि इस दिन पितरों को किया गया तर्पण तथा पिन्डदान अथवा किसी और प्रकार का दान, अक्षय फल प्रदान करता है। इस दिन गंगा स्नान करने से तथा भगवत पूजन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, यहाँ तक की इस दिन किया गया जप, तप, हवन, स्वाध्याय और दान भी अक्षय हो जाता है। यह तिथि यदि सोमवार तथा रोहिणी नक्षत्र के दिन आए तो इस दिन किए गए दान, जप-तप का फल बहुत अधिक बढ़ जाता हैं, इसके अतिरिक्त यदि यह तृतीया मध्याह्न से पहले शुरू होकर प्रदोष काल तक रहे तो बहुत ही श्रेष्ठ मानी जाती है। यह भी माना जाता है कि आज के दिन मनुष्य अपने या स्वजनों द्वारा किए गए जाने-अनजाने अपराधों की सच्चे मन से ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करे तो भगवान उसके अपराधों को क्षमा कर देते हैं और उसे सदगुण प्रदान करते हैं, अतः आज के दिन अपने दुर्गुणों को भगवान के चरणों में सदा के लिए अर्पित कर उनसे सदगुणों का वरदान माँगने की परंपरा भी है।

हिन्दू धर्म में महत्व: अक्षय तृतीया के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर समुद्र या गंगा स्नान करने के बाद भगवान विष्णु की शांत चित्त होकर विधि विधान से पूजा करने का प्रावधान है। नैवेद्य में जौ या गेहूँ का सत्तू, ककड़ी और चने की दाल अर्पित किया जाता है, तत्पश्चात फल, फूल, बरतन, तथा वस्त्र आदि दान करके ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती है। ब्राह्मण को भोजन करवाना कल्याणकारी समझा जाता है। मान्यता यह है कि इस दिन सत्तू अवश्य खाना चाहिए तथा नए वस्त्र और आभूषण पहनने चाहिए। गौ, भूमि, स्वर्ण पात्र इत्यादि का दान भी इस दिन किया जाता है। यह तिथि वसंत ऋतु के अंत और ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ का दिन भी है इसलिए अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे घड़े, कुल्हड़, सकोरे, पंखे, खड़ाऊँ, छाता, चावल, नमक, घी, खरबूजा, ककड़ी, चीनी, साग, इमली, सत्तू आदि गरमी में लाभकारी वस्तुओं का दान पुण्यकारी माना गया है, इस दान के पीछे यह लोक विश्वास है कि इस दिन जिन-जिन वस्तुओं का दान किया जाएगा, वे समस्त वस्तुएँ स्वर्ग या अगले जन्म में प्राप्त होगी। इस दिन लक्ष्मी नारायण की पूजा सफेद कमल अथवा सफेद गुलाब या पीले गुलाब से करना चाहिये।

'सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि प्रशस्तानि सदार्चने।
दानकाले च सर्वत्र मंत्र मेत मुदीरयेत

अर्थात सभी महीनों की तृतीया में सफेद पुष्प से **शेष पृष्ठ २५ पर...**

पृष्ठ २४ से... किया गया पूजन प्रशंसनीय माना गया है।

ऐसी भी मान्यता है कि अक्षय तृतीया पर अपने अच्छे आचरण और सद्गुणों से दूसरों का आशीर्वाद लेना अक्षय रहता है। भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा विशेष फलदायी मानी गई है, इस दिन किया गया आचरण और सत्कर्म अक्षय रहता है।

भविष्य पुराण के अनुसार इस तिथि की युगादि तिथियों में गणना होती है, सतयुग और त्रेता युग का प्रारंभ इसी तिथि से हुआ है। भगवान विष्णु ने नर-नारायण, हयग्रीव और परशुराम जी का अवतरण भी इसी तिथि को हुआ था। ब्रह्माजी के पुत्र अक्षय कुमार का आविर्भाव भी इसी दिन हुआ था। इस दिन श्री बद्रीनाथ जी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की जाती है और श्री लक्ष्मी नारायण के दर्शन किए जाते हैं। प्रसिद्ध तीर्थ स्थल बद्रीनारायण के कपाट भी इसी तिथि से पुनः खुलते हैं। वृंदावन स्थित श्री बांके बिहारी जी मन्दिर में भी केवल इसी दिन श्री विग्रह के चरण दर्शन होते हैं, अन्यथा वे पूरे वर्ष वस्त्रों से ढके रहते हैं। यह तृतीया ४१ घटी २१ पल होती है तथा धर्म सिंधु एवं निर्णय सिंधु ग्रंथ के अनुसार अक्षय तृतीया ६ घटी से अधिक होना चाहिए। पद्म पुराण के अनुसार इस तृतीया को अपराह्न व्यापिनी मानना चाहिए। इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था और द्वापर युग का समापन भी इसी दिन हुआ था। ऐसी मान्यता है कि इस दिन से प्रारम्भ किए गए कार्य अथवा इस दिन को किए गए दान का कभी भी क्षय नहीं होता।

मदनरत्न के अनुसार:

अस्यां तिथौ क्षयमुर्पति हुतं न दत्तं। तेनाक्षयेति कथिता मुनिभिस्तृतीया
उद्दिष्य दैवतपितृन्क्रियते मनुष्यैः। तत् च अक्षयं भवति भारत सर्वमेव

प्रचलित कथाएँ

अक्षय तृतीया की अनेक व्रत कथाएँ प्रचलित हैं। ऐसी ही एक कथा के अनुसार प्राचीन काल में एक धर्मदास नामक वैश्य था। उसकी सदाचार, देव और ब्राह्मणों के प्रति काफी श्रद्धा थी। इस व्रत के महात्म्य को सुनने के पश्चात उसने इस पर्व के आने पर गंगा में स्नान करके विधिपूर्वक देवी-देवताओं की पूजा की, व्रत के दिन स्वर्ण, वस्त्र तथा दिव्य वस्तुएँ ब्राह्मणों को दान में दी। अनेक रोगों से ग्रस्त तथा वृद्ध होने के बावजूद भी उसने उपवास करके धर्म-कर्म और दान पुण्य किया। यही वैश्य दूसरे जन्म में कुशावती का राजा बना। कहते हैं कि 'अक्षय तृतीया' के दिन किए गए दान व पूजन के कारण वह बहुत धनी प्रतापी बना। वह इतना धनी और प्रतापी राजा था कि त्रिदेव तक उसके दरबार में अक्षय तृतीया के शेष पृष्ठ २६ पर...

भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार अक्षय तृतीया पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

B.T. Mills Pvt. Ltd.

B.T.

Leading Manufacturer of:

+ Dyed Poplin
+ Dyed Lining (Astar)
+ Polyster Printed Saree
+ Dyed Cashment
+ RFD (for Saree & Duppatta)
+ Pocketing
+ Lal-Shalu
+ Gamcha
+ Dhoty
+ Malmal
+ Sheeting / Markin
+ Dyed Markin
+ Banner Cloth
+ Majri

"B.T. House", Thakur Devi Singh Marg,
Alamganj, Burhanpur, Madhya Pradesh,
Bharat-450 331 Tel: 07325- 255100, 245500
Email: sales@btmill.com

Burhanpur Textiles Limited
B.T. Hand Processors

B.T.

The group prides in its adequate installed capacity, capable of handling large orders.

Sizing & Weaving: Yarn Warping, Sizing, Air Jet, Water Jet & Power Loom.

Bleaching & Processing: Mercerising, Bleaching, ETP, CBR & CMR, Padding Mangle, Drying Range, Back Fill, Hot Air Stenter, Open Stenter, Zero-Zero, Felt, Calendaring, Decatizing.

Dyeing & Printing: Jigger, Jet Dyeing, Flat Bed Printing, Loop Ager.

"We are committed to produce quality fabric as specified by the customer and will improve our quality management system continuously".

"B.T. House", Thakur Devi Singh Marg,
Alamganj, Burhanpur, Madhya Pradesh, Bharat 450 331
Tel: 07325- 255100, 245500
Email: sales@btmill.com

पृष्ठ २५ से... दिन ब्राह्मण का वेष धारण करके उसके महायज्ञ में शामिल होते थे। अपनी श्रद्धा और भक्ति का उसे कभी घमंड नहीं हुआ और महान वैभवशाली होने के बावजूद भी वह धर्म मार्ग से विचलित नहीं हुआ।

भगवान परशुराम

माना जाता है कि यही राजा आगे चलकर राजा चंद्रगुप्त के रूप में पैदा हुआ।

स्कंद पुराण और भविष्य पुराण में उल्लेख है कि वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को रेणुका के गर्भ से भगवान विष्णु ने परशुराम रूप में जन्म लिया। कोंकण और चिप्लून के परशुराम

तीर्थंकर आदिनाथ को प्रथम आहार देते राजा श्रेयांस (चित्र- अजमेर जैन मन्दिर)

मंदिरों में इस तिथि को परशुराम जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। दक्षिण भारत में परशुराम जयंती को विशेष महत्व दिया जाता है। परशुराम जयंती होने के कारण इस तिथि में भगवान परशुराम के आविर्भाव की कथा भी सुनी जाती है। इस दिन परशुराम जी की पूजा करके उन्हें अर्घ्य देने का बड़ा माहात्म्य माना गया है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ और क्वारी कन्याएँ इस दिन गौरी-पूजा करके मिठाई, फल और भीगे हुए चने बाँटती हैं, गौरी-पार्वती की पूजा करके धातु या मिट्टी के कलश में जल, फल, फूल, तिल, अन्न आदि लेकर दान करती हैं। मान्यता है कि इसी दिन जन्म से ब्राह्मण और कर्म से क्षत्रिय भृगुवंशी परशुराम का जन्म हुआ था। एक कथा के अनुसार परशुराम की माता और विश्वामित्र की माता के पूजन के बाद प्रसाद देते समय ऋषि ने प्रसाद बदल कर दे दिया था, जिसके प्रभाव से परशुराम ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रिय स्वभाव के थे और क्षत्रिय पुत्र होने के बाद भी विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाए। उल्लेख है कि सीता स्वयंवर के समय परशुराम जी अपना धनुष बाण श्री राम को समर्पित कर संन्यासी का जीवन बिताने अन्यत्र चले गए, अपने साथ एक फरसा रखते थे तभी उनका नाम परशुराम पड़ा।

जैन धर्म में अक्षय-तृतीया

तीर्थंकर आदिनाथ को प्रथम आहार देते राजा श्रेयांस (चित्र- अजमेर जैन मन्दिर) जैन धर्मावलम्बियों का महान धार्मिक पर्व है। इस दिन जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान ने एक वर्ष की पूर्ण तपस्या करने के पश्चात इक्षु (शोरडी-गन्ने) रस से पारायण किया था। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने सत्य व अहिंसा का प्रचार करने एवं अपने कर्म बंधनों को तोड़ने के लिए संसार के भौतिक एवं पारिवारिक सुखों का त्याग कर जैन वैराग्य अंगीकार कर लिया। सत्य और अहिंसा के प्रचार करते-करते

शेष पृष्ठ २७ पर...

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मेरा भारत बनेगा अब महान
हटेगा India बढ़ेगी भारत की शान
माँ लक्ष्मी आप पर अपनी
कृपा हमेशा बनाए रखें
भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार
अक्षय तृतीया पर शुभकामनाएं
श्री बालाजी ऑईल मिल
श्री व्यंकटेश रीफायनरी प्रा.लि.
श्री कृपा जीनर प्रा.लि.
Erandol, Dist. Jalgaon, Maharashtra,
Bharat-425109 दूरध्वनि : 02588-244452,
Fax: 02588-244451, 244454, 244455
संचालक : दिनेश गणपती काबरा
भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

पृष्ठ २६ से...

आदिनाथ प्रभु हस्तिनापुर गजपुर पधारे जहाँ इनके पौत्र सोमयश का शासन था। प्रभु का आगमन सुनकर सम्पूर्ण नगर दर्शनार्थ उमड़ पड़ा। सोमप्रभु के पुत्र राजकुमार श्रेयांस कुमार ने प्रभु को देखकर उसने आदिनाथ को पहचान लिया और तत्काल शुद्ध आहार के रूप में प्रभु को गन्ने का रस दिया, जिससे आदिनाथ ने व्रत का पारायण किया।

जैन धर्मावलंबियों का मानना है कि गन्ने के रस को इक्षुरस भी कहते हैं, इस कारण यह दिन इक्षु तृतीया एवं अक्षय तृतीया के नाम से विख्यात हो गया। भगवान श्री आदिनाथ ने लगभग ४०० दिवस की तपस्या के पश्चात पारायण किया था। यह लंबी तपस्या एक वर्ष से अधिक समय की थी अत: जैन धर्म में इसे वर्षीतप से संबोधित किया जाता है। आज भी जैन धर्मावलंबी वर्षीतप की आराधना कर अपने को धन्य समझते हैं, यह तपस्या प्रति वर्ष कार्तिक के कृष्ण पक्ष की अष्टमी से आरम्भ होती है और दूसरे वर्ष वैशाख के शुक्लपक्ष की अक्षय तृतीया के दिन पारायण कर पूर्ण की जाती है।

तपस्या आरंभ करने से पूर्व इस बात का पूर्ण ध्यान रखा जाता है कि प्रति मास की चौदस को उपवास करना आवश्यक होता है। इस प्रकार का वर्षीतप करीबन १३ मास और दस दिन का हो जाता है। उपवास में केवल गर्म पानी का सेवन किया जाता है। भारत वर्ष में इस प्रकार की वर्षी तपश्चर्या करने वालों की संख्या हज़ारों तक पहुँच जाती है। यह तपस्या धार्मिक दृष्टिकोण से अन्यक्त ही महत्त्वपूर्ण है, वहीं आरोग्य जीवन बिताने के लिए भी उपयोगी है। संयम जीवनयापन करने के लिए इस प्रकार की धार्मिक क्रिया करने से मन को शान्त, विचारों में शुद्धता, धार्मिक प्रवृत्रियों में रुचि और कर्मों को काटने में सहयोग मिलता है, इसी कारण इस अक्षय तृतीया का जैन धर्म में विशेष धार्मिक महत्व समझा जाता है। मन, वचन एवं श्रद्धा से वर्षीतप करने वाले को महान समझा जाता है।

संस्कृति में इस दिन से शादी-ब्याह करने की शुरुआत हो जाती है। बड़े-बुजुर्ग अपने पुत्र-पुत्रियों के लगन का मांगलिक कार्य आरंभ कर देते हैं। अनेक स्थानों पर छोटे बच्चे भी पूरी रीति-रिवाज के साथ अपने गुड्डा-गुड़िया का विवाह रचाते हैं, इस प्रकार गाँवों में बच्चे सामाजिक कार्य व्यवहारों को स्वयं सीखते व आत्मसात करते हैं। कई जगह तो परिवार के साथ-साथ पूरा का पूरा गाँव भी बच्चों के द्वारा रचे गए वैवाहिक कार्यक्रमों में सम्मिलित हो जाता है, इसलिए कहा जा सकता है कि 'अक्षय तृतीया' सामाजिक व सांस्कृतिक शिक्षा का अनूठा त्यौहार है। कृषक समुदाय में इस दिन एकत्रित होकर आने वाले वर्ष के आगमन, कृषि पैदावार आदि के शगुन देखते हैं। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो सगुन कृषकों को मिलते हैं, वे शत-प्रतिशत सत्य होते हैं। राजपूत समुदाय में आने वाला वर्ष सुखमय हो, इसलिए इस दिन शिकार पर जाने की परंपरा है।

विभिन्न प्रांतों में अक्षय तृतीया: बुंदेलखंड में अक्षय तृतीया से प्रारंभ होकर पूर्णिमा तक बडी धूमधाम से उत्सव मनाया जाता है, जिसमें कुँवारी कन्याएँ अपने भाई, पिता तथा गाँव-घर और कुटुंब के लोगों को शगुन बाँटती हैं और गीत गाती हैं। अक्षय तृतीया को राजस्थान में वर्षा के लिए शगुन निकाला जाता है, वर्षा की कामना की जाती है, लड़कियाँ झुंड बनाकर घर-घर जाकर शगुन गीत गाती हैं और लड़के पतंग उड़ाते हैं। यहाँ इस दिन सात तरह के अन्नों से पूजा की जाती है। मालवा में नए घड़े के ऊपर खरबूज़ा और आम के पल्लव रख कर पूजा होती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन कृषि कार्य का आरंभ किसानों को समृद्धि देता है।

महनसर में
किले के ठाकुरों की रस्मों रिवाज अभी भी बरक़रार है। गत वर्ष हुई ठा.महिपाल सिंह की बेटी की शादी में हाथी के होदे पर सवार होकर पहुंचा दूल्हा व किले के दरवाजे पर उपस्थित राजघराने के सदस्य

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को 'भारत' ही बोला जाएगा यह है हमारा आव्हान
माँ लक्ष्मी आप पर अपनी
कृपा हमेशा बनाए रखें
भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार
अक्षय तृतीया पर्व पर शुभकामनाएं

Devendra Prasad Jajodia B.E. (HONS)
Mob. 09331860001

JBG
Jai Balaji Group

5, Bentick Street, Kolkatta, West Bengal, Bharat-700001
Ph.: 033-22489808 Fax : 91 (033) 22430021
Email : dpjajodia@jaibalajigroup.com, chandisteel@jaibalajigroup.com
E-mail Fact.: csi@jaibalajigroup.com Website : www. jaibalajigroup.com

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज द्वारा नयी शिक्षा नीति

मुंबई: (१६ अप्रैल २०२१) मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा संचालित बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज एवं सीताराम देवड़ा इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट स्टडीज द्वारा १६ अप्रैल' २०२१ को नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०, उच्च शिक्षा में सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ विषय पर आधारित राष्ट्रीय वेबिनार सीरीज की सातवीं सीरीज के तहत समाकलिन ऑनलाइन पाठ्यक्रम' विषय पर हिंदी विभाग व ऐकेडमिक कमेटी के संयुक्त तत्वाधान में आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ के संयोजन में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। इस वेबिनार में गूगल मीट पर ३०० से अधिक शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े अध्येता ऑनलाइन शामिल हुए। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में सुशील व्यास (मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष), प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ परगत सिंह गर्चा (प्राचार्य जी. एच. के. खालसा कॉलेज ऑफ एजुकेशन गुरुसर सदर लुधियाना) से एवं डॉ रमेश चंदर शर्मा (एसोसिएट प्रोफेसर स्कूल ऑफ ग्लोबल अफेयर्स, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली) से उपस्थित थे।

मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री सुरेश देवड़ा जी सम्मेलन के ट्रस्टी एवं महाविद्यालय के संयोजक श्रीकांत डालमिया जी तथा सीताराम देवड़ा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के संयोजक विजय सिंघल जी, मारवाड़ी सम्मेलन के अन्य सम्माननीय सदस्य भी सहभागी हुए।

प्रमुख वक्ता डॉ परगत सिंह गर्चा ने 'समाकलिन पाठ्यक्रम व शिक्षा' विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि इस नीति में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जैसे शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स को एकीकृत करने में काफी समय लग सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसे क्रियान्वित करने में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि इनमें अधिकांशतः कोर्सेस इंटरनेट पर आधारित हैं। उन्होंने कोठारी कमीशन की ओर संकेत करते हुए ये उम्मीद जताई कि चुनौतियाँ ही सफलता के मार्ग खोलती हैं, नए अवसर देती हैं, परिवर्तन संघर्ष और चुनौतियों का नाम है, इसी आशा के साथ वर्ष २०३० तक इस नई शिक्षा नीति को क्रियान्वित करने का अथक प्रयास किया जा रहा है और इसे सफल बनाने में सभी के सकारात्मक योगदान की आवश्यकता है।

वक्ता डॉ रमेश चन्दर शर्मा जी ने 'मूक्स, स्वयम व अन्य' विषयों पर अपने विचार रखते हुए अपने वक्तव्य के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी, कहा कि ये सारे ऑनलाइन कोर्सेस स्वशिक्षा व स्वप्रेरणा की ओर अग्रसर करते हैं।

आत्मविश्वास जगाते हैं। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ सन्तोष कौल काक ने प्रस्ताविकि के रूप में अपने वक्तव्य में कहा कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए चुनौतियों का साहस के साथ सामना करना ही सफलता की ओर अग्रसित होना है और समय तथा परिस्थितियों की मांग के अनुसार परिवर्तन अनिवार्य है।

नई शिक्षा नीति की सफलता भी उसकी चुनौतियों का मिलजुल कर सामना करने में ही है और ये अवश्य सफल होगी, इसकी आशा जताते हुए सुदृढ़ व सफल भविष्य की ओर संकेत किया। महाविद्यालय के हिंदी विभाग के सह प्रशिक्षक रामलखन पाल ने अतिथियों का परिचय देते हुए उनका स्वागत किया।

इंडिया नहीं भारत बोलें सभा सम्पन्न
जैन नवरत्नों का हुआ सम्मान

सत्य अहिंसा और विश्व शांति के अग्रदूत जन-जन के आराध्य वर्तमान शासन नायक श्री १००८ तीर्थंकर महावीर की २६२० वें जन्म कल्याणक दिनांक २५ अप्रैल २०२१ के पावन स्वर्णिम सुअवसर पर 'मैं भारत हूँ' संघ के तत्वाधान में एक भव्य वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबीनार के प्रारंभ में मंगलाचरण पाठ राष्ट्रीय संवाददाता पारस जैन 'पार्श्वमणि' पत्रकार कोटा राजस्थान ने अपनी सुमधुर आवाज में सभी को भावविभोर कर दिया। संघ के अध्यक्ष बिजय जैन मुंबई ने बताया कि इस अवसर पर जैन धर्म और देश के विकास के लिए काम करने वाले नवरत्नों को सम्मानित किया गया, जिसमें पारस जैन 'पार्श्वमणि' पत्रकार कोटा, ऍड. खिल्लीमल जैन अलवर, प्रदीप बड़जात्या इंदौर, पूर्व न्यायाधीश पानाचंद जैन जयपुर, इंदु जैन दिल्ली, साहिल जैन (धूलियान) और विमल जैन पटना प्रमुख थे। इन्होंने अलग-अलग आयामों में जैन धर्म दर्शन में अपनी सेवाएं समाज को निस्वार्थ भाव से समर्पित की है। मंच का सफल संचालन खुशबू जैन ने बहुत ही शानदार अंदाज में किया एवं तीर्थंकर महावीर स्वामी की जीवनी का वर्णन किया। साथ ही कोमल जैन, खनक कोचर, पुष्पा देवी, अर्चना जैन और रवि जैन, श्रेयांस बैद जैन ने अपनी भाव पूर्ण प्रस्तुति देकर सबका मन जीत लिया। विदित हो कि संगीतकार व गीतकार रवि जैन द्वारा 'इंडिया नहीं भारत बोलें' पर एक गीत भी बनाया गया है, इस अवसर पर सभी ने भगवान महावीर के दिखाए अहिंसा और सत्य के पथ पर चलने का संकल्प लिया, साथ ही अपने देश को 'भारत' के नाम से पुकारने के अभियान को युद्ध स्तर पर ले जाने की शपथ ली गयी।

मिथिला-ए-एलीट क्लब बुजुर्गों के लिए वरदान

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, सामाजिक मुद्दों, आर्थिक और वित्तीय मुद्दों, स्वास्थ्य सेवा, पर्यावरण और शैक्षिक मुद्दों पर हर रविवार को चर्चा और कोरोना काल में एक अंतर बनाने के लिए एक क्लब का गठन किया गया है।

मुंबई: मिथिला-ए एलीट क्लब जेबी नगर, अंधेरी (पूर्व) में एक क्लब है, जिसे सुरेश जैन, सिविल इंजीनियर और ७६ साल के एक अनुभवी और मिथिला 'ए' बिल्डिंग सीएचएस के निवासी द्वारा स्थापित किया गया है। प्रारंभ में अरुण करवा सीए और मिस युक्वि व्यास बी.कॉम. एलएलबी ने हाथ मिलाया और जल्द ही सोसायटी से १५ अन्य सदस्य भी क्लब में शामिल हो गए। क्लब प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक बैठक आयोजित करता है।

क्लब गठन मिथिला 'ए' सोसाइटी में रहने वाले विभिन्न विषयों के पेशेवरों के समूह को बनाने और वर्तमान मामलों और सामाजिक-आर्थिक आदि से जुड़े विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श करने के लिए किया गया था, जो नागरिकों के जीवन को प्रभावित करता है। सामान्य तौर पर जिस तरह से क्लब के सदस्य बड़े पैमाने पर लोगों को सकारात्मक योगदान दे सकते हैं दे रहे हैं। आने वाले समय में क्लब पेशेवर और समान विचारधारा वाले व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

१४ मार्च २०२१ को मिथिला-ए एलीट क्लब ने अपने रविवार की बैठक में युवा और नवोदित पेशेवरों द्वारा एक एनजीओ को आमंत्रित किया, जो अकेलेपन और अवसाद से लड़ने में बुजुर्ग और वरिष्ठ नागरिकों की मदद करने के लिए कार्य करता है।

एनजीओ के मकसद और सोच को समझा और सराहा गया। क्लब के सदस्यों ने अपनी दृष्टि को आगे बढ़ाने के लिए कुछ बहुत ही मूल्यवान सुझाव दिए, सभी सदस्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ एक उपयोगी चर्चा हुई।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मेरा भारत बनेगा अब महान
हटेगा India बढ़ेगी भारत की शान
माँ लक्ष्मी आप पर अपनी
कृपा हमेशा बनाए रखें
भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार
अक्षय तृतीया पर्व पर शुभकामनाएं

बाबुलाल एम. करवा
भ्रमणध्वनि: 9322304599

वीणा बी. करवा
सोनू एल. माहेश्वरी
दीपक बी. करवा (I.A.S)
(निवासी - खींवसर, नागौर, राजस्थान)
सी-5, कृष्णा लीला, कॉ. हॉ. सोसायटी, बांगुर नगर, गोरेगांव पश्चिम, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400104 दूरध्वनि : 022-28766069

नीम लगायें पर्यावरण बचाये
भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
मेरा भारत बनेगा अब महान
हटेगा India बढ़ेगी भारत की शान
माँ लक्ष्मी आप पर अपनी
कृपा हमेशा बनाए रखें
भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार
अक्षय तृतीया पर्व पर शुभकामनाएं

JAGDISH TODI
P J EXPORTS
C-24 Raj Industrial Complex, Marol Maroshi,
Military Road, Andheri East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400059
Tel.: 0091 22 66794971 Fax: 0091 22 66794977
E-mail: jagdish.todi@pjexports.co.in

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान
नीम लगायें पर्यावरण बचायें

व्यंजन

अक्षय तृतीया पर
गेहूं की खिचड़ी

आखा तीज जो अक्षय तृतीया के नाम से भी प्रसिद्ध है जैनियों और हिंदुओं के लिए सबसे पवित्र और शुभ दिन है। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार पूरा दिन शुभ होता है और किसी नए उद्यम को शुरू करने के लिए मुहूर्त की जरूरत नहीं होती है और न ही किसी अन्य शुभ कार्य जैसे शादी, ग्रह प्रवेश, नामकरण आदि आदि के लिए, इस दिन दान करना बहुत अच्छा माना जाता है। आखा तीज के शुभ अवसर पर अधिकांश राजस्थानी और हिंदू परिवार 'गेहूं का खिचड़ा' नामक पारंपरिक पकवान बनाते हैं। गेहू का खिचड़ा एक संपूर्ण भोजन है जो स्वस्थ और पौष्टिक होता है, यह प्रोटीन, फाइबर, खनिज, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट्स का अच्छा स्रोत है। यह एक विशेष प्रकार की खिचड़ी है और इसका स्वाद बहुत स्वादिष्ट होता है।

गेहु का खिचड़ा बनाने की विधि बहुत ही सरल और आसान है, बस पहले से तैयारी की आवश्यकता होती है क्योंकि गेहूं को कुछ घंटों के लिए भिगोया जाता है और फिर भूसी निकालने के लिए इसे कुचला जाता है।

गेहूं का खिचड़ा के लिए सामग्री- १ चाय कप सबूत गेहूं, १/४ चाय कप साबुत मूंग, १/४ चाय कप चावल, १/८ चम्मच हल्दी, आवश्यकतानुसार नमक, तड़का के लिए सामग्री, २ tbsp देसी घी, ½ छोटा चम्मच जीरा, १/८ चम्मच हींग, २ बारीक कटी हुई हरी मिर्च, ½ छोटा चम्मच कसा हुआ अदरक, १० से १२ कटे हुए काजू, गेंहु के खिचड़े पर ऊपर से डालने के लिए देसी घी

गेहूं का खिचड़ा बनाने की पूर्व तैयारी- एक कटोरे में एक कप गेहूं लें, गेहूं पर चौथाई चाय कप पानी छिड़कें, इसे ठीक से मिलाएं, कटोरे को ढक्कन के साथ कवर करें और इसे ६ से ७ घंटे के लिए एक तरफ रख दें।

अब मिक्सर में ३ से ४ सेकंड के लिए गेहूं को चला लें, मिक्सर को बंद कर दें, प्रक्रिया को ४ से ५ बार दोहराएं। एक प्लेट में गेहूं को निकालें और इसे अपने हाथों से रगड़ें। गेहूं को छलनी से छान कर या फटक कर भूसी निकाल दे। अब फिर से गेहूं को एक घंटे के लिए पानी में भिगो दें, साबूत मूंग को ६ से ७ घंटे के लिए भिगो दें। चावल को १० से १५ मिनट के लिए भिगो दें।

बनाने का तरीका – प्रेशर कुकर में ४ चाय कप पानी उबालें, गेहूं, साबुत मूंग और चावल डालें, हल्दी और नमक डाले और ढक्कन बंद करें।

एक सीटी के बाद आंच धीमी कर दें और १० मिनट तक पकाएं।

आंच बंद करें और प्रेशर रिलीज होने दें।

प्रेशर कुकर का ढक्कन खोलें और गेंहू का खिचड़ा मैश करें।

तड़का – २ टेबलस्पून देसी घी को गर्म करें, जीरा डालें, जब यह तडकने लगे तो हरी मिर्च और अदरक डालें और इसे कुछ सेकंड के लिए भूनें, अब काजू डालें और इसे सुनहरा होने तक भूनें, हींग छिड़कें और गेहु के खिचड़े पर तड़का लगाएं।

परोसने का तरीका – गरमा गरम गेंहू के खिचड़े पर परोसते समय ऊपर से देसी घी डालें और इसे अपनी मनपसंद संगत के साथ परोसें।

इमली का इमलाना

खट्टी मीठी इमली (इमली) एक स्वादिष्ट फल है, और 'इमली' शब्द के बारे में सोचते ही सब के मुंह में पानी आने लगता है। कई स्वादिष्ट व्यंजनों को इमली के साथ बनाया जाता है। यहाँ पर इमली की इमलाना बनाने की अद्भुत रेसिपी प्रस्तुत है जो न केवल स्वादिष्ट है, बल्कि यह आपको तेज़ गर्मी में भी हाइड्रेटेड और तरोताजा रखती है, इसलिए इस गर्मी में जब आपको कुछ ठंडा पीने का मन करे तो बाजार से लाया हुआ शीतल पेय पीने से बचें घर में ही देसी पेय बनाएं जो बनाने में आसान है और स्वादिष्ट भी और स्वास्थ्य वर्धक भी है। कई राजस्थानी और उत्तर भारतीय परिवारों में 'इमली का इमलाना' को आखा तीज/अक्षय तृतीया पर बनाया जाता है।

इमली का इमलाना को दूसरे नामों से भी पुकारते हैं जैसे –

- इमली का आमलाना
- इमली का पन्ना
- इमली का शर्बत

यह रेसिपी बहुत ही सरल और आसान है और कोई भी इसे झट से बना सकता है।

तैयारी का समय – १० मिनट, बनाने का समय – १० मिनट, कुल समय – २० मिनट

सामग्री – नींबू के आकार की इमली, ५ बड़े चम्मच चूर्ण गुड़, ४०० मिली पानी, १ / ४ चम्मच काला नमक, १/२ टीस्पून काली मिर्च पाउडर, १/८ टी स्पून इलायची पाउडर, १चम्मच भुना जीरा (जीरा) पाउडर, स्वादानुसार नमक, गार्निशिंग के लिए कुछ ताजा पुदीने के पत्ते गार्निशिंग के लिए २ टेबलस्पून नमकीन बूंदी

तरीका – इमली और गुड़ को १०० मिली पानी में उबालें।

ठंडा होने के बाद, इमली को मैश कर लें और उसमें से रस निचोड़ें और मिश्रण को छलनी से छान लें। बचा हुआ ३०० मिली पानी डालें, नमक, काला नमक, काली मिर्च पाउडर, इलायची पाउडर और भुना जीरा पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाएँ। रेफ्रिजरेटर में २ से ३ घंटे तक रखें।

परोसने का तरीका यदि आवश्यक हो तो बर्फ के टुकड़े डालकर ग्लास में इमली का इमला डालें और ताज़े पुदीने और नमकीन बूंदी से गार्निश करें।

संगरिया माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गणगौर उत्सव का आयोजन

संगरिया: स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गणगौर उत्सव का आयोजन वार्ड १८ स्थित महेश कुंज में किया गया।

कार्यक्रम में राधा कृष्ण भजन मंडली की मंजू तंवर व चंदा गहलोत, महिला मंडल की भगवती करवा, किरण सोमानी व सुमन सोमानी के नेतृत्व में महिलाओं द्वारा ईशर आए

गंवरल लाए, मैं खूब पूजी गणगौर..., ईशर बंगाल का गंवरा जापान की..., भाभी पूज ले गणगौर..., पूजो रे पूजारनियों... सहित अनेक गणगौर के गीतों से गौर ईशर का पूजन किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष सरोज राठी ने बताया कि होलिका

दहन के दूसरे दिन होलिका की राख से तैयार पिंडियां व ईशर गणगौर की प्रतीकात्मक मूर्ति को लेकर नवविवाहिताएं व अविवाहित युवतियां एक पखवाडे तक श्रृंगार करके लोकगीतों के साथ यह उत्सव मनाती हैं। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल सदस्यों द्वारा राजकुमारी करवा के नेतृत्व में दीप प्रज्ज्वलित करके व पूजा अर्चना करके की गई।

महिलाओं द्वारा राजस्थानी गीतों पर नृत्य किए गए।

युवा संगठन के कपिल करवा ने बताया कि इस अवसर पर पार्षद अनिता करवा, प्रेमलता पेड़ीवाल, बिंदु सोमानी, रेणू लखोटिया, सुनीता लखोटिया, सविता राठी, सरोज सोमानी, शारदा पेड़ीवाल, कांता लखोटिया, कांता सोमानी, ज्योति राठी, विम्पल गट्टाणी, कंचन सोमानी, पायल लखोटिया, निकिता गट्टाणी, प्रियंका करवा, कुसुम वर्मा, सरला गोयल, अनिता गर्ग, मीनाक्षी सिंगला, माधुरी तंवर, दिव्या गहलोत, मीनाक्षी शर्मा, सुनीता शर्मा आदि उपस्थित थे।

भारत को 'भारत' ही बोला जाएगा
यह है हमारा आव्हान
माँ लक्ष्मी आप पर अपनी
कृपा हमेशा बनाए रखें
भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार
अक्षय तृतीया पर्व पर शुभकामनाएं

Anil Machhar
Utsav Logistics Pvt. Ltd.
510, Janki Center,
Veera Desai Road, Andheri West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400053
Ph.: 022- 66713960/61 Fax : 022-66713962

गुजरात में दधिमथी नदी, दधीचि आश्रम, दधीचि मंदिर एवं पिपलोद गांव

कुछ समय पूर्व एक लेख में गुजरात मूल के दाधीच बंधुओं के निवास क्षेत्रों एवं उनके कार्यकलापों का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया गया था। दिनांक १९-०८-९८ श्रावण शुक्लाष्टमी के दिन लेखक सुरेश पलोड, राजेन्द्र राजकारी एवं श्रीकुमार मालुसरे के साथ पवित्र नदी दधिमथी एवं दधीचि आश्रम दाहोद के दर्शन के लिए निकल पड़े। प्रात:काल बहुत ही उत्साह एवं अधीरता लिए बड़ौदा से दाहोद १८० कि.मी. के लिये प्रस्थान किया। करीब दोपहर १२ बजे दाहोद पहुंच कर आश्रम के बारे में पूछताछ शुरु की, पता चला कि शहर के बाहर ही दूधेश्वर महादेव का मंदिर, पवित्र नदी दधिमथी के तट पर स्थित है और वहीं पर कभी परम पुनीत शिव आश्रम विद्यमान था। शहर से ५ कि.मी. दूर दोनों और खेतों की हरियाली और उसके ठीक बीचो-बीच दधिमथी नदी और उसके बायें तट पर दूधेश्वर महादेव मंदिर परिसर और उस परिसर में एक छत्री। जन श्रुतियों के आधार पर पता चला कि यहां बहुत समय पहले महर्षि दधीचि की मूर्ति थी। कालान्तर में बाढ़ की वजह से मूर्ति पानी में बह गई। तत्पश्चात वहां पर दधीचि ऋषि के परम भक्त ने महात्मा गांधी की मूर्ति स्थापित की। एक ने देव, मानव संस्कृति के लिए अस्थिदान किया तो दूसरे ने राष्ट्रहित में कार्य कर प्राण दे दिए। अब उस मां भारती के सपूत की प्रतिमा भी नहीं है। शेष है सिर्फ मूर्ति के पदचिन्ह, लगता है उचित सार-संभाल के अभाव में इतिहास के उन सुनहरे पन्नों को लापरवाही के तूफान ने उड़ा दिया। आज की नई पीढ़ी का परम कर्त्तव्य एवं फर्ज है कि वह उन पन्नों को सच्चे मन से ढूंढ कर दधीचि इतिहास की किताब में वापस जोड़े, ताकि आने वाले दधीचि वंशज मूल और विस्मृत परिवारों से अनभिज्ञ ना रहे।

दूधेश्वर महादेव मंदिर परिसर में चारों कोनों में चार शिव मंदिर हैं। मंदिर के पीछे के भाग में भगवान भूतनाथ का रमण केन्द्र शमशान है और पवित्र गंगा के समान पवित्र नदी का बहाव पश्चिम से पूर्व की तरफ है, कहते हैं पूर्व की ओर बहती गंगा पवित्र होती है। आगे यह डूंगरपुर गांव में (गुजरात का एक गांव) नदी के साथ संगम कर लेती है।

दूधेश्वर मंदिर के बाहर एक शिलालेख है जो वि.सं. १८०० का है। मराठा काल के छत्रपति महाराज शिवाजी के पौत्र राजर्षि महाराज के उमराव एवं तत्कालीन सेनापति द्वारा यहां जीर्णोद्धार करवाया गया था। पूजन अर्चन किया गया, आदि का उल्लेख उक्त शिलालेख में है। गर्भ गृह के मध्यभाग में महादेव का परम पवित्र शिवलिंग और सामने दिवार की बांयी तरफ भगवान दत्तात्रेय, मध्य में देवी पार्वती और दाहिनी और गणपति विराजमान है। मंदिर का शीर्ष गुंबद षटकोणीय आवृत्तियों से बना है। मंदिर के बाहर भी गणपति की बहुत पुरानी प्रतिमा स्थित है। मंदिर परिसर के एक कोने में एक काले पत्थर पर पद चिन्ह अंकित है जिसके चारों कोनों में क्रमशः शंख, चक्र, गदा, पदम एवं मध्य में सूर्य अंकित है। एक ट्रस्ट इस मंदिर की पूजा अर्चना आदि की व्यवस्था करता है। समयाभाव वश लेखक मुख्य ट्रस्टी से भेंट नहीं कर पाए।

शेष पृष्ठ ४६ पर...

चक्रतीर्थ नैमिषारण्य

हनुमानगढ़ जिला माहेश्वरी सभा की बैठक आयोजित

पीलीबंगा में बनेंगे ७ कमरे सामाजिक सहयोग से

पीलीबंगा में आयोजित जिला माहेश्वरी सभा की बैठक को सम्बोधित करते प्रदेशाध्यक्ष

पीलीबंगा: हनुमानगढ़ जिला माहेश्वरी सभा की बैठक ११ अप्रैल को पीलीबंगा के माहेश्वरी भवन में आयोजित की गई। बैठक के मुख्य वक्ता उत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के प्रदेशाध्यक्ष बाबू लाल मोहता ने कहा कि समाज का प्रत्येक युवा अच्छी शिक्षा ग्रहण करे, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए, परंतु उसके बाद समाज परिवार को छोड़कर नौकरी के लिए बाहर रहना उस शिक्षा का उद्देश्य नहीं है, प्रत्येक युवा को चाहिए की अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करे, परंतु कंफर्ट जोन में जीवन जीने के स्थान पर बाजार में आकर प्रतिस्पर्धा का सामना कर अपने व्यापार को आगे बढाएं। बैठक की शुरुआत भगवान महेश के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके व दिव्यांशी लखोटिया द्वारा महेश वंदना करके की गई। जिलाध्यक्ष रतनलाल लाहोटी व जिला सचिव राधेश्याम लखोटिया ने जिले में कोरोना काल के समय करवाए गए प्रकल्पों की जानकारी देते हुए जिले के इतिहास के बारे में बताया। कार्यक्रम को प्रदेश सचिव राकेश जाजू, जिला संरक्षक रामेश्वर लाल पेड़ीवाल, अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के सदस्य नौरंग लाल सोमानी, पूर्व प्रदेश संगठन मंत्री मदन गोपाल लड्ढा, माहेश्वरी महिला मंडल की जिला सचिव श्वेता नढाणी, पार्षद लखन करवा आदि ने सम्बोधित करते हुए समाज व संगठन का महत्व बताते हुए कहा कि इससे सम्पर्क बनने के साथ-साथ सांस्कृतिक विकास होता है व समाज के रीति रिवाज की जानकारी भी होती है। कार्यक्रम का संचालन कपिल करवा व मनोज कोठारी ने किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के सदस्य शिवभगवान ढुढाणी, स्थानीय संरक्षक शंकरलाल सोमानी, कमलेश पेड़ीवाल व चेतनलाल लखोटिया, प्रदेश उपाध्यक्ष श्याम सुंदर पेड़ीवाल, प्रदेश सहसचिव राजेंद्र कुमार थिरानी, प्रदेश कोषाध्यक्ष महेश दम्माणी, प्रदेश संगठन मंत्री बलदेव मूंधड़ा, युवा संगठन के जिलाध्यक्ष अंकूर लखोटिया, महिला मंडल की जिलाध्यक्ष प्रियंका बजाज रहे। कार्यक्रम में नवनिर्वाचित पार्षद संदीप बिहाणी रावतसर, सुशीला करवा, लखन करवा व अनिता करवा संगरिया, लगातार पांच वर्ष से नि:शुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा शिविर का आयोजन करने के लिए विजय कुमार थिरानी नोहर का शॉल ओढाकर व स्मृति चिन्ह प्रदान कर अभिनंदन किया गया। कोरोना काल में जिला सभा के माध्यम से समाज के जरुरतमंद लोगों के सहयोग के लिए तीन दर्जन परिवारों के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया। पीलीबंगा माहेश्वरी समाज सेवा समिति के अध्यक्ष उमेश सोनी व सचिव पवन झंवर ने आए हुए अतिथियों का धन्यवाद करते हुए बताया कि भवन में प्रथम मंजिल पर करीब बीस लाख रुपए की लागत से सात कमरों का निर्माण प्रस्तावित है जिस पर सात परिवारों ने सहमति प्रदान की है व निर्माण कार्य २४ अप्रेल से शुरू किया जाएगा। कार्यक्रम में नोहर से जिला उपाध्यक्ष ओमप्रकाश कलाणी व अध्यक्ष द्वारका प्रसाद लखोटिया, जयकिशन गिलड़ा, रावतसर अध्यक्ष लक्ष्मीकांत सोनी व विमल चांडक, हनुमानगढ़ जंक्शन के अध्यक्ष नारायण राठी व कमल सोमानी, संगरिया से प्रदेश प्रतिनिधि कृष्ण करवा, जिला सचिव पवन राठी, पूर्व अध्यक्ष देवकिशन लखोटिया, टिब्बी के गौरीशंकर कलाणी, भादरा के बजरंग राठी सहित बड़ी संख्या में समाज बंधु उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में पीलीबंगा से बाबू लाल पेड़ीवाल, जेठमल राठी, दीवान चंद होलानी, जगदीश करवा, महावीर लखोटिया, महेश पेड़ीवाल, शंकर पेड़ीवाल, अरुण

पीलीबंगा में आयोजित जिला माहेश्वरी सभा की बैठक में उपस्थित

राठी, भुवनेश बिहाणी, संजयकांत सोमानी, कन्हैया लखोटिया, प्रशांत कोठारी, मनोज सोनी, मुकेश कोठारी, रोशन मूंधड़ा, रवि होलानी, सचिन चांडक, आशीष करवा, प्रदीप सोमानी, मधु लखोटिया, निर्मला चांडक, नेहा चांडक, रश्मि करवा, नीतू सोमानी आदि ने व्यवस्था संभाली।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को 'भारत' ही बोला जाएगा यह है हमारा आव्हान

भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार
अक्षय तृतीया पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Gouri Shankar Rathi
Saroj Rathi
Amit Kumar Rathi

AMIT TREXIM PRIVATE LIMITED

2A, Suvarnalok, 34, Malony Road, T. Nagar,
Chennai,Tamilnadu, Bharat- 600017.
Tel: 044-24337156 Call: +91 9620232579
Email: amitkumarr@gmail.com

Farm House & Residence: "Brindavan",
3/285, V.V. Subramaniam Salai,
Nainar Kuppam, Uthandi, Chennai, Tamilnadu, Bharat - 600119
Tel:044-24530755 Call: +91 9840009451, 9962235571
Email: gourishankarrathi@gmail.com

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

वर्धन जैसे सेवा कार्य करने की जरूरत-राज के. पुरोहित

पूर्व महाराष्ट्र मंत्री

मुंबई: श्री भीनमाल जैन संघ कोविड सेंटर का उदघाटन करते हुए उपरोक्त उद्गार पूर्व मंत्री राज के.पुरोहित ने व्यक्त किये।

भीनमाल जैन संघ और समस्त जैन संघ मुम्बई के द्वारा हिंदू जिमखाना, मरीन लाइन्स पर कोविड सेन्टर का उदघाटन दिनांक २५ अप्रैल, २०२१ को प्रातः १०.३० बजे खासदार अरविंद सावंत, आमदार राहुल नार्वेकर, आमदार अमीन पटेल, भाजपा वरिष्ठ नेता राज पुरोहित, नगरसेविका रीटा मकवाना, नगरसेवक आकाश पुरोहित, सुप्रसिद्ध समाजसेवी मुकेश वर्धन एवं उनके साथीगण, सुप्रसिद्ध डॉ. गौरव गुप्ता, डॉ. सुशील जैन, डॉ. ललित चौधरी के साथ ही भीनमाल जैन संघ के भंवर कोठारी एवं सेठ मोतिशा जैन टेम्पल भायखला के ट्रस्टी घेवरचंद जैन, नवजीवन के पुष्पकांत भाई, फोर्ट जैन संघ के विपुल भाई, नीता बेन एवं महेन्द्र कानुंगो, विकास जैन, पोपटलाल जैन, जगदीश भाई क्षेत्रपाल भवन के ट्रस्टी पन्नालालजा एवं बाबुलालजी संघवी नैनावा, अमृत भाई, रमेश जैन, राजू संघवी, मंगल सेठ, ललित चोवटिया की उपस्थिति में हिन्दू जिमखाना मरीन लाइन्स मुम्बई पर १०० बेड के कोविड सेन्टर का उदघाटन सम्पन्न हुआ। सेन्टर में ३० ऑक्सीजन बेड एवं ७० सामान्य बेड लगाये जाएंगे। यह कोविड सेन्टर १ मई से अपनी सेवा प्रारम्भ करेगा। श्री मुकेश वर्धन ने मुंबई मनपा आयुक्त श्री चहल एवं सहायक आयुक्त श्री चक्रपाणि अले सहित सभी सहयोगियों का आभार जताते हुए सेंटर की सुविधाओं के बारे में बताया और कहा कि अगले कुछ ही दिनों में अन्य ३ स्थान पर भी ऐसे ही कोविड सेन्टर प्रारम्भ किये जायेंगे। सभी वक्ताओं ने अपने वक्तव्य में महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष में प्रारम्भ हो रहे इस कोविड सेन्टर को स्थापित करने के लिए मुकेश वर्धन एवं उनके सेवा भावी साथियों के साथ जैन समाज के दान दाताओं का अंतर्मन से अभिवादन किया। अरविंद सावंत ने कहा कि भीनमाल जैन संघ ने कोविड में बहुत ही अच्छा काम किया है, इस हेतु मुकेश वर्धन की जितनी तारीफ की जाए कम है।

विधायक अमीन पटेल ने अपने भाषण में कहा कि जैन समाज हमेशा सेवा में आगे रहता है, ऐसे हालात में भी मुकेश वर्धन खतरा उठाकर ऐसे कार्य करते हैं उसका कोई मुकाबला ही नही हैं।

विधायक राहुल नार्वेकर ने कहा कि भीनमाल जैन संघ और समस्त जैन संघ ने जो कार्य किया है उससे समाज के सभी वर्गो को लाभ होगा। मुकेश वर्धन जिस तरह से कार्य करते हैं वो देवीय शक्ति के बिना असंभव है। पूर्व मंत्री राज पुरोहित ने कहा कि आज महावीर जन्म कल्याणक के पवित्र पर दिन मुकेश वर्धन और उसके साथियों ने जो कार्य किया हैं उसकी बहुत जरूरत हैं। मुकेश वर्धन पिछले १२ महीने से दिन रात जिस ढंग से हजारों लोगों की सेवा कर रहे हैं ऐसे निस्वार्थी व्यक्ति बहुत कम होते हैं। भीनमाल जैन संघ और समस्त मुंबई जैन संघ ऐसे कार्यो में हमेशा आगे रहती है।

जय ब्रह्मजी की, जय खेतेश्वरजी की

राजपुरोहित समाज के आराध्य गुरूदेव, मानवता के पथ प्रदर्शक, परम पूजनीय प्रातः स्मरणीय ब्रह्मर्षि ब्रह्मसावित्री सिद्ध पीठ के संस्थापक परम पूज्य गुरूदेव श्री श्री १००८ श्री खेतेश्वर भगवान के १०९वें जन्म कल्याण महोत्सव पर गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि-कोटि नमन करते हुए पूर्व केबिनेट मंत्री राज के. पुरोहित, नगर सेवक आकाश पुरोहित, श्री खेतसिंहजी मवड़ी, जगदीशजी आदर्श होटेल, जसवंतसिंह मोकलसर, तुलसीभाई कैलाशनगर, सुरेश नारादरा, राहुलजी जेरण, मंगल मुड़तरासिली व समाज बंधुओं ने संत श्री खेतेश्वर चौक कालबादेवी मुंबई में माल्यार्पण कर विश्व के मंगल की कामना की...

नमस्कार! मेरा राजस्थान

महिपाल सिंह

पूर्व जिला उपाध्यक्ष भाजपा
महनसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२९३८८७९६

महिपाल सिंह जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' का इतिहास बहुत ही गौरवशाली इतिहास रहा है। यहां की सामाजिक स्थिति भी उत्तम है। यहां कई ऐतिहासिक स्थान है जो विश्व प्रसिद्ध हैं, जिनमें से सोने की दुकान बहुत ही प्रसिद्ध है, इसकी छत पर रामायण, कृष्ण लीला, विष्णु अवतार आदि का चित्रांकन सोने से किया गया है। साथ ही ठाकुर जी के मंदिर में राम परिवार और शिव परिवार की बड़ी-बड़ी प्रतिमाएं हैं। यहां का मस्करा भवन भी प्रसिद्ध है, साथ ही यहां का महनसर गढ़ विश्व प्रसिद्ध है, जहां पर्यटन के लिए दूर-दूर से सैलानी आते हैं। यहां बालाजी का मंदिर जिसके चारों तरफ छतरियां बनी हैं। गोगाजी की मेडी लोगों की आस्था का मुख्य केंद्र है। यहां कुछ वर्ष पूर्व ही गौशाला का निर्माण किया गया है, जिसके संस्थापक मुरारी लाल जी तिवारी हैं। 'महनसर' के विकास में सांसद नरेंद्र कुमार जी का विशेष योगदान रहा है। वे भाजपा के प्रधान रहे हैं और और मंडावा उनका विधानसभा क्षेत्र रहा है। यहां के विद्यालयों, अस्पताल, सड़क के निर्माण में उनके कार्यकाल में बहुत अधिक कार्य हुए हैं। वर्तमान में यहां की सरपंच विमल कंवरजी हैं। 'महनसर' में सभी समाज व संप्रदाय के लोग आपसी प्रेम भाव के साथ रहते हैं, इन सबके अलावा अन्य कई महत्वपूर्ण क्षेत्र है हमारे 'महनसर' में...

महिपाल सिंह जी का जन्म २० मार्च १९६६ को 'महनसर' में हुआ। आपकी संपूर्ण शिक्षा 'महनसर' में ही संपन्न हुई। आपका परिवार सदैव से राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय रहा है। आपके पिताजी 'महनसर' के सरपंच रहे हैं। आपके बड़े भाई साहब व भाभीसा सरपंच रहे हैं। आप भी राजनीति में सक्रिय हैं। २००३ में झुंझुनू जिला भाजपा युवा मोर्चा के प्रवक्ता रहे तथा बीकानेर में भाजपा द्वारा किए गए सत्याग्रह आंदोलन में गिरफ्तारी दी। २००६ में भाजपा प्रदेश युवा मोर्चा के सदस्य रहे। २००८ में मंडावा में विधानसभा सदस्यता अभियान के प्रभारी रहे। २००९ में भाजपा जिला कार्यसमिति झुंझुनू के सदस्य रहे। २०१७ में मंडावा विधानसभा क्षेत्र के बूथ लेवल एजेंट रहे। २०१६ से २०१९ तक झुंझुनू जिला भाजपा के उपाध्यक्ष रहे, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। राजस्थान राजपूत सभा भवन जयपुर के सदस्य, शार्दुल एजुकेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी, श्री गोपाल गौशाला महनसर के संरक्षक, झुंझुनू जिला राइफल एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष, श्री धन्वंतरि सेवा समिति जयपुर के सदस्य के रूप में कार्यरत हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए', विषय पर आपका कहना है कि हमारे देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत', 'भारत' ही हमारे देश का वास्तविक नाम है।

विनोद कुमार पोद्दार

व्यवसाई व समाजसेवी
महनसर निवासी-काठमांडू (नेपाल) प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९७७९८५१०८१५६९

विनोद जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि मेरा पूरा बचपन 'महनसर' में ही बीता है। पहले व आज के 'महनसर' में काफी विकास हुआ है पर सामाजिक स्तर पर लोगों में प्रेम भावना की कमी आ गई है। आज यहां की राजनीति के कारण जाति भेदभाव उत्पन्न हो गए हैं। यहां हिंदू-मुस्लिम जाति का असर दिखने लगा है। पहले होली, मोहरम जैसे त्योहारों में व अन्य त्योहारों में दोनो समाज के लोग मिलकर भूमिका निभाते थे, इसके कारण उत्सव में और भी रंग भर जाता था, पर आज यह सब नदारद हो चुका है। आर्थिक दृष्टि से 'महनसर' में काफी उन्नति हुई है। आज यहां के निवासी देश के विभिन्न भागों में व विदेशों में भी प्रवासित हैं, पर अपनी मातृभूमि व जन्मभूमि से जुड़े हुए हैं और इसके विकास के लिए में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। शिक्षा की दृष्टि से भी विकास हुआ है, पर जो शिक्षा का स्तर होना चाहिए वह समयानुसार नहीं हुआ। हमारे समय के शिक्षित व्यक्ति उँचे पदों पर अपनी विशेष पहचान बनाए हुए हैं। पर्यटन की दृष्टि से देखा जाए तो यहां हमारे परिवार के सबसे पहले व्यक्ति आज्ञाराम जी पोद्दार ढाई सौ वर्ष पूर्व आए थे, उन्होंने यहां के सबसे प्राचीन रघुनाथ जी का मंदिर का निर्माण कराया। इसके बाद पौद्दार परिवार की छतरी, सोने की दुकान, ५०० बीघा जमीन में ग्राम वासियों के लिए जोहड़ बनवाया। यहां की सोने की दुकान विश्व प्रसिद्ध है, इसके तीन तरफ की छतों यानी पहली पर कृष्ण लीला, दूसरी छत में रामलीला व बीच की छत में अवतारों का चित्रांकन किया गया है और वह भी स्वर्ण के झोल से, इसके अलावा यहां और भी कई ग्राम वासियों की हवेलियां है व मंदिर हैं जो अपने विशेष आकर्षण को लिए हुए है। भौगोलिक स्थिति भी यहां की बहुत ही उत्तम है। यह शांत व शुद्ध वातावरण वाला क्षेत्र है, कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है हमारा 'महनसर'...

१३ मई १९५४ को 'महनसर' में जन्में विनोद जी का संपूर्ण बाल्यकाल यहां ही बीता। आपकी शिक्षा 'महनसर' में ही संपन्न हुई। तत्पश्चात आपने मुंबई में कुछ वर्षों तक टेक्सटाइल का कारोबार किया, इसके पश्चात आपका १९८२ में काठमांडू (नेपाल) जाना हुआ। यहां टेक्सटाइल के कारोबार के साथ-साथ कैटरिंग के कारोबार से जुड़े। आज काठमांडू में आप प्रसिद्ध व्यवसाई के साथ-साथ समाजसेवी के रूप में भी जाने जाते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नेपाल के संस्थापक व संचालक रहे हैं, साथ ही नेपाल में एकल विद्यालय का पूरा दायित्व आप संभाल रहे हैं, जिसमें आप अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। आज पूरे नेपाल में २२५० एकल विद्यालय हैं, साथ ही आप नेपाल में स्थित कई मारवाड़ी संस्था में सेवारत हैं, आपके परिवार द्वारा चलाया जा रहा पोद्दार ट्रस्ट में भी आप सक्रिय हैं। कई अन्य सामाजिक संस्थाओं में अपनी व्यक्तिगत भूमिका निभा रहे हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए', विषय पर आपका कहना है कि इस बात का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं चाहे कोई भी भाषा हो, हमारे देश का नाम एक ही होना चाहिए 'भारत' जो कि प्राचीन व उत्तम नाम है, जो हमारी ऐतिहासिकता के साथ हमारी संपन्नता को दर्शाता है। भारत का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

प्रवीण जैन श्रीमाल

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९०२२०८९६४६

प्रवीण जी अपनी पैतृकभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक छोटा सा गांव है, पर इसका गौरवशाली इतिहास रहा है, पर आज इसकी स्थित कुछ कमजोर है। इसका मुख्य कारण यह कि है इसकी भौगोलिक स्थिति। 'महनसर' आसपास के क्षेत्र रामगढ़, चुरु, बिसाऊ का विकास बहुत तेजी से हुआ, जिस कारण 'महनसर' की जो उन्नति होनी चाहिए थी, वह नहीं हो पाई। आज यहां की अधिकतर आबादी अन्य शहरों में जाकर बस गयी है, इसका मुख्य कारण है यहां रोजगार व पानी की समस्या। 'महनसर' एक रेलवे स्टेशन भी है। पर्यटन की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

यहां सोने-चांदी की दुकान, मस्कारों की हवेली, बीना बीम का कमरा, महनसर गढ़ जो ठाकुरों का हेरिटेज होटल है, इसके अलावा अन्य कई हवेलियां हैं, जिसकी सुंदरता देखते ही बनती है। एक जमाने में यहां के सौंफ की दारू बहुत प्रसिद्ध थी, जिसके बारे में कहा जाता है कि उसकी एक बूंद एक कुएं में डाल दी जाए तो पूरा कुआं महक उठता था। इन सब विशेषताओं के बावजूद 'महनसर' का विकास जो होना था वह नहीं हो पाया, क्योंकि यहां अत्याधुनिक सुविधाओं की कमी है, जो पर्यटक यहां आते भी हैं वे यहां नहीं रुक कर, अन्य क्षेत्रों में ठहरते हैं। महनसर की सामाजिक स्थिति बहुत ही अच्छी है यहां अग्रवाल, ब्राह्मण, राजपूत, जैन सभी परिवार के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। पर अधिकतर परिवार के सदस्य बाहर रहने लगे हैं। यहां अब मुसलमानों की आबादी अधिक हो रही है। पानी की समस्या होने से यहां खेती भी कम होती है। कई मकान व हवेली दर्शनीय है। 'महनसर' एक सुंदर कस्बा है जहां हर कोई एक बार अवश्य आना चाहेगा।

६५ वर्षीय प्रवीण जी मूलतः 'महनसर' के निवासी हैं। आपका जन्म स्थान कोलकाता है। आपकी संपूर्ण शिक्षा भी कोलकाता में संपन्न हुई। १९७७ से आप मुंबई के प्रवासी है। यहां डायमंड ज्वेलरी के कारोबार से जुड़े हैं। वर्तमान में आप सेवानिवृत्त हैं। आप सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। भारत को 'भारत' ही बोला जाना चाहिए, विषय पर आपका पूर्ण समर्थन है। आपका कहना है हमारे देश का एक ही नाम होना चाहिए और वह हो 'भारत' जो हमारे देश का मूल नाम है।

प्रवीण पोद्दार

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२२०९४७१०

प्रवीण जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि यह एक सुंदर छोटा सा ऐतिहासिक गांव है। यहां की आर्थिक स्थिति बहुत ही उत्तम है। यह सेठों का गांव के नाम से जाना जाता है, यहां के जितने भी सेठ हुए हैं, सभी देश के विभिन्न भागों में बसे हुए हैं, फिर भी उनका अपने गांव से लगाव आज भी बना हुआ है। सभी का गांव में हमेशा आना-जाना लगा रहता है। गांव की समृद्धता में उनका विशेष योगदान रहा है। यहां सभी जाति धर्म के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। यहां हिंदू और मुस्लिम दोनों ही धर्मों के लोग आपको मिल जाएंगे, सभी संपन्न और समृद्ध हैं। यहां के मुस्लिम परिवार के अधिकतर लोग अरब देशों में बसे हुए हैं अतः उनकी भी आर्थिक स्थिति उत्तम है। भौगोलिक दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण स्थान है। यह तीन जिलों झुंझुनू, सीकर, चूरू के बीच में बसा हुआ है। 'महनसर' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां पोद्दार परिवार द्वारा बनाया गया सोने-चांदी की दुकान विश्व प्रसिद्ध है, जिसकी विशेषता यह है कि यहां जो चित्रकारी की गई है वह सोने की स्याही और प्राकृतिक रंगों से की गई है जो आज भी सुंदरता को लिए हुए हैं, जबकि इसके निर्माण को लगभग १८० साल हो चुके हैं। यहां तोलाराम जी का कमरा है जो एक महफिल हाल है इसको इस तरह बनाया गया है कि ऊपर से महिलाएं महफिल का आनंद उठा सकती हैं जबकि नीचे से पुरुष ऊपर की तरफ नहीं देख सकते, यह अनोखा स्थापत्य है। यहां का मंदिर, रघुनाथ जी का बड़ा मंदिर के नाम से जाना जाता है, जहां कई दुर्लभ मूर्तियां है, जिनमें राम जी का परिवार जिसमें राम जी अपने भाइयों व सीता जी के साथ हैं, साथ ही दूसरा प्रमुख मंदिर यहां शिव परिवार का है। शिव परिवार के जितने सदस्य हैं सभी के वाहन के साथ यहां मूर्तियां स्थापित हैं, जो अपने आप में एक अलग ही नजारा प्रस्तुत करते हैं। यहां पोद्दार की छतरियां, ठाकुरों की छतरियां, जोड़े वाले बालाजी हनुमान मंदिर अन्य कई महत्वपूर्ण स्थान है, जो 'महनसर' की शोभा को बढाते हैं।

प्रवीण जी मूलतः 'महनसर' के निवासी हैं। आपका जन्म व मैट्रिक तक की शिक्षा 'महनसर' में ही संपन्न हुई, तत्पश्चात कॉलेज की शिक्षा आपने मुंबई से ग्रहण की। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात १०-१२ वर्षों तक आप कारोबार के सिलसिले में नेपाल में बसे। १९९५ से आप मुंबई में निवासित हैं और यहां मेटल के कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही यहां कई सामाजिक संस्थाओं में भी जुड़े हैं। अग्रवाल सेवा संस्था के उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं साथ ही 'महनसर' में स्थित गौशाला व अपने परिवार की संस्था शिव बक्स राय पोद्दार चैरिटेबल ट्रस्ट से जुड़े हुए हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाना चाहिए विषय पर आपका कहना है कि हमारे देश का एक ही नाम हो, क्योंकि नाम ही किसी की पहचान होती है। 'भारत' शब्द में हमारे देश का गौरव और इतिहास है, अतः हमारे देश को सिर्फ एक ही नाम से संबोधित किया जाना चाहिए वह हो 'भारत'।

भारत को 'भारत' ही बोला जाना चाहिए

- बिजय कुमार जैन, वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक

रघुनाथ प्रसाद महनसरिया

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-काठमांडू (नेपाल) प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ००९७७९८५१०३०३२१

रघुनाथ जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक सुंदर व बहुत ही प्यारा गांव है। यह एक समय में राजपूत राजाओं की भूमि कही जाती थी, पहले व आजकल के 'महनसर' में बहुत परिवर्तन आया है। पहले पानी, सड़क व अन्य सुविधाओं का अभाव था पर आज 'महनसर' में शहर की सारी सुविधाएं आपको मिल जाएगी, यहां पैदावार भी अच्छी होने लगी है। बाजार बढ़ गए हैं। यहां की आर्थिक स्थिति के बारे में यह कहना चाहूंगा कि यहां के व्यापारी परिवार के लोग अधिकतर देश-विदेश में जाकर बस गए हैं और वहां से कमा कर वे गांव में आकर रहते हैं, जिस कारण यहां की आर्थिक स्थिति अच्छी है। पर्यटन की दृष्टि से भी यहां आने वाले देशी और विदेशी सैलानी 'महनसर' गढ़ में रहते हैं जो एक हेरिटेज होटल है, इस कारण भी यहां आमदनी अच्छी होती है। 'महनसर' एक धार्मिक स्थल भी कहा जा सकता है क्योंकि यहां आपको अनगिनत मंदिर मिल जाएंगे। यहां हनुमान मंदिर, शंकर मंदिर, जोड़े वाले बालाजी का मंदिर आदि कई अन्य मंदिर है जो यहां के लोगों की धार्मिकता को दर्शाता है। हमारे परिवार द्वारा भी 'महनसर' में समय-समय पर भगवत गीता, रामायण जैसे अन्य धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। 'महनसर' में हमारे परिवार को दिल्लीवाला परिवार के नाम से संबोधित किया जाता है क्योंकि हमारे पूर्वज दिल्ली जाकर बसे थे। 'महनसर' गांव से ही नजदीक 'बैरास' है जहां हमारे परिवार द्वारा हनुमान जी का बहुत ही सुंदर मंदिर बनाया गया है। काठमांडू में रहते हुए भी यादों में 'महनसर' बसा हुआ है अतः जब भी समय मिलता है तो मैं 'महनसर' अवश्य जाता हूं। 'महनसर' कई विशेषताओं से भरा हुआ है।

रघुनाथ जी का जन्म १९४४ को 'महनसर' में ही संपन्न हुआ, तत्पश्चात आपकी संपूर्ण शिक्षा बर्मा स्थित रंगून में संपन्न हुई जहां आपके दादाजी-पिताजी बसे हुए थे, पर द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान आपका परिवार कोलकाता चला आया, उस समय आप कला संकाय से अंतिम वर्ष में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। तत्पश्चात आप १९६९ में काठमांडू (नेपाल) व्यवसाय के उद्देश्य से आकर बस गए। यहां आप इंपोर्ट-एक्सपोर्ट, ज्वेलरी व अन्य कारोबार से जुड़े हैं। वर्तमान में पूर्णत: सेवानिवृत्त हैं। आपके परिवार में आपकी पत्नी, एक पुत्र-पुत्रवधू, पोती-पोतियों से भरा-पूरा परिवार है। आप सामाजिक कार्यों में भी अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। आपकी धार्मिक कार्यों में विशेष रूचि है, अतः समय-समय पर धार्मिक कार्यों का आयोजन भी करते रहते हैं तथा सामाजिक कार्यों में जहां संभव हो अपनी भूमिका अवश्य निभाते हैं। भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आपका कहना है कि हम भारतवर्ष के निवासी हैं, हमारे देश का मूल नाम 'भारत' ही है, अतः हमारे देश का चाहे कोई भी भाषा में हो, एक ही नाम होना चाहिए 'भारत'।

सीए अभिषेक तिवारी

चार्टर्ड अकाउंटेंट व समाजसेवी
महनसर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९०२९३२६६५१

अभिषेक जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' का इतिहास गौरवशाली रहा है। यहां के निवासी आज देश के किसी भी क्षेत्र में बसे हों पर आज भी अपने 'महनसर' से जुड़े हुए हैं और अपने संस्कारों को भी संजोए हुए हैं। सभी यथासंभव प्रयास करते हैं कि होली-दिवाली के अवसर पर 'महनसर' अवश्य जाएं। 'महनसर' पर्यटन के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है। यहां के सोने की दुकान ऐतिहासिक व चर्चित है, इसके अलावा यहां गोगाजी की मेडी, जोड़ेवाले बालाजी मंदिर व अन्य कई प्रमुख स्थल हैं। सामाजिक स्थिति बहुत ही अच्छी है। यहां सभी धर्म और समाज के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। यहां सभी समाज व धर्म के लोग निवासित हैं, सभी का आपस में मेल-मिलाप बहुत ही उत्तम है। यहां लोगों की आर्थिक स्थिति सामान्य है। यहां के बाजरे की रोटी और ग्वार की सब्जी विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यहां आने वाले अतिथियों को पेड़े व भुजिया का नाश्ता कराया जाता है जो कि विशेष होता है। गांव में पानी की समस्या के कारण लोगों का यहां से पलायन हुआ है। आज गांव के कई घर खाली हैं, इन सबके बावजूद यहां का वातावरण व प्रकृति बहुत ही सुंदर व रमणीय है जहां हमेशा आने का मन करता है, ऐसी कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है हमारा 'महनसर'।

अभिषेक जी मूलत: 'महनसर' के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'महनसर' में ही संपन्न हुयी। तत्पश्चात आपने सीए की शिक्षा मुंबई से ग्रहण की। वर्तमान में मुंबई में सी. ए. की प्रैक्टिस कर रहे हैं। इसके अलावा आपने बी.कॉम., Forensic Auditor Valuation (IBBI) & Concurrent Auditor की शिक्षा ली है। आपका पूरा बचपन संघर्षमय रहा। मुम्बई के भायंदर स्थित सी.ए. इंस्टिट्यूट के चेयरमैन निर्वाचित हुए, जिसमें ४००० से ज्यादा सी.ए. और लगभग २०,००० सी.ए. विद्यार्थी हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए, विषय पर आपका पूर्ण समर्थन है। आपका कहना है कि हमारी अनेकता में एकता का प्रतिनिधित्व करता है 'भारत'। हमारे देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत'।

समस्त राजस्थानी समाज की एकमात्र पत्रिका 'मेरा राजस्थान' के सभी पाठकों को विश्वनाथ भरतिया परिवार की ओर से शुभकामनाएं

बुद्ध करण वर्मा

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८१९४२१८१३

बुद्ध करण जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक छोटा कस्बा है। पूर्व में यह समृद्ध व संपन्न गांव रहा है, क्योंकि यह राजपूतों और सेठों की भूमि कई जाती थी। 'महनसर' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह तीन जिलों झुंझुनूं, सीकर, चूरू के मध्य स्थित है जिस कारण समय-समय पर जिलों को मिलने वाला लाभ इस गांव को भी मिलता रहा है। हमारे 'महनसर' में एक कहावत है 'क्या फूल कर महनसर को मान दे रहे हो'। 'महनसर' का बहुत मान सम्मान रहा है। महनसर गढ़ अपने अद्भुत और विशालता को लिए हुए आज भी खड़ा है। तीनों जिलों के हेड क्वार्टर से इस गढ़ को देखा जा सकता है, इसकी ऊंचाई बहुत ही अधिक है। पहले महनसर बाजार में बहुत रौनक होती थी। आसपास के लोग अपनी वस्तुओं व अनाज का वितरण करने हेतु 'महनसर' आते थे, पर आज यह सब समाप्त हो चुका है। 'महनसर' के अधिकतम निवासी देश के अन्य भागों में बस गए हैं। पर्यटन की दृष्टि से सर्वोत्तम है। यहां कई हवेलियां हैं। सोने चांदी की दुकान, तोलाराम जी मस्करा की हवेली, यहां का 'बड़ा मंदिर', जहां सभी देवताओं की अद्भुत व प्राचीन मूर्तियां है क्योंकि यह सबसे पुराना मंदिर है, इसके अतिरिक्त अन्य कई विशेषताओं से भरा है हमारा 'महनसर'...

बुद्ध करण जी का जन्म १४ अक्टूबर १९४७ को 'महनसर' में ही संपन्न हुआ। आपकी संपूर्ण शिक्षा भी 'महनसर' में ही हुई, तत्पश्चात कारोबार हेतु आपका मुंबई आना हुआ और यहां इमिटेशन ज्वेलरी के कारोबार से जुड़े हैं। वर्तमान में आप कई सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय हैं। मुंबई स्थित सैनी प्रगति मंडल के चेयरमैन पद पर कार्यरत हैं। 'महनसर' स्थित गोगा जी मेढी समिति में और मुक्तिधाम में भी कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सेवारत हैं। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। भारत को 'भारत' ही बोला जाए, विषय का पूर्ण समर्थन करते हैं और कहते हैं कि हमारे देश का एक ही नाम होना चाहिए वह हो 'भारत', हम अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग नाम से क्यों संबोधित करें?

कुलदीप पोद्दार

कोषाध्यक्ष शिव बक्श राय पोद्दार ट्रस्ट
महनसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९९२८९१३४५६

कुलदीप जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' का भौगोलिक दृष्टिकोण बहुत ही उत्तम है। यह झुंझुनू से मात्र ४० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। चूरू जंक्शन से मात्र १५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और बिसाऊ से ५ किलोमीटर की दूरी पर, यह ३ जिलों के मध्य स्थित है, अतः यहां जिलों को दी जाने वाली सुविधा आसानी से मिल जाती है। यहां अस्पताल, विद्यालय के लिए आसानी से इन जिलों में जाया जा सकता है। 'महनसर' में सरकारी डॉक्टर भी बैठते हैं। शिक्षा की स्थिति भी यहां उत्तम हैं। यहां बारहवीं तक के कई विद्यालय हैं। उच्च शिक्षा व स्नातक की शिक्षा के लिए रामगढ़, जो मात्र ६ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जाना होता है। यहां की सामाजिक स्थिति अच्छी है। यहां सभी समाज व धर्म के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। आर्थिक दृष्टि से यहां की स्थिति उत्तम है। यहां अधिकतर आय विदेशियों से होती है। यहां के अधिकतर लोग खेती पर निर्भर हैं व कुछ लोग सरकारी नौकरियों में हैं। पर्यटन की दृष्टि से भी यह स्थान बहुत ही उत्तम है, यहां पोद्दार परिवार द्वारा रघुनाथ जी का मंदिर, सोने की दुकान, शिवालय, छतरी, जोड़े वाले बालाजी का मंदिर बनवाया गया है। जोड़े वाले बालाजी के पास चार पांच बीघा जमीन पर पोद्दार तालाब, गौ घाट बनाया गया है, जिसे पक्का जोड़ा कहते हैं, इसकी बनावट बहुत ही उत्तम है, इस मंदिर के आसपास यहां के निवासीयों द्वारा कई पेड़-पौधे लगाये गये हैं, इसके अलावा तोलाराम जी का कमरा, महनसर गढ़, नोपानी हवेली आदि प्रमुख पर्यटन स्थल हैं, ऐसी ही अन्य कई विशेषताओं को लिए हुए है हमारा 'महनसर'...

कुलदीप जी मुलतः 'महनसर' के निवासी हैं। आपका जन्म यहीं संपन्न हुआ, यहां आप किराना के कारोबार से जुड़े हुए हैं व कई सामाजिक संस्था में सेवारत हैं। शिक्षा ट्रस्ट में कोषाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय का पूर्ण समर्थन करते हैं और आपका कहना है कि हम 'भारत' माता की जय कहते हैं ना कि इंडिया की जय, अतः हमारे देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत'।

अरुण पोद्दार

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-जयपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२९०५३१३३

अरुण जी अपनी पैतृक भूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक ऐतिहासिक गांव हैं। हमारी पैतृक भूमि होने के कारण आज भी हमारा 'महनसर' से बहुत ही लगाव है। यहां हमारे पोद्दार परिवार द्वारा सोने की दुकान, छतरी, जोड़े वाले बालाजी का मंदिर आदि स्थापत्य का निर्माण किया गया है, जो पोद्दार परिवार की विशेषता है। 'महनसर' में कई पर्यटन स्थल हैं जिनमें महनसर गढ भी प्रमुख है। आज यह एक हेरिटेज होटल के रूप में जाना जाता है। पहले से आज के 'महनसर' की स्थिति बहुत ही अच्छी हो गई है। आज हमारे पोद्दार परिवार के लोग देश के विभिन्न भागों में बसे हुए हैं, जो समय-समय पर अपनी पैतृक भूमि अवश्य आते हैं और यहां कुछ दिन व्यतीत करते हैं। यहां का वातावरण हमेशा मनोरम लगता है, ऐसी ही अन्य कई विशेषताओं से भरा है हमारा 'महनसर'...

अरुण जी का परिवार मूलतः 'महनसर' का ही निवासी है। यहां से आपके पिताजी चित्तौड़गढ़ के भूपालसागर में आजीविका हेतु बसे। आपका जन्म भूपालसागर का है और आपकी संपूर्ण शिक्षा पटना में संपन्न हुई। कई वर्षों से आप जयपुर में बसे हुए है और यहां रिटेल शोरूम के कारोबार से जुड़े हुए हैं। आपके पुत्र नौकरी में सेवारत हैं। आप जयपुर स्थित अग्रवाल सेवा समिति से जुड़े हुए हैं। झुंझुनू स्थित राणी सती दादी मंदिर से भी जुड़े हैं। जयपुर स्थित विभिन्न व्यापारिक संस्थाओं में भी सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए', विषय पर आपका पूर्ण समर्थन है, आपका कहना है कि हमारे देश का नाम इंडिया तो हो ही नहीं सकता, भारत ही हमारे देश का नाम रहना चाहिए।

मोहनलाल जोशी

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८९२९८५९४४

मोहनलाल जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक सुंदर व शांत गांव हैं, जिसे हम अवश्य 'अवर स्वीट विलेज' के नाम से पुकारते हैं। यहां हिंदू-मुस्लिम सभी धर्म के लोग निवासित हैं। सभी में आपसी सामंजस्य अच्छा है। पहले हिंदू मुस्लिम समाज में कोई अंतर नहीं दिखता था सभी एक दूसरे के त्यौहार व कार्यों में सहभागी होते थे, पर अब इसमें थोड़ा सा अंतर आ गया है। आर्थिक दृष्टि से भी 'महनसर' पहले की तुलना में कमजोर हो गया है। यहां आर्थिक उपार्जन के साधन न होने के कारण यहां के निवासी आज देश के विभिन्न भागों में जा बसे हैं। पहले यहां पानी की समस्या, बिजली की समस्या होने से खेती भी कम होती थी, पर अब बिजली की सुविधा होने पर बोरवेल के पानी से खेती होने लगी है। यहां के खानपान में यहां के पेड़े व लड्डू सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। यहां देश-विदेश से सैलानी पर्यटन के लिए आते हैं। यहां सोने की दुकान, मस्करा हवेली व अन्य कई प्रमुख स्थल यानी की जोड़े वाले बालाजी का मंदिर, रघुनाथ जी का मंदिर जो कि खेतान परिवार द्वारा बनाया गया है, विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शिक्षा की स्थिति में भी यहां विकास हुआ है। आज यहां के निवासी उच्च शिक्षा प्राप्त कर बड़े-बड़े पदों व क्षेत्र में कार्यरत हैं। कई विशेषताओं से भरा है हमारा 'महनसर'...

३० जून १९५५ को 'महनसर' में जन्मे मोहन जी का संपूर्ण बचपन 'महनसर' में ही बीता। आपने मैट्रिक तक की शिक्षा 'महनसर' से ही प्राप्त की। तत्पश्चात उच्च शिक्षा आपने रामगढ़ कॉलेज से ग्रहण की। १९७७ से आप मुंबई के प्रवासी हैं और यहां इंजीनियरिंग लाइन के कारोबार से जुड़े है। आप पूर्व में मिठाई के कारोबार से जुड़े रहे, वर्तमान में आप इंश्योरेंस के कारोबार से जुड़े हुए हैं। आपको १ पुत्र व दो पुत्रियां हैं। पुत्र ऐड एजेंसी के क्षेत्र में कार्यरत है। आप सामाजिक कार्यों में भी अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं। 'महनसर' और मुंबई में विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में जुड़े हुए हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए', विषय पर अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त करते हुए कहते हैं कि यह सर्वथा उचित है क्योंकि किसी भी देश के २ नाम नहीं होते, तो हमारे देश का २ नाम क्यों? हमारे देश का एकमात्र नाम 'भारत' ही होना चाहिए।

पवन मस्करा

गंगा विद्यापीठ व्यवस्थापक
महनसर निवासी
भ्रमणध्वनि : ९७८५६७७८४८

अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' शेखावाटी का एक प्रमुख हिस्सा है, यह ऐतिहासिक स्थान भी रहा है। 'महनसर' रेलवे स्टेशन भी है। यहां स्थित गढ़ लगभग २५० से ३०० साल पुराना है। यहां का सबसे बड़ा मंदिर रघुनाथ जी मंदिर है जहां राम परिवार व शिव परिवार की ऐसी अद्भुत संगमरमर की प्रतिमा है जो आपको अन्य कहीं देखने को नहीं मिलेगी। यहां पोद्दार परिवार द्वारा सोने की दुकान का निर्माण किया गया है, वह भी कई वर्षों पुराना है, जिसे देखने हजारों सैलानी 'महनसर' आते हैं, इसके अलावा तोलाराम मस्करा द्वारा बनाया गया डांसिंग हाल भी विशेष रूप से प्रसिद्ध है। 'महनसर' के नोपानी परिवार से बिरला परिवार का पारिवारिक संबंध है। के. के. बिरला की बेटी नंदिनी देवी जी का मोहनलाल नोपानी के पुत्र बिमल कुमार जी से विवाह हुआ। 'महनसर' में हिंदू-मुस्लिम दोनों ही धर्म के लोग बसे हुए हैं। सभी का आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। एक जमाने में 'महनसर' की शराब भारत ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्ध थी। ऐसी कई विशेषताओं को लिए हुए है हमारा 'महनसर'...

पवन जी का जन्म १९६० में 'महनसर' में हुआ। आपकी माध्यमिक शिक्षा 'महनसर' में व कॉलेज की शिक्षा रामगढ़ में संपन्न हुई। शिक्षा समाप्ति के बाद आप आयल मिल के कारोबार से जुड़े। २००२ तक आपने यही कार्य किया। वर्तमान में आप इलेक्ट्रॉनिक के कारोबार से जुड़े हुए हैं। साथ ही आप व आपके मित्र बी. के. दायमा जी द्वारा २००५ में गंगा विद्यापीठ की स्थापना की गई। आज इस विद्यालय में लगभग ४०० विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आप इस विद्यालय में व्यवस्थापक के रूप में कार्यरत हैं और बी.के. दायमा चेयरमैन के रूप में। आप अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए', विषय पर आपका कहना है कि भारत हमारे देश का वास्तविक नाम है और यही रहना चाहिए।

सुनील सहल

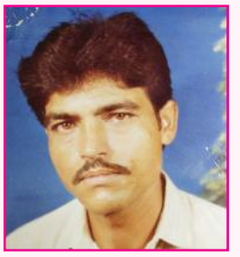

महनसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९९५०५१४२७०

सुनीलजी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि पहले आज के 'महनसर' में बहुत ही परिवर्तन आया है। यहां पहले की तुलना में विकास हुआ है। यहां की सामाजिक स्थिति बहुत ही अच्छी है। यहां ३६ कौम अर्थात ब्राह्मण, राजपूत, मुस्लिम आदि सभी समाज के लोग निवासित हैं। सभी का आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है सभी एक दूसरे के कार्य में सहभागी बनते हैं। पर्यटन की दृष्टि से भी 'महनसर' महत्वपूर्ण है। यहां तोलाराम जी का कमरा, मस्करों की हवेली के नाम से विशेष प्रसिद्ध है। सोने की दुकान, जोड़े वाले बालाजी मंदिर, गोगा जी मेढी, बड़ा मंदिर जो रघुनाथ जी के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है, ऐसे कई महत्वपूर्ण स्थान है। भौगोलिक दृष्टि से भी 'महनसर' अपनी विशेष पहचान बनाए हुए है। यह तीन जिलों के मध्य स्थित है 'महनसर' में कई सामाजिक संस्थाएं हैं जिनमें गौशाला प्रमुख है। अन्य कई विशेषताओं को लिए हुए है हमारा 'महनसर'...

५३ वर्षीय सुनीलजी का जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'महनसर' में ही संपन्न हुई। वर्तमान में आप 'महनसर' रेलवे स्टेशन पर टिकट मास्टर के रूप में कार्यरत हैं। 'महनसर' स्थित कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आपका कहना है कि 'भारत' के नाम में भारतीयता झलकती है।

महेश्वर सिंह

व्यवसाई व समाजसेवी
महनसर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९९२८३३१४६७

महेश्वर जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' को सेठों का गांव कहा जाता है। यहां के जितने भी व्यापारी थे सभी आर्थिक दृष्टि से संपन्न व समृद्ध थे। उनके द्वारा ही 'महनसर' में हवेलियां, मंदिर, धर्मशाला, कुएं, विद्यालय आदि का भी निर्माण किया गया, तत्पश्चात यहां के व्यापारीगण अन्य स्थानों में परिवार सहित प्रवासित होने लगे। धीरे-धीरे इनका अपने गांव से लगाव छूटता गया, जिस कारण आज उनकी हवेलियां व अन्य स्थापत्य वीरान पड़े हुए हैं। रखरखाव के लिए अन्य लोग रखे गए हैं, जिस कारण जो विकास गांव का हो रहा था वह बंद हो गया।

यहां के मुस्लिम समाज के लोगों के घर कच्चे मकान के होते थे पर अरब देशों में काम करने के कारण उनका अपना व्यक्तिगत विकास होने लगा, जिस कारण आज यहां उनके पक्के मकान बन गए हैं और आर्थिक दृष्टि से संपन्न होने लगे है।

वर्तमान में 'महनसर' में रहने वाले किसान नौकरी पर आश्रित हैं, इस कारण यहां की आर्थिक स्थिति का जो विकास होना चाहिए था वह नहीं हो पाया। 'महनसर' अपनी सुंदरता व ऐतिहासिक चीजों के लिए विशेष जाना जाता है।

महेश्वर जी का जन्म २८ नवंबर १९५४ को 'महनसर' में व संपूर्ण शिक्षा जयपुर में संपन्न हुई। आप यहां हेरिटेज होटल के कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं, आपके परिवार में पत्नी और तीन विवाहित पुत्रियां हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आपका पूर्ण समर्थन है। आपका कहना है कि हमारे देश का एक ही नाम 'भारत' होना चाहिए।

जिसके लिए हमें अपने स्थायी व व्यवसायिक पते पर इंडिया की जगह भारत ही लिखना चाहिए। यदि सभी लोगों ने ऐसा करना शुरू कर दिया तो हमारे देश का नाम बहुत ही जल्दी भारत के नाम से जाना जाएगा।

महेंद्र कुमार श्रीमाल

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४९२७३६१६

महेंद्र जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक खूबसूरत गांव है जहां चारों तरफ आपको छोटी-बड़ी हवेलियां नजर आ जाएगी। यहां की प्रमुख विशेषताओं में रघुनाथ जी का मंदिर, सोने की दुकान, मस्करा का कमरा विशेष रुप से प्रसिद्ध है, जहां दर्शन और पर्यटन के लिए देश-विदेश के सैलानी आते हैं। यहां सभी समाज के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। यहां ब्राह्मण, अग्रवाल, राजपूत, जैन, मुस्लिम अन्य कई समुदाय के लोग बसे हैं, सभी का सामाजिक व्यवहार बहुत ही उत्तम है। किसी समय 'महनसर' की शराब देश ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्ध थी।

यहां का वातावरण हमेशा खुशनुमा रहता है। यहां खेती भी अच्छी होती है। बाजरी, मोट के लिए विशेष रुप से प्रसिद्ध है। 'महनसर' का गढ़ यहां के राजाओं की समृद्धि व संपन्नता को दर्शाते हुए आज भी खड़ा है। ऐसी कई विशेषताओं को लिए हुए है हमारा 'महनसर'...

महेंद्र जी का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'महनसर' में ही संपन्न हुई।

तत्पश्चात उच्च शिक्षा रामगढ़ कॉलेज से की व स्नातकोत्तर की शिक्षा आपने चुरु महाविद्यालय से प्राप्त की। पिछले १२ वर्षों से आप बेंगलुरु में प्रवासित हैं और यहां इलेक्ट्रीकल कारोबार में संलग्न है। यहां की स्थित कई सामाजिक संस्थाओं में विशेष पदों पर कार्यरत हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान को अपना पूर्ण समर्थन देते हैं।

नवल पोद्दार

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७५५२२४२२

नवल जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक छोटा व सुंदर गांव है, सभी धर्म के लोग आपसी सामंजस्य के साथ निवास करते हैं, पर पहले व आज के 'महनसर' में बहुत बदलाव आ गया है, पहले यह एक छोटा सा कस्बा था, आज पूर्णत: शहर का रूप ले लिया है। आज भी अपने वैभव को बनाए हुए है। यहां के पोद्दार परिवार द्वारा स्थापत्य का निर्माण किया गया है जिसमें सोने की दुकान, जोड़े वाले बालाजी का मंदिर जैसे कई प्रतिष्ठा का निर्माण हुआ है। स्थापत्य का रखरखाव हमारे परिवार के २१ भाइयों द्वारा किया जा रहा है जो एक ट्रस्ट के माध्यम से जुड़े हैं। 'महनसर' गढ़ तोलाराम जी का कमरा जिसे 'डांसिंग हॉल' कहते हैं जैसे अन्य कई प्रसिद्ध स्थान है, जिसे देखने देश-विदेश से सैलानी आते हैं। यहां की सामाजिक स्थिति बहुत ही उत्तम है, यहां हिंदू और मुस्लिम दोनों ही निवास करते हैं। दोनों का आपसी सामंजस्य उत्तम है, कई विशेषताओं से भरा है हमारा 'महनसर'...

६७ वर्षीय नवल जी के जन्म 'महनसर' में हुआ। आपकी संपूर्ण शिक्षा बिहार के मोतिहारी में संपन्न हुई, जहां आपका परिवार पहले से ही बसा हुआ था। वर्तमान में आप सूरत के प्रवासी हैं, यहां आप गीता प्रेस के आयुर्वेदिक दवाइयों के गुजरात और महाराष्ट्र में वितरक हैं। परिवार में पत्नी, एक बेटा-बहू व एक पुत्री है। पुत्र विवो कंपनी में सेल्स मैनेजर के पद पर सेवारत है। आप सामाजिक कार्यों में भी अपनी अहम भूमिका निभाते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए', विषय का आप पूर्ण समर्थन करते हैं।

प्रदीप जोशी

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८१९५१९३३१

प्रदीप जी अपनी पैतृक भूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि बचपन से ही मेरा 'महनसर' आना-जाना लगा हुआ है। गर्मियों की छुट्टी में हमारा पूरा परिवार 'महनसर' में इकट्ठा होता था, उस समय जो आनंद आता था उसकी बात ही अलग होती थी, जिस कारण मेरा 'महनसर' से लगाव अटूट है। यहां की सामाजिक स्थिति बहुत ही उत्तम है, यहां हिंदू-मुसलमान एक ही समान रहते हैं, सभी एक दूसरे के सामाजिक व धार्मिक कार्य में सहभागी होते है। आज भी 'महनसर' का सामाजिक स्तर बहुत ही उत्तम है, लोग एक दूसरे से पारिवारिक रूप से जुड़े हुए हैं। 'ग्रीन महनसर' के नाम से हमने एक अभियान शुरू किया था, जिसके तहत हमने 'महनसर' में ४००-५०० पौधे लगवाए हैं, जिसमें नरेंद्र जी पोद्दार, बी.के. दायमा, पवन मस्करा व वहां के निवासियों का विशेष योगदान रहा है। लॉकडाउन के समय इन पौधों की देखभाल वहां के निवासी और वहां के स्कूली बच्चे कर रहे हैं। 'महनसर' को सेठों का गांव कहा जाता था। १० वर्ष पूर्व ही यहां के प्रवासी बंधुओं ने मिलकर एक गौशाला का निर्माण किया गया। आज इस गौशाला ने विस्तृत रूप ले लिया है, इसमें मेरे परिवार की भी सहभागिता रही है। एक तरह से यह कहा जा सकता है कि 'महनसर' निवासी भले ही कहीं भी बसे हैं पर उनका अपने गांव से बहुत लगाव है। 'महनसर' के विकास में यहां के निवासियों का बहुत योगदान रहा है। यहां सबसे बड़ी समस्या पानी ड्रेनआउट की है। नालियों का पानी पूरे गांव में एक जगह इकट्ठा होता है, प्रॉपर सिंक नहीं होने से पूरे गांव में थोड़ी सी भी ज्यादा बरसात होने पर पानी सड़कों परबहने लगता है इसके लिए श्री महिपालसिंगजी का प्रयास जारी है। दूसरा यहां हम एक युवा भवन भी बनाना चाहते हैं जिसमें यहां के युवा सक्रिय रहे। 'महनसर' में बनने वाली शराब एक ऐतिहासिक व हेरिटेज शराब के रूप में अपनी विशेष पहचान रखती थी। एक समय में यह राजा-महाराजाओं के लिए बनाई जाती थी। पर्यटन की दृष्टि से भी 'महनसर' उत्तम है। यहां महनसर गढ, सोने की दुकान, तोलाराम जी मस्करा का कमरा आदि कई प्रमुख स्थान है, जहां देश-विदेश से सैलानी पर्यटन के लिए आते हैं। यहां कई फिल्मों की शूटिंग भी हुई है। कई खूबियों से भरा है हमारा 'महनसर'...

प्रदीप जी मूलत: 'महनसर' के निवासी हैं। आपका जन्म १९६५ में मुंबई में ही हुआ, जहां आपके पिताजी पहले से ही प्रवासित थे। आपके पिताजी एक कंपनी में कार्यरत थे, उस कंपनी में लगभग १०० लोग 'महनसर' निवासी थे, ऐसा प्रतीत होता था कि एक छोटा 'महनसर' यहीं बस गया है। आपकी संपूर्ण शिक्षा भी मुंबई में ही संपन्न हुई, यहां आप कॉपर पाइप के कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। महनसर गांव की मेडी पर आपके परिवार द्वारा पहला कमरा बनाया गया है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आपका कहना है कि भारत हमारी जननी है, मैं इस विषय का पूर्ण समर्थन करता हूं।

मितेश पोद्दार

व्यवसायी व समाजसेवी
महनसर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८१८७२५०५५

मितेश जी अपने पैतृक भूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' से मेरी बहुत सारी यादें जुड़ी हुई हैं, आज भी हम धार्मिक कार्य व बच्चों के जाट-जडुला के लिए 'महनसर' जरूर जाते हैं। पहले व आज के 'महनसर' में बहुत परिवर्तन आ गया है। पहले 'महनसर' में यातायात के साधन नहीं थे। हम उंट-गाडा से चूरु या अन्य स्थान पर जाते थे, जहां पहुंचने के लिए हमें चार-पांच घंटे लग जाते थे, उससे सफर करने का अपना ही मजा होता था पर आज यहां यातायात के सारे साधन उपलब्ध हैं। पहले मूलभूत सुविधा की कमी हुआ करती थी, आज सारी सुविधाओं से संपन्न है 'महनसर'। हमारे बचपन में चॉकलेट टॉफी मिलती थी जिसे खाकर हम बच्चे आनंदित हो उठते थे, वह आनंद आज के कैडबरी में नहीं मिलती। आर्थिक दृष्टि से 'महनसर' की स्थिति अच्छी नहीं थी, पर आज यहां सभी सुविधा संपन्न है। शहर जैसी सारी सुविधाएं यहां आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। पहले इक्का-दुक्का लोगों के पास ही साइकिल हुआ करती थी, पर आज सभी के पास गाड़ी मोटर व अन्य साधन उपलब्ध है। आज गांव में बाहर से लोग ज्यादा आकर बसने लगे हैं। 'महनसर' की सामाजिक स्थिति के बारे में कहूं तो पहले लोगों में जो अपनत्व व अपनापन था वह आज कहीं खो सा गया है, अब लोगों में जुड़ाव, अपनापन नहीं देखने को मिलता। पर्यटन की दृष्टि से भी हमारा 'महनसर' उत्तम है, यहां देश-विदेश से सैलानी पर्यटन के लिए आते हैं, कई खूबसूरत यादें मेरी 'महनसर' से जुड़ी हुई हैं।

४२ वर्षीय मितेशजी की पैतृक भूमि 'महनसर' है जहां से आपके दादाजी स्व. जयराम पोद्दार जी आजीविका हेतु पटना में आकर बस गए। आपका जन्म स्थान पटना है और आपने एम.बी.ए. की शिक्षा मुंबई से ग्रहण की। वर्तमान में आप दिल्ली स्थित गुड़गांव में प्रवासित हैं और यहां इंटीरियर के कारोबार से जुड़े हुए हैं। आपके पिताजी स्व. संत कुमार जी व आपकी माताजी एक सामाजिक व्यक्तित्व थे, जिनका कई सामाजिक कार्य में योगदान रहा है। आपकी माता जी अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला समिति की सदस्य रही हैं। आप भी इसी नक्शे कदम पर बढ़ाते हुए दिल्ली स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में सेवारत हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि मेरा इस विषय पर पूर्ण समर्थन है जहां तक सहयोग होगा मैं सहयोग करूंगा, क्योंकि भारत शब्द में अपनत्व झलकता है। हम भारत के वासी हैं, हमारा देश का नाम हिंदी या अन्य किसी भाषा में 'भारत' ही होना चाहिए, 'भारत' ही सबसे उचित नाम है और यह राष्ट्रीयता का प्रतीक है।

सुशील पोद्दार

सेवानिवृत्त व समाजसेवी
महनसर निवासी-पटना प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ८५४४०८४४३०

सुशील जी अपनी पैतृक भूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक छोटा और सुंदर गांव है, भले ही मैं पटना में बसा हूं पर मुझे अपने 'महनसर' से बहुत लगाव है। यहां पोद्दार परिवार के द्वारा कई स्थापत्य बनाए गए हैं, जो अपनी विशेषता व सुंदरता को लिए हुए है। यहां सोने की दुकान, रघुनाथजी का मंदिर, महनसर गढ़ जैसे कई ऐतिहासिक पर्यटन स्थल हैं, जहां देश-दुनिया से सैलानी पर्यटन के लिए आते हैं। आर्थिक दृष्टि से 'महनसर' का वह विकास नहीं हो पाया जो होना चाहिए था। अगर यहां टूरिज्म का विकास किया जाए तो अवश्य ही यहां की आर्थिक स्थिति बेहतर हो जाएगी, वैसे कई विशेषताओं से भरा है हमारा 'महनसर'...

१९५१ को चित्तौड़गढ़ के भूपालसागर में सुशील जी का जन्म हुआ। आपकी संपूर्ण शिक्षा बिहार के मोतिहारी में संपन्न हुई, जहां आपके पिताजी स्व. मदन लाल जी १९४४ से प्रवासी थे। पिछले कई वर्षों से आप परिवार सहित पटना में बसे हुए हैं और यहां बिरला शुगर मिल के एग्जीक्यूटीव वाइस प्रेसिडेंट के रूप में कार्यरत रहे। वर्तमान में सेवानिवृत्त हैं। आपके ३ पुत्र हैं आनंद, अमित और आशीष। आनंद और अमित पटना में ही व्यवसाय से जुड़े हुए हैं और आशीष मुंबई में कार्यरत है। आप सामाजिक कार्यों में भी यथासंभव सहभागी रहते हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय का पूर्ण समर्थन करते हुए कहते हैं कि हमारे देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत'।

आशीष पोद्दार

नौकरी पेशा
महनसर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२०१५५१०३

आशीष जी पैतृक भूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' में हमारे पोद्दार परिवार द्वारा हवेली, मंदिर व अन्य कई दर्शनीय स्थल बनाए गए हैं। आज भी हमारे परिवार के सदस्य 'महनसर' में बसे हुए हैं। पहले और आज के 'महनसर' में बदलाव तो अवश्य हुए हैं। पहले जो सुविधाएं नहीं थी आज बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं। पर्यटन की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण स्थल है। यहां महनसर गढ़, सोने की दुकान, रघुनाथ जी का मंदिर, जोड़े वाले बालाजी का मंदिर, तोलाराम जी का कमरा जैसे कई स्थापत्य हैं, जिसे देखने दूर-दूर से सैलानी आते हैं। 'महनसर' एक ऐतिहासिक स्थल रहा है, कई विशेषताओं से भरा है 'महनसर'...

३९ वर्षीय आशीष जी का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा पटना में संपन्न हुई, जहां आपके दादाजी व पिता सुशील जी पहले से ही बसे हुए थे। दिल्ली में उच्च शिक्षा प्राप्त करने बाद पिछले १६ सालों से आप मुंबई के प्रवासी हैं और यहां एक फाइनेंस कंपनी में कार्यरत हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी यथासंभव अपनी भूमिका निभाते हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आपका पूर्ण समर्थन है, आपका कहना है कि 'भारत' ही हमारे देश का वास्तविक नाम है और यही रहना चाहिए।

श्रीमती मनीषा दायमा

पार्षद एवं प्रमुख आरोग्य समिति
नगरपालिका
महनसर निवासी-वापी प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७०४३४१४३३९

मनीषा जी अपने पैतृक भूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहती हैं कि 'महनसर' एक ऐतिहासिक गांव है, भले ही ऐतिहासिक, भौगोलिक दृष्टि से छोटा है पर यह अपनी सुंदरता और प्रतिष्ठा को आज भी बनाए हुए है। 'महनसर' और महनसर के निवासी दोनों ही जिंदादिल हैं, वे आज भी अपनी पारंपरिक, रीति-रिवाजों, पूजा पद्धति व संस्कृति को अपनाए हुए हैं। यहां की सामाजिक और पारिवारिक स्थिति बहुत ही उत्तम है। सभी एक दूसरे से दिल से जुड़े हुए हैं अर्थात लोग एक दूसरे से मन-भाव लगाव रखते हैं, जहां वर्ष में हमारा दो-तीन बार अवश्य जाना होता है। महनसर में बनने वाली शराब की अपनी विशेष पहचान रही है। महनसर गढ़, सोने की दुकान, डांसिंग हॉल और ऐसी कई स्थापत्य 'महनसर' को विशेष बनाते हैं, जहां पर्यटन के लिए देश-विदेश से सैलानी आते हैं, अन्य कई विशेषताओं से भरा है हमारा 'महनसर'...

मनीषा जी मूलत: राजस्थान के नवलगढ़ स्थित झाझड़ की निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा झाझड़ में ही संपन्न हुई। पिछले ३० वर्षों से आप 'महनसर' की वासी रही हैं। आपका दिनेश जी दायमा के साथ विवाह हुआ है। वर्तमान में आप वापी में प्रवासित हैं और यहां वापी नगरपालिका में पार्षद के रूप में कार्यरत हैं। आप आर.एस.एस से भी जुड़ी रही हैं, साथ ही वापी नगरपालिका में आरोग्य समिति के प्रमुख पद पर कार्यरत हैं। पिछले ५ वर्षों से आप राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। आपका सामाजिक कार्य में सतत रुझान रहता है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आपका कहना है कि 'भारत' शब्द में जो महानता और ऐतिहासिकता है वह इंडिया शब्द में नहीं। 'भारत' शब्द में अपनत्व झलकता है, भारतीयता झलकती है अतः हम अपने देश को सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही बोलें और लिखें।

भारतवासियों से है आव्हान
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

मधुसूदन मस्करा

व्यवसायी व समाजसेवी

महनसर निवासी-कोलकाता प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८३१०४१४१४

मधुसूदन जी अपनी पैतृक भूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि ५० साल पहले व आज के 'महनसर' में कोई विशेष परिवर्तन नहीं देखा गया। विकास अवश्य हुआ है, मूलभूत सुविधाएं बढ़ी हैं, पर जो विकास में तेजी होनी चाहिए थी वह नहीं हुई है। लोगों में अपनेपन व आत्मीयता की भावना जो पहले थी वह आज भी आप देख सकते हैं। लोग एक दूसरे से व्यक्तिगत रूप से जुड़े हुए हैं। यह छोटा गांव होने के कारण सभी एक दूसरे से मेल-मिलाप के साथ रहते हैं। 'महनसर' शांत व अच्छे लोगों वाला गांव है, यहां के लोगों की सोच सात्विक है। किसी में कोई मनमुटाव नहीं देखा जा सकता। यहां हिंदू-मुस्लिम दोनों ही धर्म के लोग आपसी प्रेमभाव के साथ रहते हैं। 'महनसर' प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ ऐतिहासिकता के लिए भी विख्यात है और पर्यटन के लिए भी यहां आपको कई पर्यटन स्थल देखने को मिलेंगे, जिसे देखने दूर-दूर से सैलानी आते हैं। किसी समय महनसर की फूलों, फलों व सुखे मेवों की सुगंधित शराब ऐतिहासिक एवं विश्व प्रसिद्ध थी। कई विशेषताओं से भरा है हमारा 'महनसर'...

मधुसूदन जी का जन्म १९५५ में कोलकाता में हुआ। आपकी संपूर्ण शिक्षा कोलकाता में ही हुई है। वर्तमान में आप मैन्युफैक्चरर, ट्रेडिंग व अन्य कारोबार से जुड़े हुए हैं। आपका सात भाइयों का परिवार हैं, सभी एक साथ निवास करते हैं। आप सामाजिक कार्यों में भी रुचि रखते हैं। आपकी दो पुत्रियां हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आपका कहना है कि बिल्कुल यही होना चाहिए, हमारे देश का सिर्फ एक नाम होना चाहिए 'भारत', क्योंकि इसी में भारतीयता का गौरव है।

पुरुषोत्तम नोपानी

सेवानिवृत्त समाजसेवी

महनसर निवासी-मुंबई प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९३२३२८२३२१

पुरुषोत्तम जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक सुंदर व छोटा गांव है और यहां के निवासी बहुत ही मिलनसार व आत्मीयता का भाव रखने वाले हैं। आज महनसर के निवासी देश-दुनिया में फैले होने के बावजूद अपने गांव से लगाव बनाए हुए हैं। 'महनसर' में विभिन्न सामाजिक कार्य में महनसर वासियों का योगदान हमेशा बना रहता है। महनसर पर्यटन के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है। यहां कई ऐतिहासिक पर्यटन स्थल हैं, जहां देश-विदेश से सैलानी पर्यटन के लिए आते हैं। कई विशेषताओं से परिपूर्ण है हमारा 'महनसर'...

पुरुषोत्तम जी का जन्म १९६० में 'महनसर' में ही हुआ। आपका परिवार १९६१ से मुंबई का प्रवासी है व आपकी संपूर्ण शिक्षा मुंबई में ही संपन्न हुई है। आप शेयर बाजार के कारोबार से जुड़े हुए रहे, साथ ही आप सामाजिक कार्य में भी संलग्न हैं। राजस्थानी सम्मेलन मलाड में प्रतिनिधि के रूप में सेवारत हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए विषय पर आपका कहना है कि हमारे देश का नाम सिर्फ और सिर्फ भारत ही होना चाहिए, भारत ही हमारे देश का वास्तविक और ऐतिहासिक नाम है जो परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

महेश चौमाल

व्यवसायी व समाजसेवी

महनसर निवासी-ग्वालियर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८२७०७२०३५

महेश जी अपनी जन्मभूमि 'महनसर' के संदर्भ में कहते हैं कि 'महनसर' एक सुंदर व छोटा गांव है। यहां के सभी व्यक्तियों में आपसी प्रेम भाव बहुत है, यहां हिंदू और मुस्लिम दोनों ही आपसी सामंजस्य के साथ रहते हैं। यहां आने वाले अतिथियों का आवभगत बड़े ही आत्मीयता से किया जाता है। यहां के खेतान परिवार, पोद्दार परिवार, नोपानी परिवार व अन्य परिवार की 'महनसर' में विशेष भूमिका रही है। 'महनसर' का सेठ दौलत राम रावतमल नोपानी स्कूल शिक्षा के लिए आसपास के क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यहां से शिक्षित विद्यार्थी आज उद्योगपति व अन्य कई क्षेत्रों में अपनी विशेष पहचान बनाए हुए हैं। शिक्षा के लिए 'महनसर' विशेष रूप से जाना जाता है। आर्थिक दृष्टि से भी 'महनसर' हमेशा से ही संपन्न रहा है। यहां के मुस्लिम समुदाय के लोग भी अरब देशों में कार्यरत हैं अतः यहां की आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी है। पर्यटन के लिए भी 'महनसर' विशेष रूप से प्रसिद्ध है यह एक ऐतिहासिक गांव है। यहां का गढ़ व अन्य कई पर्यटन स्थलों को देखने के लिए देश-विदेश से सैलानी आते हैं। मेरा 'महनसर' से बहुत लगाव है अतः जब भी समय मिलता है मैं 'महनसर' पहुंच जाता हूँ।

महेश जी का जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'महनसर' में ही संपन्न हुई। आपके पिताजी शंकरलाल जी सेठ दौलत राम रावतमल नोपानी स्कूल में शिक्षक के रुप में अपनी विशेष प्रसिद्धी प्राप्त की थी, साथ ही वे महनसर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक थे। तत्पश्चात उच्च शिक्षा रामगढ़ शेखावाटी से ग्रहण की। स्नातक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात आप मोदी इंस्टीट्यूट के विभिन्न क्षेत्रों में सेवा देने के पश्चात २००३ में आपने सेवानिवृत्ति ले ली और ग्वालियर में ट्रेडिंग के कारोबार से जुड़े हुए हैं। 'महनसर' स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में सेवारत हैं। आपके ३ पुत्र व एक पुत्री हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इस विषय पर आप का कहना है कि हमारे देश का नाम सिर्फ और सिर्फ भारत ही होना चाहिए, चाहे भाषा कोई भी हो।

महनसर के कर्मठ व प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी श्री संत कुमार पोद्दार

मेरे पिताजी स्व. 'श्री संत कुमार पोद्दार' स्व. श्री जयराम दास पोद्दार के पुत्र का जन्म २० मई को महनसर, जिला झुंझुनू (राजस्थान) में हुआ था। उनका परिवार मध्यमवर्गीय परिवार से था। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा 'महनसर' से की। वे अपने स्कूल में सबसे प्रतिभाशाली छात्र थे, उन्होंने अपनी मैट्रिक परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए थे।

'महनसर' में उनका जीवन बहुत ही सरल था। वे हमेशा किसी से नई चीजें सीखने के लिए उत्सुक रहते थे। वे अपने शिक्षकों को उच्च कक्षाओं की परीक्षा प्रश्नोत्तर की जांच में मदद करते थे।

१६ साल की उम्र में वे घर से सामान लेने और दूसरों की मदद करने के लिए महनसर से चूरू तक अकेले यात्रा करते थे। १० वीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद वे अपनी उच्च शिक्षा के लिए पटना आ गए।

उन्होंने घर पर बने खाद्य पदार्थों को बेचकर अपनी शिक्षा पूरी की। बाद में एक लेखाकार के रूप में J.G.Carr & Sons में नौकरी की और पटना लॉ कॉलेज से एलएलबी की पढ़ाई पूरी की। वे बताते थे कि वे अपनी पोशाक के केवल १ जोड़े में कैसे जीवन व्यतीत करते थे, रात में धोते और अगले दिन पहनते थे।

जब वे पटना सिटी में रहते थे और कॉलेज की पढाई के साथ नौकरी पटना में ही करते थे। मैंने उनसे सीखा कि अपने माता-पिता का सम्मान करें और उन्हें प्यार करें। वे पूरी रात जागते, जब उनकी माँ यानी मेरी दादी की तबियत बिगड़ जाती। मुझे अभी भी याद है कि उन्होंने अपनी माँ के लिए 'ग्रेप्टिन' बिस्कुट खरीदे थे, जो उस समय बहुत महंगा थे।

वे स्वभाव से बहुत सामाजिक और मददगार थे। वे २ साल के लिए 'मारवाड़ी युवा मंच' पटना शाखा के अध्यक्ष रहे।

'महनसर' के लिए उनका प्यार बहुत था। वे अपने गाँव और परिवार के लाभ के लिए कोई भी निर्णय ले लेते थे।

उनके चचेरे भाई अभी भी 'महनसर' में हैं। हम अभी भी वर्ष में लगभग ३-४ बार 'महनसर' जाते हैं। हमारे बच्चों का जाट-जडूला वहाँ ही किया जाता है। उन्होंने हमेशा हमें 'दूसरे को देने' और आपके पास जो कुछ भी हो, उसी में संतुष्ट रहना सिखाया। उन्होंने कभी भी अपने परिवार, दोस्तों या ग्राहकों को गलत सुझाव या सलाह नहीं दी, वे लोगों को एक वकील के रूप में नहीं बल्कि अपने मित्र और सलाहकार की तरह सलाह देते रहे। उन्होंने कई मामलों में मध्यस्थता के रूप में भी कार्य किया और कई लोगों के लिए वसिहत बनवायी। काम के प्रति उनका समर्पण बहुत अधिक था।

वे एक पाठक थे और अपनी रूचि के कारण उन चीजों को जानना चाहते थे, उसे हमेशा पढते थे। भारतीय पौराणिक कथाओं के प्रति उनका झुकाव उनके पुस्तक संग्रह में देखा जा सकता है। वे मृत्यु के बाद जीवन के बारे में जानना पसंद करते थे। उनके अच्छे गणित ने उन्हें ज्योतिष के बारे में जानने में मदद की। वे मानव शरीर के बारे में जानना पसंद करते थे इस वजह से कौन सी दवा किसके लिए दी जाती है।

आज भी परिवार में हर कोई उनके तार्किक तर्क और स्मृति के बारे में मनन करता है। वे लंबे समय तक सुरक्षित रूप से कागजात रखने में एक विशेषज्ञ थे, मेरे पास उनके १९८० के दशक के दैनिक हिसाब-किताब हैं, उन्होंने कभी भी अपने उसुलों से समझौता नहीं किया।

गत ३१ मार्च २०२१ को उनकी अकस्मात मृत्यु ने हमें झकझोर दिया। उन्होंने अपनी यादों और शिक्षाओं के साथ हमें अकेला छोड़ दिया। अपनी मृत्यु के बाद भी उन्होंने अपनी आँख सोसाइटी को दान कर दी।

ऐसी कई घटनाएं हैं जिनके बारे में मैं लिखना चाहता हूं लेकिन समय की कमी के कारण मुझे समझौता करना पड़ रहा है।

- मितेश पोद्दार
महनसर निवासी-गुड़गांव प्रवासी

'महनसर' विशेषांक के प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार को हार्दिक बधाई

CA ABHISHEK TIWARI
BCOM, FCA, FAFD, REGISTERED VALUER, CONCURRENT AUDITOR
Mob. : 9029326651
ABHISHEK S. TIWARI & ASSOCIATES
GHARTERED ACCOUNTANTS
OFFICE
201 Mukund Palace, New Golden Nest Road,
Opp. Ramdwara, Bhayander East,
Dist. - Thane, Maharashtra, Bharat - 401105

अभिनंदन

मेरा राजस्थान पत्रिका के प्रबुद्ध पाठक श्री बाबुलाल करवा जी (खींवसर निवासी-मुंबई प्रवासी) के सुपुत्र **दीपक करवा** जी के **IAS** बनने पर मेरा राजस्थान पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए अभियान सफल होगा

-गोविंददेवगिरीजी महाराज कोषाध्यक्ष अयोध्या राम मंदिर

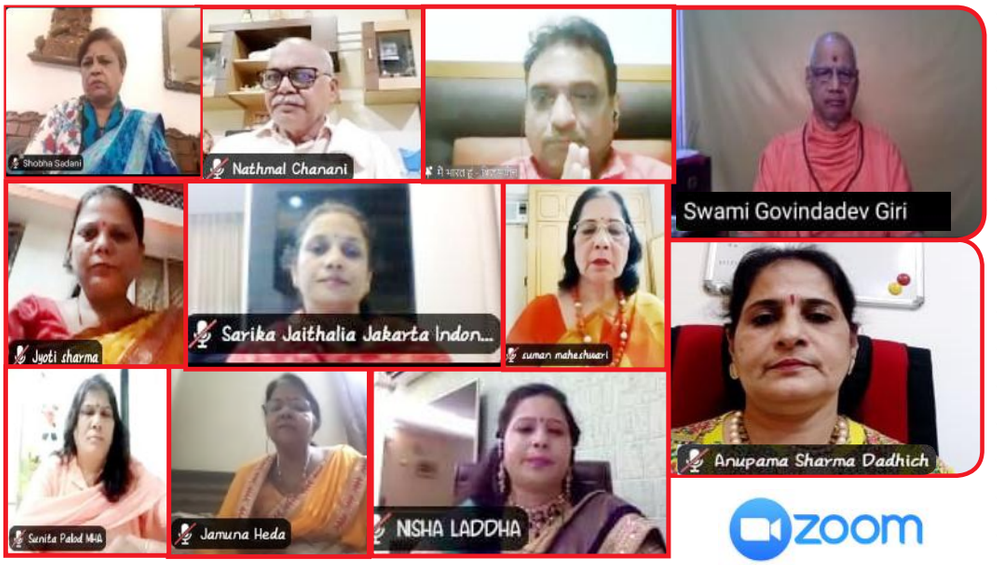

२१ अप्रैल २०२१ को 'मैं भारत हूँ' संघ के तत्वाधान में रामनवमी उत्सव का आयोजन जूम वेबिनार पर आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता 'मैं भारत हूँ' संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष 'बिजय कुमार जैन ने किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि परम पूज्य स्वामी गोविंददेवगिरी जी महाराज ने अपनी उपस्थिति देकर कार्यक्रम को आर्शिवाद दिया और कहा कि भारत को एकसूत्र में बांधने वाले राम ही थे और कहा कि 'मैं भारत हूँ' का अभियान 'भारत को भारत ही बोला जाए सफल होगा। राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सदानी ने राम के आदर्श व्यक्तित्व का वर्णन किया, तत्पश्चात विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें गीत, संगीत, नृत्य नाटिका, गायन, कविता आदि का प्रस्तुतीकरण हुआ, तत्पश्चात जयप्रकाश शर्मा जयपुर, मंजु पेरीवाल कोलकाता, जमुना जी, डॉ रमा गोलवलकर, अमेरिका के निवासी अरुण मुंधड़ा ने भी अपने उद्बोधन प्रस्तुत किए।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
'महनसर' विशेषांक के प्रकाशन पर 'मेरा राजस्थान' परिवार को हार्दिक बधाई

Mahesh Chomal
भ्रमणध्वनि: 9827072035 / 8516088410
Natraj Trading Co.
Deals in Ferrous & Non Ferrous Metal
14-Ist Floor, Jagannath Chamber,
Padav Gwalior, Madhay Pradesh, Bharat - 474002
e-mail : maheshchoumal@gmail.com
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
धरती पर स्वर्ग जैसा बसा है
यह गांव हवेली मंदिरो से भरा पुरा गांव
'महनसर' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Sri Hanuman Mal Srimal
भ्रमणध्वनि: 9431267429
PADMAWATI GEMS
E4, Solus Jain Heights, 1st Cross, J.C. Road,
Bengaluru, Karnataka, Bharat - 560027
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

पृष्ठ ३२ से... मंदिर में १५-२० कि.मी. दूर मोवालिया बांध है, जो दधिमथी नदी पर बना है और काफी पुराना ब्रिटिश सरकार के समय का है। वहां पर स्वच्छ निर्मल पानी का फैलाव देखते ही बनता है। सुंदर मनोरम दृश्य एवं शांत वातावरण है। पवित्र नदी को दधिमथी की कुलदेवी के तुल्य ही मानकर हम सबने पूजा अर्चना दीपदान आदि किये। संयोग कहिए या मां दधिमथी की कृपा, उस दिन दुर्गा अष्टमी थी और पूजा अर्चना का सामान कुमकुम, मोली, सिंदूर आदि गोठ मांगलोद दधिमति माताजी के यहां से प्राप्त किया हुआ था। स्नान करके वापस बड़ोदा के लिये रवाना हुए। रास्ते में दाहोद से बड़ोदा की तरफ २० कि.मी पिपलोद नामक स्थान है, जो बम्बई रतलाम रेलमार्ग से जुड़ा है। मुझे तो लगता है जहां दधिमथी हों वहां पर पिपलाद क्यों न होंगे? शायद पिपलाद का अपभ्रंश शब्द ही पिपलोद है। मंदिर परिसर में एक संत की छत्री भी है जो शायद दिगम्बर जैन सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। एक पाषाण स्तम्भ जिसके चारों तरफ भगवान महावीर की मूर्तियां अंकित है उस पर १२३१ लिखा है।

दाहोद यात्रा के समय प्राप्त सामग्री जैसे दधिमथी नदी के छाया चित्र, दूधेश्वर महादेव मंदिर के चित्र, महर्षि की छत्री के चित्र, दधिमथी नदी का पवित्र जल एवं पुरातत्व विभाग की मूल सर्वे रिपोर्ट की प्रति लेखक के पास उपलब्ध है। दाहोद शहर में दधिमथी नदी के किनारे दूधेश्वर महादेव के मंदिर शिलालेख में लिखा है:

श्री गणेशाय नम: विक्रम सं. १८०० वर्षे शालीवाहन शके १९९९ रुधिरोदगारिनाम संवत्सरे मार्गशिर्ष सु. पूर्णिमा, भृगुवार सुमुह तें स्थापन श्री महादेव अनादि सिद्धक्षेत्र, दधिपुरनगर दधिमथी नदी दक्षिण तिस देवालय सिद्ध श्री भगवान इच्छा पूण्य प्रताप क्षत्रिये कुलावंतस श्री राजा शाह छत्रपति तस्त्रय उगराव बाजीराव सुत बालाजी पंत मुख्ये प्रधान जहांगीर राणोजी शिंदे सुभेदार तस्य आज्ञांकित, सेवक जाधव कुलवंश राधीजी सुत मोतियाजी गव्हाणे फोजदार, हस्ते श्री कुल स्वामी प्रताप इच्छा कर्तव्यता देवालय सिद्धि वेदोक्त ब्राह्मण मुखे सकल वंश वृद्धि सफलगस्तू शुभमस्तु'

उपर्युक्त लेख द्वारा सिद्ध होता है कि नदी का पौराणिक और वर्तमान नाम एक ही है और यह संदेह से परे है। दधिमथी नदी, दधिपुर नगर दोनों नाम महामाया दधिमथी और महर्षि दधीचि से जोड़ते हैं।

आइए परमपुर के दधीचि मंदिर की और बढ़ें

'परम' छोटा सा गांव तहसील लुणावडा जिला दाहोद गुजरात में महीसागर नदी है। गुजरात के लिए बहुत पवित्र नदी है। महीसागर नदी माहातम्य में बताया गया है कि इसमें स्नान से ब्रह्महत्या का पाप नष्ट हो जाता है। परशरामजी एवं भगवान श्रीराम ने ब्रह्महत्या दोष का निवारण इसी महदीसागर नदी में स्नान करके किया था। 'दधीचि माहातम्य' नामक एक गुजराती ग्रंथ में स्पष्ट रुप से इस बात का उल्लेख है कि महर्षि दधीचि ने महीसागर और साबरमती के किनारे लम्बे समय तक तप किया था। इस बात का भी जिक्र उसमें है कि महीसागर के तटों के आसपास की जमींदारी दाधीच ब्राह्मणों की थी।

इसी महीसागर नदी के किनारे भूमि के कुछ ऊपर इंटों पर रेखांकन से यह आभास होता है कि कभी यहां कोई समृद्ध भवन था।

आस पास ऐसे दो भवन थे, गाँव वाले और आस पास के क्षेत्र के लोगों का कहना है कि ये दोनों महर्षि दधीचि के मंदिर थे, हमने वहां पर खोदकर कुछ इंटें निकाली, जो कम से कम २००-२५० साल पहले बनती थी। ८''-५'' की इंटें थी, गांव के बूढे- बुजुर्गों ने बताया कि हम बाप- दादों से सुनते आ रहे हैं कि यहां महर्षि दधीचि का मंदिर था, जो बार-बार नदी की आई बाढ़ से ध्वस्त हो गया। वर्तमान में वहां एक चबुतरा बनाकर उस पर एक छोटा मंदिर जैसा बना दिया गया है, यह इन्हीं वर्षो में निर्मित किया गया है। जाली के दरवाजे से देखा तो उसमें एक त्रिशुल व एक तलवार रखी थी। ग्राम्यजनों ने बताया है कि होली के दूसरे दिन मंदिर पर आदिवासियों द्वारा उत्सव आयोजन होता है, काफी बड़ा मेला भरता है और वे लोग वहां देवी की पूजा करते हैं। ग्रामजनों में उपस्थित पंच-सरपंच लोगों से हमने पूछा तो उन्होंने इसे दधीचि ऋषि का मंदिर बताया। उपर्युक्त मंदिर दाहोद से बड़ोदा की तरफ नेशनल हाइवे से दाहोद में दधिमथी नदी, दाहोद का दधीचि आश्रम और दाहोद का पुराना नाम दक्षिणपुरनगर, उससे भी पुराना दधिच नगर दाहोद में, बड़ोदा की तरफ पिपलोद गांव, ये सभी कड़िया एक ही चेन की लगती है, उसमें फिर यह परमपुर का दधिचि मंदिर। निश्चित ही अन्वेषण से ज्ञात होगा कि महर्षि दधीचि की कर्मभूमि यह गुजरात ही रही होगी। नर्मदा के किनारे दधीचि आश्रम, साबरमती के किनारे दधीचि आश्रम, दहेवाण में ५००-६०० साल पुराने मंदिर में महर्षि दधीचि की मूर्ति।

दाधीचों की वर्तमान पीढ़ी का यह परम कर्तव्य है कि हम इसकी गहराईयों तक जाएं। मैंने अपने लेखों के द्वारा कई बार यह निवेदन भी किया है कि समाज के लोग इस विषय में मुझसे सम्पर्क करें तो अतीव प्रसन्नता होगी।

नदी की सफाई के लिए ५० लाख रुपए आवंटित

शहर से होकर बहने वाली ऐतिहासिक दधीमती नदी फिलहाल गंदगी की वजह से नाले के रुप में बन गई है। इसे देखते हुए दाहोद नगरपालिका की ओर से इसकी सफाई के लिए पचास लाख रुपए आवंटित किया गया है।

नगर पालिका प्रमुख राजेश सहेता के अनुसार इस ऐतिहासिक नदी की सफाई के लिए अब तक करोड़ रुपए खर्च किए जा चुके हैं, फिर भी सफाई नहीं हो पाई। ऐसी मान्यता है कि दधीमती नदी पर दधीचि ऋषि ने तप किया था, इसलिए यह हिंदुओं के आस्था का प्रतीक माना जाता है।

-चम्पालाल दाधीच
अ-१. लाजपतनगर, संग्राम हाथी रोड़, कारेली बाग-बड़ोदा
दूरभाष: ०२६५-२४८८०८४

श्री निर्मल कुमार सेठी जैन के निधन से जैन समाज को हुई अपूर्ण क्षति

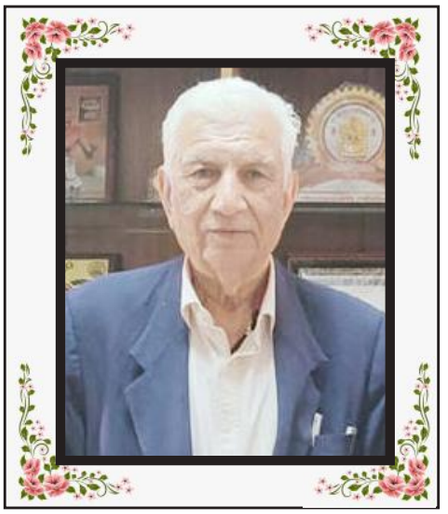

नई दिल्ली: श्री निर्मल जी सेठी दिगम्बर जैन समाज के भीष्म पितामह थे। उन्होंने धर्म और समाज के हर क्षेत्र में हर विभाग में कार्य किया। भारत ही नहीं विदेशों में भी दिगम्बर जैन को जोड़े रखा।

मुनियों की सेवा हो या मुनियों की रक्षा हो, उनका कार्य अविस्मरणीस रहा। तीर्थों की रक्षा के लिए अभूतपूर्व कार्य किया। जिनवाणी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ जिनवाणी के संरक्षण का कार्य किया। जैन छात्रों को स्कॉलरशिप दिलाते थे।

विद्वानों का सम्मान करवाते थे, भारत के हर राज्य में महासभा के माध्यम से धर्म और समाजसेवा का कार्य किया। राजनीतिक चेतना मंच जैसे भी मंच भी बनाए, जिसके माध्यम से राजनीति में भी जैनियों को लाने का प्रयास किया।

पिछले कुछ वर्षों से जैन पुरातत्व के संरक्षण में संवर्धन में लगे हुए थे और विदेशों में जैन धर्म के अवशेषों को खोजने का सार्थक प्रयास किया, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज को न्योछावर कर दिया। उनका सामाजिक, साहित्यिक, आर्थिक, धार्मिक अवदान सदियों तक जैन समाज याद रखेगा।

समस्त जैन समाज व 'जिनागम' परिवार श्री सेठी जी के निधन पर गहरा दुःख और हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

वीर प्रभु दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दे एवं समस्त सेठी परिवार को हुए इस वज्रपात को सहने की शक्ति दे।

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

'महनसर' विशेषांक के
प्रकाशन पर
'मेरा राजस्थान' परिवार को
हार्दिक बधाई

Mitesh Poddar
Mob. : 9818725055
e-mail :- mitesh@theburrowinterior.com

The Burrow interior
INTERIOR DESIGNER & EXECUTOR

★Studio & Workshop★
Plot No. 3, Near Shani Mandir, Medawas, Sector -64,
Gurgaon, Haryana, Bharat - 122001
www.theburrowinterior.com

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

धरती पर स्वर्ग जैसा बसा है
यह गांव हवेली मंदिरो से भरा पुरा गांव
'महनसर' के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Purshottam Phusaram Nopany
भ्रमणध्वनि: 93232 82321

41, Raj Shagun, Nadiadwala Colony No.2,
S. V. Road, Malad West, Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 400064

भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान 'हिंदी' को दिलाओ राष्ट्रभाषा का सम्मान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

भारत को भारत ही बोला जाए

भारत का एक राज्य
सबका प्यारा राजस्थान

एक राष्ट्र-एक नाम भारत को 'भारत' ही बोला जाए

-मंजू बागड़ी महामंत्री, अ. भा. माहेश्वरी महिला संगठन

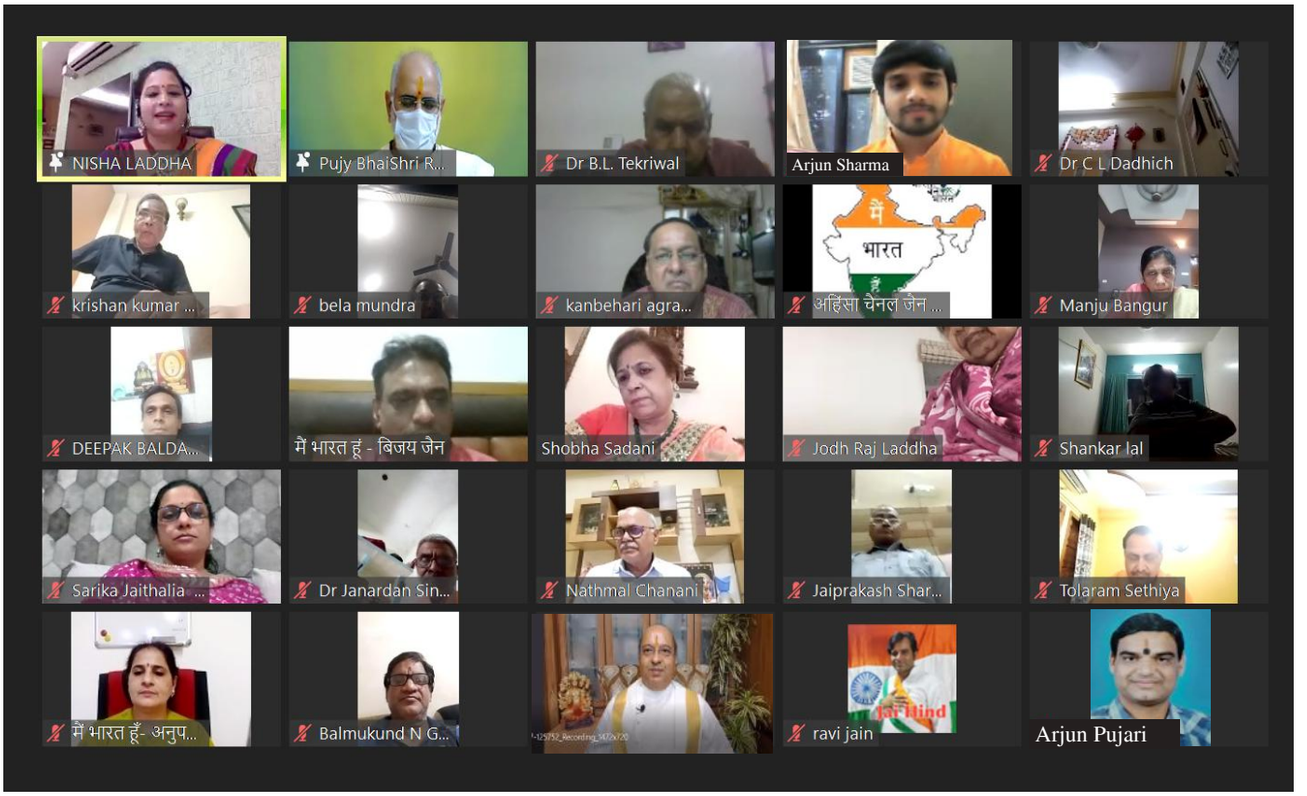

zoom २७ अप्रैल २०२१ की शाम को ज़ूम वेबीनार पर 'मैं भारत हूँ' संघ द्वारा हनुमान जन्मोत्सव के पावन पर्व पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि के रूप में परम पूज्य रमेश भाई ओझा, पूज्य श्री भूपेंद्र भाई पण्डया व सालासर धाम के प्रमुख पुजारी अर्जुन पुजारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता 'मैं भारत हूँ' संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन कोलकाता निवासी निशा लड्ढा ने किया। कार्यक्रम की प्रभारी श्रीमती अनुपमा शर्मा दाधीच, मुंबई निवासी रही। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना व सरस्वती वंदना के साथ किया गया। तत्पश्चात हनुमान जी की स्तुति हुयी, इसके पश्चात निशा जी द्वारा मंच का संचालन करते हुए कानपुर निवासी अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की महामंत्री मंजू बागड़ी जी का स्वागत कर उनसे उद्बोधन के लिए अनुरोध किया गया। मंजू जी बागड़ी ने एक राष्ट्र एक नाम, 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' पर अपने विचार व्यक्त किया, साथ ही उन्होंने हनुमान जी के विभिन्न गुणों प्रस्तुतीकरण किया, तत्पश्चात निशा जी ने विद्या धर्म संस्कृति के प्रति समर्पित विलक्षण व्यक्तित्व के धनी पूज्य श्री भूपेंद्र भाई पंड्या का स्वागत किया। भाई जी ने अपने अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हुए कहा कि पूर्व में हमारा भारत अखंड था, जिसे आजनाब के नाम से जाना जाता था, जब ऋषभदेव जी के पुत्र भरत ने यहां के राज संभाला, तबसे इस स्थान को 'भारत' के नाम से जाना जाने लगा, साथ ही उन्होंने पवन पुत्र हनुमान जी के चरित्र का उत्तम प्रस्तुतीकरण अपने वक्तव्य के माध्यम से किया, अध्यक्ष बिजय कुमार जैन ने उनका आभार व्यक्त करते हुए 'मैं भारत हूँ' संघ के प्रधान सेवक का पदभार संभालने के लिए अनुरोध किया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। विश्व शांति टेकडीवाल परिवार के डॉक्टर बी. एल. टेकडीवाल, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन सनातन धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रवर्तक के रूप में व्यतीत किया जो पेशे से सीए के रूप में कार्यरत हैं ने हनुमान जी के विख्यात मंदिरों की प्रस्तुति करवाई। परम पूज्य रमेश भाई ओझा जी ने अपने ओजस्वी वाणी से राम के चरित्र के साथ हनुमान जी के चरित्र का गुणगान करते हुए 'भारत को भारत ही बोला जाए' अभियान की सफलता के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा की राष्ट्र शब्द का अर्थ है संस्कृति का गौरवपूर्ण इतिहास, आशा, उषा का मिलाजुला भाव। इसके पश्चात पार्श्व गायक रवि जैन जी ने अपने सुमधुर आवाज में मंगल भवन अमंगल हारी' भजन को प्रस्तुत किया। अग्रबंधू सेवा समिति के ट्रस्टी उद्योगपति व समाजसेवी कानबिहारी अग्रवाल ने 'मैं भारत हूँ' के अभियान को पूर्ण समर्थन देते हुए उपस्थित महानुभावों का अभिनंदन व आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में डॉ. जनार्दन सिंह ने भी अपने भावों को अभिव्यक्ति किया। कार्यक्रम का समापन अध्यक्ष बिजय कुमार जैन के साथ संघ की महामंत्री श्रीमती शोभा सदानी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय गान की प्रस्तुति दी गयी।

कोविड-१९ की समीक्षा बैठक जमीनी स्तर पर संक्रमण का प्रसार रोकने के लिए

पुलिस-प्रशासन और अधिक सख्ती करें -अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

जयपुर: २८ अप्रैल २०२१ मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने २७ अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से फोन पर बात कर राजस्थान में कोविड-१९ की गंभीर स्थिति से अवगत कराया। दूसरी तरफ प्रदेश के तीन कैबिनेट मंत्रियों के समूह की केन्द्र सरकार के मंत्रियों और अधिकारियों के साथ दिनभर चली बैठकों में भी राज्य सरकार ने कोविड के वर्तमान हालात का पूरा ब्यौरा केन्द्र सरकार के साथ साझा किया तथा जल्द से जल्द ऑक्सीजन गैस, इसके परिवहन के लिए टैंकरों एवं अन्य जरूरी दवाओं की आपूर्ति बढ़ाने की मांग की। श्री गहलोत ने कहा कि सभी केन्द्रीय प्राधिकारियों ने राज्य की आवश्यकताओं को समझा है और पूरी मदद का भरोसा दिया है। मुख्यमंत्री ने २७ अप्रैल रात वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से ३ घंटे चली बैठक में कोविड-१९ की स्थिति की गहन समीक्षा की, उन्होंने कहा कि राजस्थान में संक्रमण बहुत अधिक तेजी से फैल रहा है, जिसका सबसे बड़ा कारण आमजन द्वारा कोविड अनुशासन की प्रभावी पालना नहीं करना है, यदि लोग स्वयं अनुशासित होकर इस गति पर नियंत्रण में सहयोग नहीं करेंगे तो राज्य सरकार और अधिक कड़े कदम उठाएगी। दिल्ली दौरे पर गए ऊर्जा मंत्री बी. डी कल्ला, नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल एवं चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा तथा अतिरिक्त मुख्य सचिव सुधांश पंत दिल्ली से ही बैठक में शामिल हुए।

श्री गहलोत ने कहा कि तीनों मंत्रियों का दिल्ली दौरा केन्द्र सरकार को राजस्थान में संक्रमण के गंभीर हालात की वास्तविकता बताने में कामयाब रहा, उन्होंने कहा कि इससे एक सकारात्मक माहौल बना है तथा अब केन्द्र सरकार प्रदेश की स्थिति पर अधिक गंभीरता से विचार कर सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने में मदद करेगी। राज्य सरकार कोरोना के बढ़ते संक्रमण के दौर में राजस्थानवासियों की जीवन रक्षा के लिए किए जा रहे प्रयासों का और अधिक बेहतर प्रबंधन करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड रोगियों के बेहतर उपचार के लिए जयपुर सहित सभी जिलों में कोविड और नॉन कोविड अस्पतालों का अलग-अलग निर्धारण हो, ताकि ऑक्सीजन सहित तमाम संसाधनों की समय पर आपूर्ति के साथ ही बेहतर प्रबंधन सुनिश्चित हो सके। उन्होंने निर्देश दिए कि निजी अस्पतालों को रेमडेसिविर और टॉसिलिजुमेब जैसी दवाओं की उपलब्धता के लिए पुख्ता व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि रोगियों के परिजनों को इसके लिए भटकना नहीं पड़े। श्री गहलोत ने कहा कि कोविड के कारण मौतों की संख्या में वृद्धि बेहद चिंता का विषय है। जिला प्रशासन सभी मौतों की विश्लेषणात्मक रिपोर्ट तैयार करे, ताकि राज्य सरकार उसके अनुसार अपने प्रबंधन को और अधिक मजबूत कर मृत्युदर में प्रभावी कमी ला सके। उन्होंने कहा कि जिला कलेक्टर अस्पतालों की गहन मॉनिटरिंग करते हुए अस्पतालों में संसाधनों की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करें।

महनसर की एक झलक

महनसर गढ़

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

शिव मंदिर

श्री सिद्ध हनुमान मंदिर

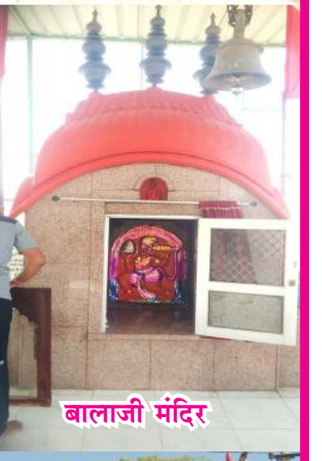
बालाजी मंदिर

रघुनाथ जी का मंदिर (खेतान परिवार)

बस स्टॉप

कोठी वाले हनुमान जी

शितला माता मंदिर

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका
पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को भारत ही बोला जाए
भरतपुर
कोटा
जोधपुर
जैसलमेर
जयपुर
बीकानेर
चुरू
लक्ष्मणगढ़
नागौर
कुचामन
झुंझुनूँ
पाली
फतेहपुर
डीडवाना
रामगढ़
नवलगढ़
चिड़ावा
सिरोही
रतनगढ़
सरदारशहर
सीकर
लाडनूँ
जसवंतगढ़
बिसाऊ
केड
सुजानगढ़
ब्यावर
बिदासर
छोटीखाटु
तालछापर
साभर
अजमेर
राजलदेसर
गंगाशहर
नोखा
देशनोक
कालू
रतननगर
चित्तौड़गढ़
मण्डावा
मंड्रेला
नोहर
मेवाड़
दाँता-रामगढ़
सादड़ी
फालना खुडाला
आमेट
रींछेड़
अलसीसर
श्रीमाधोपुर
डूण्डलोद
बगड़
लोसल
मुकुंदगढ़
शिशोदा
राजसमंद राजनगर
देवगढ़
पिलानी
सांडेराव
खिमेल
औद्योगिक नगरी रानी स्टेशन
राजगढ़-सादुलपुर
बिकानेर का श्रीडूँगरगढ़
नापासर
लूनकरनसर
उदयरामसर
भीनासर
मोमासर
(रिंणी) तारानगर
पधारो म्हारे देश
मात्र रु. 100/- में, प्रति महिना
राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ
वार्षिक शुल्क 1,111/-
आजीवन शुल्क 11,111/-
पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनिः ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com
विशेष छूट विज्ञापन देने पर पूरे साल पत्रिका मुफ्त
सम्पादक
बिजय कुमार जैन
उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)
भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचाये

RNI No. MAHHIN/ 2003/11570
Postal Registration No. MCN/113/2019-2021
WPP License No. MR/Tech/WPP-246/North/2019-21
'License to post without prepayment'
Published on 28/04/2021 & Posting on 30th of every previous Month
at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

www.addpens.com

ONLY ₹50/- PER PC

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400093 से मुद्रित करवाकर बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणुडाक - mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना - www.merarajasthan.co.in